

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

07-मार्च-2017 22:55 IST

भरूच, गुजरात में कई विकास परियोजनाओं के लोकप्रण पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ 07 मार्च, 2017

कल में मां गंगा के पास था, आज मां नर्मदा के पास हूँ; कल बनारस था, आज भरूच हूँ; बनारस इतिहास से भी पुराना हिन्दुस्तान का शहर है, भरूच गुजरात का पुरातन शहर है।

भाइयो, बहनों में सबसे पहले तो श्रीमान नितीन गडकरी जी को, उनकी पूरी टीम को, गुजरात सरकार को हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। दुनिया को पता नहीं चलेगा इस ब्रिज बनने का मतलब क्या होता है, क्योंकि भरूच ने ब्रिज न होने से कष्ट कैसा होता है, वो बराबर झेला है। जब इतनी तकलीफें झेली हों, घंटों-घंटों तक Ambulance को भी रुके रहना पड़ा हो, तब ये सुविधा प्राप्त हो; वो कितना बड़ा मायना रखती है, ये गुजरात के लोग भली-भांति जानते हैं। और भाइयो-बहनों, ये ब्रिज का बनना ये सिर्फ भरूच एंकलेश्वर की समस्या का मुद्दा नहीं है, ये हिन्दुस्तान के पश्चिमी भारत की हर किसी को तकलीफ देने वाली अवस्था थी।

हम जितने समय मुख्यमंत्री रहे, इस बात के लिए लड़ते रहे। लेकिन जब मुझे सेवा करने का अवसर मिला, समय-सीमा में, आधुनिक टेक्नोलॉजी के द्वारा हिन्दुस्तान में पहली बार इतना लम्बा इस टेक्नोलॉजी वाला ब्रिज बना और वो भी मां नर्मदा के तट पर बना।

नितीन जी ने जिस मन के साथ इस काम को हाथ में लिया, regular follow up किया, उनके department की पूरी टीम परिणाम लाने के लिए प्रयासरत रही। और उसी का नतीजा है, कि आज हम इस ब्रिज का उद्घाटन कर पा रहे हैं।

अभी मैं उत्तर प्रदेश में था। चुनाव सभाओं में अलग-अलग इलाके में जाता था, तो लोग मुझे कुछ स्मारक दिखाते थे। क्या स्मारक थे? कोई कहता था वो दूर जो दिखता है न खंभा, pillar दिखता है ना, ये 15 साल पहले ब्रिज का शिलान्यास हुआ था। अभी तक दो खंभे डले हैं, आगे नहीं हुआ है। काशी में भी 13 साल पुराना एक structure लटका पड़ा है। मैंने कहा अच्छा होता भारत सरकार को दे देते, मैं आ करके इसको पूरा कर देता। एक तरफ देश में कोई भी काम 10 साल, 12 साल, 15 साल, और ये सामान्य लगता था; उसके सामने निर्धारित समय में कार्य पूरा करने का culture जो गुजरात में हम लोगों ने लागू किया था, आज पूरे हिन्दुस्तान में लागू करने की दिशा में हम काम कर रहे हैं।

भाइयो, बहनों, आज मुझे DAHEJ जाने का सौभाग्य मिला। कोई कल्पना नहीं कर सकता है कि DAHEJ, वो सिर्फ भरूच का गहना नहीं है; DAHEJ पूरे ही हिन्दुस्तान का गहना है। जब उसका पूर्ण विकास होगा और जिस तेजी से आगे बढ़ रहा है, करीब-करीब 8 लाख लोगों को रोजगार देने की उसमें क्षमता होगी। आप विचार कीजिए इस क्षेत्र में इतना बड़ा रोजगार का अवसर पैदा हो, स्थिति, इस इलाके का स्थान, स्थिति कैसी बनेगी, इसका आप अंदाज कर सकते हैं भाइयो। और मैं बार-बार DAHEJ जाता था आप भलीभांति जानते हैं। उसके चप्पे-चप्पे से मैं वाकिफ हूँ। अपनी आंखों से उसको विकसित होते देखा है। और आज जब पूर्णता की ओर कदम रख रहा है, PCPR, DHEJ, OPAL, भाइयो, बहनों देश की आर्थिक धरा को एक नई ताकत मिलने वाली है, और ये भरूच की धरती पर हो रहा है। मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

मैं मुख्यमंत्री जी का अभिनंदन करना चाहता हूँ, क्योंकि जब बस Port की कल्पना की; मैं यहां मुख्यमंत्री था तो मेरे मन में एक विचार आता था कि ऐसी कैसी सरकार है, ये अमीर अगर हवाई अड्डे पर जाता है, हवाई जहाज में बैठने जाता है तो उसको हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध होती है। ठंडी हवा चलती है, ठंडा पानी मिलता है, जो खाने के लिए चाहे वो खाना मिलता है, क्या मेरे देश के गरीब को इसका हक नहीं होना चाहिए क्या? क्या हवाई जहाज में उड़ने वालों को ही ये सब होना चाहिए क्या? इस बात ने मेरे मन को हर पल झकझोरा।

और उसका परिणाम था कि बड़ोदरा में, बरोड़ में सबसे पहला PPP Model पर एक ऐसा बस अड्डा बना, एक ऐसा Port बना, जिसकी वीडियो You Tube पर दुनिया भर में लाखों लोग देखते रहे कि ऐसा भी कोई Bus Stand हो सकता है? और बस में गरीब से गरीब व्यक्ति जाता है। गरीब से गरीब आदमी अपने हाथ में झोला ले करके बस में जाता है। बीड़ी पीता है, कहीं पर भी बीड़ी डालता है। आज अगर बड़ोदरा में जाइए, वो पूरी तरह साफ-सुथरा Bus Stand. उसी Model पर अहमदाबाद में बना। अब तक शायद चार बन चुके हैं, और मुझे खुशी है कि राज्य सरकार ने उसी योजना को आगे बढ़ाते हुए वैसा ही शानदार Bus Port भरुच में बनाने का फैसला किया है।

आप कल्पना कीजिए भरुच से Sardar Sarovar Dam (सरदार सरोवर डैम) तक करीब सवो सौ, डेढ़ सौ किलोमीटर का पूरा रास्ता ये पानी से पूरा लबालब भरा होगा, वो दृश्य कितना आनंदायक होगा। उस पूरे इलाके में जमीन में पानी जाने से करीब डेढ़ सौ किलोमीटर का इलाका, दोनों तरफ 20-20 किलोमीटर पानी के अंदर ऊपर आएंगे।

भरुच में मैं जब मुख्यमंत्री था तब भी ये बात आती थी। तब हमारा रमेश यहां का एक विधायक हुआ करता था। तब भी ये बात आती थी कि यहां पीने का पानी।

मैं अपनी आंखों के सामने चित्र को भलीभांति देख पा रहा हूँ और विश्व का सबसे बड़ा ऊंचा सरदार वल्लभ भाई पटेल का Statue बनेगा, Statue of Unity. विश्व भर के यात्री आएंगे, केवडिया कोरिन तक बहुत उत्तम प्रकार का रोड हमारे नितीन जी department बना रहा है। लेकिन एक और संभावना के लिए भी मैंने नितीन जी से कहा है कि उसका भी अभी से अभ्यास शुरू करवा दिया जाये, अगर भाड़भूज का बीयर बन जाता है। और नर्मदा के अंदर पानी रहता है तो क्या टूरिस्टों को हम यहां ये छोटे-छोटे Steamer में Sardar Sarovar Dam (सरदार सरोवर डैम) तक ले जा सकते हैं क्या?

लोग गोवा में जन्मदिन मनाना है, तो छोटे-छोटे Steamer में पानी के बीच चले जाते हैं। इस इलाके में भी सूरती लोगों को जन्मदिन मनाना होगा तो वो भी यहां पर आ जाएंगे; और भरुच वाले तो जाएंगे ही जाएंगे।

भाइयो, बहनों, एक ही व्यवस्था से कितना बदलाव लाया जा सकता है, अगर Vision साफ हो, नियत ठीक हो, नीतियां Perfect हों तो सफलता के आड़े कुछ नहीं आता भाइयो, बहनों; सफलता प्राप्त हो के रहती है।

मैं आज जब गुजरात में आया हूँ, नितीन जी आए हैं तो उनकी इच्छा है कि उनके Department की घोषणा मैं करूं। भले मैं करता हूँ लेकिन Credit नितीन जी को जाती है। ये उनकी कल्पना व उनकी साहसिक निर्णय करने की जो क्षमता है उसी का परिणाम है। उनके Department ने निर्णय किया है और मुझे खुशी होना बहुत स्वाभाविक है। उन्होंने गुजरात में आठ Highways को National Highway में convert करने का निर्णय किया है।

ये करने में करीब-करीब 12 हजार करोड़ रुपया Investment होगा, 12 हजार करोड़ रुपया। अकेले नितीन जी के Department से ये आठ रास्तों पर 12 हजार करोड़ रुपया लगेगा! आप कल्पना कर सकते हो, गुजरात के Infrastructure

को चार चांद लग जाएंगे भाई, बहनो! चार चांद! और ये आठ रास्तों की लम्बाई करीब-करीब 1200 किलोमीटर है। जिसमें ऊना, धारी, बगसरा, अमरेली, बाबरा, जसदन, चोटिला, ये पूरा जो State Highway है, अब National Highway बनेगा। दूसरा, नागेशरी, खाम्बा, चालाला, अमरेली, State Highway हैं, National Highway बनेगा। पोरबंदर, भानवड़, जाम-जोधपुर, तालावाड़, State Highway हैं, National Highway बनेगा। आणंद, कठवाल, कपरवंच, पायड़, धनसुरा, मोढ़ासा, ये State Highway, National Highway बनेगा। पूरा, पूरा Tribal Belt को इसका सबसे बड़ा लाभ मिलने वाला है। लखपत, कच्छ का Development करना है, धौलाविरा का Development करना है, Tourism को बढ़ाना है।

लखपत, गढ़ली, हाजीपुर, खावड़ा, धौलाविरा, मौवाना, सांकलपुर; आप हिन्दुस्तान की सीमा की सुरक्षा कहो, कच्छ के Tourism का विकास कहो, धौलाविरा जो मानस संस्कृति का पुरातन और recognize city, 5 हजार साल पुराना; एक कोने में है। जब वो Centre Point बनेगा, दुनिया के टूरिस्टों को आकर्षित करेगा; जिसका गुजरात को लाभ मिलेगा।

खंभालिया, अड़वाना, पोरबंदर; चितौड़ा, रापर, धौलाविरा; खंभालिया, वाणवढ़, राणावा; आप विचार कीजिए कि ये Infrastructure से इतनी बड़ी लागत से लोगों को तो रोजगार मिलेगा, काम मिलेगा, ये तो होना ही है। लेकिन सबसे बड़ी बात अकस्मात के कारण, खास करके हम हमारे नौजवान खो देते हैं। नौजवान बड़े उत्साह से गाड़ी तेज चलाता है, मोटरसाइकिल तेज चलाता है, अकस्मात होता है, लाखों लोग अकस्मात बेमौत मर जाते हैं। इस रचना के कारण अकस्मात में काफी मात्रा में Control किया जाता है, क्योंकि रोड की रचना ऐसी होती है। एक प्रकार से मानवता का भी काम है।

आप लोगों को अगर याद हो, अहमदाबाद, राजकोट, बगोदरा; कोई दिन ऐसा नहीं जाता था कि बगोदरा के पास अकस्मात न हुए हों और रात में मरे न हों, Daily. जब केशूभाई पटेल मुख्यमंत्री बने, उन्होंने इस दृश्य को रोज देखा था। वो राजकोट से आते जाते थे। हमारी पार्टी के भी कई वरिष्ठ नेता अहमदाबाद-राजकोट Highway पर accident में मारे गए थे। और मैं अहमदाबाद में, तब तो मैं राजनीति में नहीं था; औसत मुझे रात को फोन आता था कि इतना बड़ा अकस्मात आज हुआ है, अहमदाबाद-राजकोट के रोड़ को 4 Lane कर दिया, अकस्मातों में बहुत बड़ी कमी आ गई, बहुत बड़ी कमी आ गई।

ये National का Network, ये इस प्रकार से बहुत बड़ा सुरक्षा की दृष्टि से, मानवता की दृष्टि से, एक व्यवस्था खड़ी हो रही है। अब रोड़ का Model भी हमने बदल दिया है। रास्ते पर व्यवस्थाएं भी विकसित हों, रास्तों के नजदीक में Helipad भी हो, रास्तों के नजदीकी खान-पान, शौचालय, ये सारी व्यवस्थाएं उपलब्ध हों। क्योंकि ट्रैफिक, लोग रोज जाते-आते हैं, उनको ये व्यवस्था मिले, Washroom मिल जाए। ये सारी व्यवस्थाओं के युक्त National Highway बनाने की दिशा में, और आधुनिक रास्ते; नितीन जी अपनी नई कल्पनाओं के साथ इस काम को लगे हैं।

एक सागरमाला Project, देखिए एक दिल्ली में एक ऐसी सरकार बैठी है जो टुकड़ों में नहीं सोचती। हम समस्याओं का समाधान करने की दिशा में सोचते हैं। हमने एक सागरमाला योजना बनाई, इस सागरमाला योजना के तहत भारत का पूरा नक्शा आप जहां draw करते हो, उस पूरा का पूरा Infrastructure से बंध जाना चाहिए। रोड़ से कहीं पर भी disconnect नहीं होना चाहिए, एक छोर से निकले तो उसी रोड़ से पूरे हिन्दुस्तान का भ्रमण करके आप वापिस आ सकते हैं। ऐसी एक सागरमाला Project, भारतमाला Project, इसकी हम रचना कर रहे हैं। इस भारतमाला से रोड़ का network होगा, सागरमाला से जो समुद्री तट है उसके Infrastructure का काम होगा। भारतमाला और सागरमाला Port-Land Development को एक नई ताकत देगी। और उसके कारण अकेले Port Sector में सागरमाला के तहत 8 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का नया पूंजी निवेश आने वाले कुछ ही वर्षों में करने की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। और उसका परिणाम गुजरात को विशेष लाभ मिलेगा, यहां के बंदरों को लाभ मिलेगा, यहां के बंदरों से जुड़ी हुई रेल हो, रोड़ हो, Connectivity हो, उसका लाभ मिलेगा।

एक प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना हमने लागू की है। आप हैरान होंगे, हमारे देश में सरकारें कैसी चली हैं, Dam तो बना दिया लेकिन Dam से पानी कहां ले जाना, कैसे ले जाना; उसकी योजना ही नहीं बनाई। 20-20 साल पहले Dam बने हैं, पानी भरा पड़ा है, Canal नहीं है। मैंने ऐसा सारा खोज करके निकाला और करीब 90 हजार करोड़ रुपया से प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत Dam to Drip यानी dripirication करने तक खेत में Dam से ले करके dripirication तक पूरा Chain खड़ा करना, 90 हजार करोड़ रुपया लगा करके किसान को पानी पहुंचाने का, पूरे देश में ऐसे बंद पड़े Project थे, उस पर काम में लगाया है।

देश आधुनिक होना चाहिए। हम पुराणपंथी जीवन नहीं जी सकते। 20वीं सदी में रह करके हम 21वीं सदी की दुनिया का मुकाबला नहीं कर सकते हैं। अगर 21वीं सदी के विश्व का मुकाबला करना है तो हमें भी अपने-आप को 21वीं सदी में ले जाना होगा। और ये मान के चलिये भाइयो, बहनों, अब हिन्दुस्तान दुनिया के साथ बराबरी करने के मैदान में आ गया है। अब हम अपने घर में ये, वो, तू-तू, मैं, मैं, मैं समय बरबाद करने वालों में से नहीं हैं; हम दुनिया के फलक पर भारत को अपनी जगह दिलाने में लगे हुए हैं। और इसके कारण हमें भी हिन्दुस्तान 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाना होगा और उसमें हमें जैसे Highway चाहिए, वैसे Eye-ways भी चाहिए। I-ways का मेरा मतलब है Information Ways. पूरे देश में Optical Fiber Network. अभी जैसे ब्रिज बनाने गए, कुछ लोग उसकी credit लेने के लिए घूमते-फिरते रहते हैं, फायदा उठाओ, कुछ भी बोल दो फायदा उठाओ। करना-धरना कुछ नहीं।

भाइयो, बहनों हमारे देश में पुरानी सरकार में Optical Fiber Network, ये योजना बनी थी। वो योजना ऐसी बनी थी कि जब मैं प्रधानमंत्री बना तब तक उन्हें सवा लाख गांव में ये काम पूरा करने का उनकी फाइलों में लिखा हुआ है। 2014, मार्च तक सवा लाख गांवों में Optical Fiber लगाना, ये पुरानी सरकार का निर्णय था, योजना बनाई थी। और जब मैं प्रधानमंत्री बना तो मैंने पूछताछ की; मैंने कहा भाई सवा लाख गांव में से कितना हुआ? आप सोचोगे कितना हुआ होगा भाइयो सवा लाख गांव में से? कितना हुआ होगा? कोई सोचेगा, एक लाख हुआ होगा; कोई सोचेगा 50 हजार हुआ होगा; जब मैंने हिसाब लिया तो सिर्फ 59 गांव, 50 और 9; 60 भी नहीं, इतने गांवों में Optical Fiber लगा था।

अब ये काम करने का तरीका था, हमने काम हाथ में लिया, इस देश में ढाई लाख पंचायतें हैं, ढाई लाख पंचायतों में Optical Fiber Network डालना है। अब तक 68 thousand गांवों में काम हो चुका है। कहां 59 और कहां 68 thousand, ये फर्क है भाइयो, बहनों। अगर इरादा ने कहो, जनता-जनार्दन का भला करने का इरादा हो तो काम में कभी रुकावटें नहीं आती हैं। जनता का भी सहयोग मिलता है, काम होता है, देश आगे बढ़ता है।

गैस की Pipe Line, Optical Fiber Network, पानी की व्यवस्था। अभी हमने सपना देखा है 2022, जब हिन्दुस्तान आजादी के 75 साल मनाएगा। वो 2022 तक हिन्दुस्तान के गरीब से गरीब को भी उसका खुद का अपना घर रहने के लिए मिलना चाहिए और इस पर हम काम कर रहे हैं। दुनिया के छोटे-छोटे देश कह रहे हैं। एक प्रकार से इतने मकान बनाने पड़ेंगे कि भारत में ऐसा कोई नया छोटा देश बनाना पड़े, इतने मकान बनाने हैं। लेकिन भाइयो, बहनों, इस सपने को भी हम पूरा करेंगे हम लगे हैं।

आप कल्पना करोगे कैसा है देश। कोई भी देश, उसके पास अपना हिसाब-किताब होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए? उसके पास क्या है, क्या नहीं, पता होना चाहिए कि नही होना चाहिए? मैं जब प्रधानमंत्री बना तो मैं मीटिंग ले रहा था, शुरू में मैंने कहा भाई, बताइए हमारे देश में आईलैंड कितने हैं? जैसे हमारे यहां Alia bet है या हमारा Beyt dwarka है, ऐसे आईलैंड कितने हैं? ये मैं पूछता था।

अलग-अलग department, कोई 900 कहता था, कोई 800 कहता था, कोई 600 कहता था, कोई 1000 कहता था। मैंने कहा क्या सरकार है भाई? ये इतने कहता है, ये इतने कहता है! कोई गड़बड़ लगती है। फिर मुझे पता चला कि किसी ने Scientific Study ही नहीं किया था। अब भारत के पास कितने आईलैंड हैं? इसकी क्या विशेषता है? क्या हिन्दुस्तान को

आगे ले जाने में उसका कोई उपयोग हो सकता है क्या? मैं हैरान था भाई, उनके पास जानकारी ही नहीं थी। मैंने टीम बिठाई, Satellite Technology का उपयोग किया, और पूरा खाका खोल करके निकाल दिया। भारत के पास 1300 से ज्यादा आईलैंड हैं। 1300 से ज्यादा और उसमें कुछ आईलैंड तो सिंगापुर से भी बड़े हैं। यानी हम अपने आईलैंड का कितना विकास कर सकते हैं, कितनी विविधताओं से भर सकते हैं, Tourism के development के लिए क्या कुछ नहीं कर सकते हैं। भारत सरकार ने अलग व्यवस्था की है और आने वाले दिनों में हिन्दुस्तान के समुद्री तट पर जितने टापू हैं, अभी उसमें से 200 छांट करके निकाले हैं।

पहले तौर पर उन 200 के विकास का एक Model तैयार हो रहा है। भाइयो, बहनों अगर ऐसी चीजें बनती हैं तो सिंगापुर का चक्कर काटने की क्या जरूरत पड़ेगी? सब कुछ मेरे देश में हो सकता है भाई। हमारा देश सामर्थ्यवान है, शक्तिवान है। हम भी विकास की नई ऊंचाइयों को पार कर सकते हैं। और इसलिए भाइयो, बहनों रेलवे, जैसे नितीन जी बना रहे थे ना, कि पहले हमारे देश में एक दिन में, सारे, सारे हिन्दुस्तान के कोने का हिसाब लगाते थे तो average एक दिन में दो किलोमीटर रास्ते बनते थे। हमारी सरकार बनने से पहले एक दिन में दो किलोमीटर। नितीन जी ने आ करके ऐसा धक्का लगाया, और जैसा अभी वो बता रहे थे, एक दिन में 22 किलोमीटर का काम होता है; 11 गुना ज्यादा। भाइयो, बहनों, रेलवे, पहले हमारे देश में रेलवे का gaze conversion कहो या नहीं पटरी बिठाने का काम कहो; एक साल में 1500 किलोमीटर का काम होता था।

अब इतना बड़ा देश, रेल की मांग, उससे आगे नहीं बढ़ रहा था। हमने आ करके बीड़ा उठाया, ये बढ़ना है, और मुझे खुशी है कि आज एक साल में हम पहले की तुलना में डबल काम करते हैं रेलवे की पटरी का, डबल; 3000 किलोमीटर। काम अगर करने का इरादा हो, जैसे Bus Port का काम देखा आपने, इसी से लेकर करके मैंने रेलवे वालों से मीटिंग की। मैंने कहा भाई ये रेलवे स्टेशन हमारे, ये मरे पड़े हैं। 19वीं शताब्दी के हैं जरा उसमें बदलाव आ सकता है कि नहीं आ सकता है?

अभी रेलवे के development का बड़ा बीड़ा उठाया है। हिन्दुस्तान के 500 रेलवे स्टेशन बनाने हैं। अभी शुरू में सूरत, गांधीनगर, गुजरात में दो प्रोजेक्ट अभी तय हुए हैं। आने वाले दिनों में सभी रेलवे स्टेशन multistory क्यों न हों? रेलवे स्टेशन पर थियेटर भी हो सकता है, रेलवे स्टेशन पर Mall भी हो सकता है। रेलवे स्टेशन पर recreation centre हो सकते हैं, खानपान का बाजार लग सकता है। पटरी पर गाड़ी चलती रहेगी, बाकी जगह का तो विकास होना चाहिए। भाइयो, बहनों विकास के लिए vision होना चाहिए, सपने भी चाहिए, संकल्प भी चाहिए, सामर्थ्य भी चाहिए, तो सिद्धि अपने-आप हो जाती है। और उस काम को ले करके हम चले हुए हैं।

मेरे भरुच के प्यारे भाइयो, बहनों, आज मां नर्मदा के तट पर इतना बड़ा काम हुआ है। मेरे साथ पूरी ताकत से बोलिए

मैं कहूंगा नर्मदे, आप लोग दोनों मुट्ठी ऊपर करके बोलेंगे सर्वदे।

नर्मदे - सर्वदे

नर्मदे - सर्वदे

नर्मदे - सर्वदे

नर्मदे - सर्वदे

नर्मदे - सर्वदे

बहुत-बहुत धन्यवाद आपका।

अतुल तिवारी/हिमांशु सिंह/ निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

17-अप्रैल-2017 16:55 IST

सिलवासा (दादरा और नगर हवेली) में कई सरकारी परियोजनाओं के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मंच पर विराजमान दमन दीव और दादरा नगर हवेली के प्रशासक श्रीमान प्रफुल्ल भाई पटेल, यहां के सांसद श्रीमान नटू भाई, पड़ोस में दमन के सांसद श्री लालू भाई दादरा नगर एवं जिला पंचायत के अध्यक्ष श्रीमान रमन ककुवा जी, सिलवासा नगर के अध्यक्ष भाई राकेश चौहान जी और विशाल संख्या में पधारे हुए दादरा नगर हवेली के मेरे प्यारे भाइयों और बहनों मराठी बोलाछे हिन्दी बोलाछे गुजराती बोलाछे बोला। अच्छा एक काम करिए करेंगे अपना मोबाइल बाहर निकालिये और मोबाइल बाहर निकाल कर के उसकी लाइट जला कर के आज के इस भव्य कार्यक्रम का आप स्वागत कीजिये सबकी लाइट जलनी चाहिए। हर एक के मोबाइल की लाइटें जलनी चाहिए। हर किसी के मोबाइल की लाइट जलनी चाहिए। देखिये सारे कैमरा वाले आपको रिकॉर्ड कर रहे हैं। सबका हाथ ऊपर चाहिए एक दम ऊपर। हाथ ऊपर करके हिलाइए। सबका हाथ ऊपर चाहिए। सब मोबाइल फोन अपना हिलाइये बराबर। देखिए जगमग तारे नजर आ रहे हैं सबको। देखिए दादरा नगर हवेली की ताकत देखिए। जोर से बोलिये भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय। कमाल कर दिखाया आपने आज।

देश के और भूभाग के लोग अगर ये कार्यक्रम देखते होंगे, तो उनको बड़ा आश्चर्य होता होगा छोटा सा सिलवासा, एक छोटा सा क्षेत्र हिन्दुस्तान की सबसे छोटी जो पार्लियामेंट सीट है उसमें जिसका नाम है और ये जन सागर कोई देखे, तो बड़े से बड़े प्रदेश की रैली भी इतनी बड़ी नहीं होती है। भाइयों बहनों ये Union territory केन्द्र शासित प्रदेश चाहे दादरा नगर हवेली हो चाहे दीव दमन हो, लोगों को पता ही नहीं था कि उनकी सरकार कौनसी है। यहां जो कलेक्टर आते थे उसको ही वो सरकार मानते थे। पहली बार प्रफुल्ल भाई को प्रशासक रखने के बाद दादरा नगर हवेली का हर नागरिक को लगने लगा है कि अब दिल्ली में हमारा कोई रखवाला बैठा है। हमारे सुख दुख की चिंता अब दिल्ली से हो रही है। ये पहली बार दादरा नगर हवेली और दीव दमन के लोगों को लगने लगा है, वरना उन्होंने मान लिया था कि भई क्या करें, यहां तो कोई सरकार तो है नहीं दिल्ली बहुत दूर है, चलो जैसा है वैसा गुजारा कर लेंगे, लेकिन हमने दिखा दिया कि हिन्दुस्तान का छोटा सा छोटा इलाका भी गरीब से गरीब नागरिक भी उसका इस देश पर उतना ही हक है जितना दिल्ली में रहने वालों का होता है और इसलिये ये सवा सौ करोड़ देशवासियों का हिन्दुस्तान है हर सवा सौ करोड़ देशवासी का हर नागरिक उसका मालिक है। और हर नागरिक का भाग्य बदलना इस देश की सामूहिक जिम्मेवारी है। मुझे बताया गया कि यहां पर 1980 के पहले यानी करीब करीब 35- 40 साल पहले कोई प्रधानमंत्री यहां पर आए थे, जो आज 35 साल के हो गए उनको तो पता भी नहीं होगा कि क्या प्रधानमंत्री की सूची में ये छोटी सी जगह भी होती है क्या, नहीं होती। आखिरी बार करीब 35- 40 साल पहले भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमान मुरारजी भाई देसाई यहां आए थे। उसके बाद प्रधानमंत्री के रूप में मुझे आज आपके बीच आने का सौभाग्य मिला है। लेकिन मैं पहली बार नहीं आया हूं। शायद ही यहां कोई पंचायत होगी कि जहां मैं गया नहीं हूं। स्कूटर पर दौरा करता था। यहां सैकड़ों परिवार मिल जाएंगे आपको जो बताएंगे कि मोदी जी पहले यहां आते थे हमारे यहां खाना खाते थे। कभी हमारे यहां चाय पीते थे कई लोग यहां बैठे होंगे। इस पूरे क्षेत्र में मुझे भ्रमन करने का सौभाग्य मिलता था। और इसके कारण मैं आपके सुख दुख से परिचित हूं। यहां पर विकास की संभावनाओं से परिचित हूं। और एक प्रकार से अब सिलवासा, दमन ये लघु भारत बन गए हैं Mini India बन गए हैं हिन्दुस्तान का कोई कोना ऐसा नहीं होगा, जिसके लोग इस इलाके में रहते नहीं होंगे। हिन्दुस्तान के हर कोने के नागरिक हमारे इस भूभाग में रहते हैं। मैंने भारत सरकार के अधिकारियों से पूछा एक बार हमने कहा कि केन्द्र सरकार अब मुझे याद है, जब आदिवासियों को जमीन के पट्टे देने का काम चल रहा था, तो पूरे देश में सबसे अच्छा काम जो हुआ, वो गुजरात में और मध्य प्रदेश में आदिवासियों का हुआ। उसके बावजूद भी तब मैं यहां मुख्यमंत्री था यहां गुजरात में भारत सरकार और कांग्रेस के नेता आए दिन आदिवासियों को भड़काते थे, झूठ फैलाते थे और उनको समझाते थे कि ये मोदी सरकार है गुजरात सरकार है वो आदिवासियों को जमीन के पट्टे नहीं दे रही है। जब मैं भारत सरकार में बैठा तो मैं हैरान हो गया, जहां कोई बीच में राज्य सरकार नहीं है, जिसमें सीधी सीधी जिम्मेवारी केन्द्र सरकार के अधिकारियों की है। सारे हिन्दुस्तान में आदिवासियों को जमीन के हक के पट्टे दिये जाते थे। लेकिन इतने साल तक जिन्होंने दिल्ली में शासन किया और राज्यों को जो कटघरे में खड़ा कर देते थे, झूठे आरोप लगाते थे, मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि दादरा नगर हवेली में जहां मेरे आदिवासी भाइयों की जनसंख्या है उनको एक जमीन का पट्टा नहीं दिया गया। उनको शोभा नहीं

देता था। जब हम सरकार में आए प्रफुल्ल भाई को यहां काम दिया। हमने कहा भारत सरकार की कौनसी योजना है जो यहां लागू नहीं हुई निकालो। पहले सरकारी बाबू यूनियन टैरिटरी के क्षेत्रों में जाना पसंद करते थे। उनको लगता है वो राजा रजवाड़े की तरह रहता था उनका एमपी को संभाल लिया तो काम चल जाता था। ये सच्चाई है न, सच्चाई है न, लेकिन अब ये कांग्रेस की सरकार नहीं है मोदी की सरकार है। यहां जनता के लिये काम करना पड़ेगा जनता के लिये दौड़ना पड़ेगा, जनता के सुख के लिये अपनी जान खपानी पड़ेगी। इस मकसद से मैं काम कर रहा हूं। और उसी का नतीजा है कि आज यहां पर हजारों परिवार जिनको जमीन के पट्टे आज दिये जा रहे हैं। हजारों आदिवासी परिवार पहली बार अनेक पीढ़ियों से जिस जमीन को वो जोत रहे थे लेकिन उनके पास एक कागज का टुकड़ा नहीं था कि उनका कोई हक बनता है। मैं आज दादरा नगर हवेली के प्रशासक जी को और उनकी पूरी टीम को हृदय से बधाई देता हूं। के मेरे प्यारे आदिवासी भाइयों बहनों को उनको हक दिलाने का इतना बड़ा काम किया और मेरे हाथों से ये हजारों परिवारों को, ये हजारों परिवारों को ये मुझे आज हक पत्र देने का अवसर मिला है।

भाइयों बहनों आज करीब दो हजार तीन सौ पचीस इतने से छोटे से दादरा नगर हवेली में दो हजार तीन सौ पचीस आदिवासी परिवारों को जमीन का हक मिलना ये आजादी के बाद की इस इलाके की सबसे बड़ी घटना है। सबसे बड़ी घटना है। आप कल्पना कर सकते हैं, मेरे मन को कितना आनन्द होता होगा। कितना सुख मिलता होगा। ये जो मैंने आपके मोबाइल फोन से ये जो लाइट जलाई थी न ये मेरे आदिवासी भाइयों के लिये लाइट जलाई थी मेरे आदिवासी भाइयों के लिये।

भाइयों बहनों आज हमारा सपना है 2022 भारत की आजादी के 75 साल होंगे, देश की आजादी के लिए कितने लोगों ने जान की बाजी लगा दी। कैसे कैसे सपने देखे थे। क्या 2022 हर हिन्दुस्तानी कोई सपना नहीं देख सकता है। यहां बैठे हुए हर के मन में एक विचार नहीं आना चाहिए कि 2022 जब आजादी के 75 साल होंगे आने वाले पांच साल में मैं भी देश के लिये कुछ करूंगा। करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए। करेंगे। दोनों मुट्ठी बंद कर के मुझे बताइए करेंगे। देश के लिये कुछ करेंगे। अपने लिये नहीं। देश के लिये करेंगे। एक छोटा सा काम भी अगर आप देश के लिये करेंगे। 2022 पूरे देश में माहौल बन जाएगा। सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानी देश के लिये कुछ करने के लिये निकल पड़ेंगे। दुनिया की कोई ताकत नहीं है। हमारे देश को पीछे रख सके भाई। हमने सपना संजोया है। 2022 जब आजादी के 75 साल होंगे। हमारे देश का एक भी गरीब ऐसा नहीं होना चाहिए जिसके पास रहने के लिये अपना खुद का घर न हो। गरीब से गरीब को भी रहने के लिये घर मिलना चाहिये कि नहीं मिलना चाहिए, मिलना चाहिये कि नहीं मिलना चाहिए। भाइयों बहनों ये संघ प्रदेश में दादरा नगर हवेली में जो अभी सर्वे किया गया है। गांवों में छौ हजार दो सौ चौतीस परिवार इनके पास घर नहीं है और सिलवासा जैसे शहरी इलाके में 800 परिवार है जिनको अपना घर नहीं है। 2022 तक इन सात हजार परिवारों को खुद का घर देने का काम उसका आज प्रारंभ हो रहा है। और इसलिए मैं इन सभी मेरे गरीब परिवारों को आज हृदय से बधाई देता हूं। आपने अपने मोबाइल से आज जो रौशनी फैलाई है। वो उन गरीबों को घर मिलने के उत्सव की रौशनी है और घर भी सामान्य नहीं, घर भी सामान्य नहीं। घर ऐसा होगा जिसमें बिजली होगी, पानी का प्रबंध होगा, शौचालय होग, नजदीक में बच्चों को पढ़ने के लिये स्कूल होगा, बूढ़ों के लिये दवाई की व्यवस्था होगी ऐसा घर देने का हमारा इरादा है भाइयों बहनों।

भाइयों बहनों आज एक और महत्वपूर्ण काम हुआ और वो है, गैस का कनेक्शन देना। और उसके साथ चूल्हा भी भेंट में मिल रहा है, कूकर भी भेंट में मिल रहा है, चूल्हा जलाने वाला गैस का लाइटर भी भेंट मिल रहा है। भाइयों बहनों ये हमारा देश हमारे ये नेता लोग इनकी सोच कैसी थी जरा सोचीए आप 2014 को याद कीजिए जब हिन्दुस्तान में लोकसभा का चुनाव चल रहा था। एक तरफ भारतीय जनता पार्टी ने मुझे प्रधानमंत्री का उम्मीदवार बनाया था। मेरे सामने कांग्रेस चुनाव के मैदान में थी। चुनाव में पॉलिटिकल पार्टियां वादा करती हैं। कांग्रेस पार्टी ने दिल्ली में बड़ी मिटिंग की लोकसभा चुनाव के रणनीति के लिये मिटिंग की। और उसके बाद पत्रकार वार्ता की प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उस प्रेस कॉन्फ्रेंस में क्या घोषणा की थी आप जरा याद करना। उन्होंने कहा था कि 2014 के लोकसभा में हम जीतेंगे। और हमारी ये सरकार बनेगी। तो अभी जो एक साल में नौ गैस के सिलेंडर देते हैं, हम उसको बढ़ाकर के 12 कर देंगे। इस वादे के नाम पर देश में चुनाव लड़ा गया था। 9 गैस के सिलेंडर के 12 गैस के सिलेंडर इसके आधार पर वोट मांगे जा रहे थे। आपको हैरानी होगी आज से कुछ साल पहले पार्लियामेंट के मेम्बर को 25 गैस की कूपन मिलती थी हर साल और वो अपने परिचितों को अपने कार्यकर्ताओं को गैस का कनेक्शन देने के लिये कूपन देता था। एक साल में 25. और कुछ एमपी अखबार में आता था उस जमाने में वो कूपन भी कालेबाजारी में बेच डालते थे। अखबारों में छपने लगा आखिरकार एमपी को कूपन देना बंद हो गया। यानी गैस का कनेक्शन लेने के लिये पार्लियामेंट के मेम्बर के घर अच्छे अच्छे परिवार के लोग कतार लगाकर के

खड़े रहते थे। आपने भी देखा होगा। कितनी मशक्कत की होगी। तब आपको गैस का सिलेंडर मिला होगा। भाइयों बहनों हमारी सरकार बनी। मैं ये सोचता था कि मेरी गरीब माताओं का क्या गुनाह जो लकड़ी का चूल्हा जलाकर खाना पकाती है। आप जानके हैरान होंगे दोस्तों जब एक मां लकड़ी का चूल्हा जलाकर के खाना पकाती है, तो उसके शरीर में 400 सिगरेट का धुआं उसके शरीर में जाता है। एक दिन में चार सौ सिगरेट का धुआं लकड़ी का चूल्हा जलाने से खाना पकाने से होता है। उस मां की तबियत का हाल क्या होता होगा। और छोटे छोटे बच्चे घर में खेलते हैं। मां खाना पकाती है। ये धुआं बच्चों के शरीर में भी जाता है। उन बच्चों के शरीर का क्या होता होगा। भाइयों बहनों इस पीड़ा से दर्द से और मैं तो गरीबी में पैदा हुआ हूँ। मैंने मेरी मां को लकड़ी का चूल्हा जलाते देखा है। पूरा घर धुएँ से कैसे भर जाता था। वो अपनी आंखों से देखा है अनुभव किया है। तब मन में एक कशक थी कि मैं इन मेरी गरीब माताओं को इससे मुक्ति कैसे दिलाऊँ और भाइयों बहनों हमने बीड़ा उठाया हर गरीब परिवार में गैस का चूल्हा पहुंचाएंगे, मुफ्त में कनेक्शन देंगे। 11 महीने हुए योजना लागू किये अब तक दो करोड़ परिवारों को गैस का चूल्हा पहुंच गया है। और आज मुझे खुशी है कि करीब आठ हजार परिवार ये दादरा नगर हवेली में भी उनको ये गैस का कनेक्शन दिया जाएगा। लेकिन यहां के लोगों की मदद से उनको कूकर भी मिल रहा है लाइटर भी मिल रहा है। ये यहां विशेष हो रहा है। मैं बहुत बहुत बधाई देता हूँ। इस अभियान के लिये।

भाइयों बहनों आज यहां पर मेरे दिव्यांग भाइयों बहनों के लिये कुछ साधन देने का काम हुआ है। इलेक्ट्रिक व्हीकल देने का काम हुआ है। जो देख नहीं पाते हैं ऐसे दिव्यांग को हाथ में आधुनिक छड़ी दी है। ताकि सैसर से पता चले कि सामने कोई आता है। भाइयों बहनों सब सरकारों में योजनाएं होती थीं, लेकिन हमारी सरकार आने के बाद अब तक करीब पांच हजार कैंप लगे हैं और लाखों दिव्यांगों को मदद पहुंचाई गई है। पहले तीस साल में मुश्किल से पचास कैंप भी नहीं लगे थे। और पैसे धरे के धरे रहते थे भाइयों बहनों। सरकार गरीबों के लिये होती है, सरकार गरीबों के कल्याण के लिये होती है और इसीलिये सरकार हमारी अलग अलग जगह जिले जिले में जाकर के दिव्यांगों को खोजती है, कैंप लगाती है और भारत सरकार के खजाने से उनको संसाधन जुटा देती है, ताकि वे आत्मविश्वास के साथ अपनी जिन्दगी जीने के लिये आगे बढ़ें। उस दिशा में काम हो रहा है।

भाइयों बहनों आज यहां जन औषधि केन्द्रों का भी लोकार्पण हुआ है। हम जानते हैं बीमार होना कितना महंगा हो गया है। सुखी परिवार हो मध्यमवर्गीय परिवार हो, परिवार में पति पत्नी दोनों कमाते हों। लेकिन अगर घर में कोई बीमारी आ जाए, तो घर का पूरा आर्थिक कारोबार चौपट हो जाता है। बेटी की शादी करवानी हो तो नहीं करवा पाते, मकान खरीदना हो तो नहीं खरीद पाते, दवाई इतनी महंगी होती है। डॉक्टर इतने महंगे होते हैं। भाइयों बहनों हमने तय किया 800 जितनी दवाइयों का लिस्ट बनाया। दवाई बनाने वालों को बुलाया। हमने कहा इतने रुपये क्यों मांग रहे हो भाई, इतना मुनाफा करके क्या करोगे। सब लाइन में लग गए और जो दवाई 1200 रुपये में बिकती थी वो 70-80 रुपये में बिकना शुरू हो गया भाई। जो दवाई 300 रुपये में बिकती थी, वो 7 रुपये दस रुपये में बिकने लग गई। क्यों गरीब को भी दवाई मिलनी चाहिए। समय पर मिलनी चाहिए। उसको भी तो जीने का हक होता है। सरकार में दम होना चाहिए तब वो परिवर्तन लाकर के रहते हैं भाई। ऐसे जन औषधि केन्द्र आज, आज दादरा नगर हवेली में शुरू हो रहे हैं। ताकि यहां के गरीब को और डॉक्टर कुछ भी लिख कर के दे दें। आप चिंता किये बिना ये जन औषधि केन्द्र की दवाई लीजिए। कोई फर्क नहीं है। वो सस्ती है इसलिये खराब है ऐसा अगर कोई भ्रम फैलाता है तो मत मानिये। गरीबों को लुटने नहीं दिया जाएगा। मध्यमवर्गीय आदमी को मरने नहीं दिया जाएगा। और इसलिये भाइयों बहनों अनेक योजनाएं लेकर के आज मैंने देखा जब वाई फाई की बात आई सारे नौजवान उछल पड़े। जैसा ही वाई फाई के उद्घाटन पर टीवी पर दिखाया सबको खुशी की लहर आ गई। ये बदले हुए न्यू इंडिया का ये नमूना है। उसको लगता है जीवन का हिस्सा हो गया है। लेकिन भाइयों बहनों एक और काम मैं आपसे चाहता हूँ करोगे। ऐसे ढीला ढीला बोला तो क्या करोगे। करोगे। इधर से आवाज नहीं आ रही है। करोगे। करोगे। अपने मोबाइल फोन पर भीम एप डाउनलोड कीजिए। और भीम एप डाउनलोड करिए सिर्फ इतना ही नहीं, अपने इलाके के सभी व्यापारियों को भी भीम एप डाउनलोड करवाइये। और अब गैस पर पैसे किसी को दीजिये मत। उसको बताइए भीम एप से मैं पैसे देना चाहता हूँ। तुम भी मुझे भीम एप से जो देना चाहते हो दे दो। आदत डाल लीजिए भाइयों बहनों। ये वाई फाई का आपको जो आनन्द आ रहा है न अगर आप अपने ही मोबाइल फोन को अपनी बैंक बना दीजिए। अपने ही मोबाइल फोन को अपना बटुआ बना दीजिए। कम कैश से कारोबार कैसे चले। भाइयों बहनों भ्रष्टाचार के खिलाफ एक बहुत बड़ा जंग मैंने छेड़ा है। आप मुझे बताइए भ्रष्टाचार जाना चाहिए कि नहीं जाना चाहिए। बेईमानी खत्म होनी चाहिए कि नहीं चाहिए। ईमानदारी से देश चलना चाहिए कि नहीं चलना चाहिए। आपकी मदद के बिना कैसे होगा। करोगे मदद। करोगे मदद। और उसका एक उपाय है कम कैश आप भीम एप से भुगतान करने की शुरुआत कीजिए। कालेबाजारी भ्रष्टाचार के रास्ते बंद होना शुरू हो जाएंगे। और इसलिए मुझे आपकी मदद चाहिए। ये वाई फाई का उपयोग, और अभी तो एक योजना बनाई है भारत सरकार ने आप उससे कमाई कर सकते हैं। जो नौजवान वैकेशन में कमाई करना चाहते हैं। उनके लिए मैंने पूरे देश में एक योजना बनाई है। आप अगर अपने भीम एप से अपना आर्थिक कारोबार करते हैं। और एक और व्यापारी को या कोई और व्यक्ति को भीम एप डाउनलोड करके तीन बार खरीद बिक्री करने का सिखा देते हैं। और

अगर वो करता है तो सरकार की तरफ से आपके मोबाइल फोन में दस रुपया आ जाएगा। अगर दिन में आप बीस लोगों को करोगे, तो आपके मोबाइल फोन में 200 रुपया आ जाएगा। अगर इस वैकेशन के तीन महीने ये काम कर लिया तो आप 18 से 20 हजार रुपया कमा सकते हैं। हिन्दुस्तान के हर नौजवान ने इस वैकेशन में कम से कम बीस हजार रुपया कमाना है। भीम एप से कमाना है। अब मुझे अपने मां बाप से खर्च के लिये पैसा नहीं मांगना है। मोदी जी की योजना का फायदा उठाऊंगा, भीम एप का प्रचार करूंगा। और हर दिन बीस लोगों को समझा कर के 200 रुपया कमा कर आऊंगा। ये काम हम कर सकते हैं भाइयों। करोगे। करोगे कि वो ठेली वाला ही करोगे। हां वो नहीं करना है।

भाइयों बहनों अनेक योजनाओं का यहां आज आरंभ हुआ है। लोकापर्ण हुआ है। सारी योजनाओं का मैं उल्लेख नहीं कर रहा हूं। एक साथ इतनी सारी योजनाएं। गरीबों को आवास आदिवासी को घर। नौजवान को वाई फाई, युवकों को रोजगार, माताओं बहनों को गैस का कनेक्शन, कोई ऐसा नहीं है जिसको कोई लाभ न पहुंचा हो। शायद दादरा नगर हवेली की इतिहास में आजादी के बाद पहली बार इतना बड़ा समागम हुआ होगा। इतनी बड़ी सरकारी योजनाएं आई होगी और इतना बड़ा फायदा पहुंचाया होगा। मेरे साथ दोनों मुट्ठी बंद कर के बोलिये। भारत माता की जय, ऐसे नहीं। दमन वालों को भी परेशानी होनी चाहिए काम कैसे होता है। ऐसा जयकारा बोलिये जरा। भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय। बहुत बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ शाहबाज़ हसीबी /शौकत अली

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

14-अप्रैल-2017 16:59 IST

नागपुर, महाराष्ट्र में विभिन्न सरकारी परियोजनाओं और योजनाओं के शुभारंभ के बाद 'सार्वजनिक बैठक' में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

धम: चक्र परावर्तने च कार्य, य: दीक्षा भूमिवर डॉक्टर बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने केला य: भूमिला माझे प्रणाम। काशी प्राचीन ज्ञान नागरिया है, नागपुर बनू सकता क्या?

आज एक साथ इतनी लम्बी बड़ी लिस्ट है सबके नाम बोल नहीं रहा हूं। काफी लोगों ने बोल दिए, आपको याद रह गए होंगे।

एक साथ इतने सारे प्रकल्प आज नागपुर की धरती से देश को समर्पित हो रहे हैं। और आज.. आज 14 अप्रैल डॉक्टर बाबा साहेब अम्बेडकर की जन्म जयंती का प्रेरक अवसर है। यह मेरा सौभाग्य रहा कि आज प्रातः दीक्षाभूमि में जा करके उस पवित्र भूमि को नमन करने का अवसर मिला। एक नई ऊर्जा, नई प्रेरणा ले करके मैं आपके बीच आया हूं।

इस देश के दलित, पीड़ित शोषित, वंचित गांव, गरीब, किसान हर किसी के जीवन में आजाद भारत में उनके सपनों का क्या होगा? उनकी आशाओं, आकांक्षाओं का क्या होगा? क्या आजाद भारत में इन लोगों की भी कोई पूछ होगी कि नहीं होगी? इन सारे सवालों के जवाब भीम राव अम्बेडकर जी ने संविधान के माध्यम से देशवासियों को दिए थे, गारंटी के रूप में दिए थे। और उसी का परिणाम है कि संवैधानिक व्यवस्थाओं के कारण आज देश के हर तबके के व्यक्ति को कुछ करने के लिए अवसर सुलभ है और वही अवसर उसके सपनों को साकार करने के लिए उमंग और उत्साह के साथ जी और जान से जोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

व्यक्तिगत रूप से मैंने जीवन में.. मैं हमेशा अनुभव करता हूं कि आभाव के बीच में पैदा हो करके भी किसी भी प्रकार के प्रभाव से प्रभावित हुए बिना अभावों के रहते हुए भी प्रभावी ढंग से जीवन के यात्रा को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया जा सकता है और वो प्रेरणा बाबा अम्बेडकर राव से मिलती है। आभाव का रोना नहीं रोना और प्रभाव से विचलित नहीं होना, यह संतुलित जीवन दबे-कुचले हर किसी के लिए एक ताकत बन जाती है और वो ताकत देने का काम बाबा साहेब अम्बेडकर ने अपने जीवन से दिया है। कभी-कभार व्यक्ति के जीवन में अविरत रूप से जब कटु अनुभव रोज की जिंदगी का हिस्सा बन जाता है, अपमानित होना है, प्रताड़ित होना है, तिरस्कृत होना। अगर इंसान छोटे मन का हो तो ये चीजें घर में, मन-मंदिर में, मन-मस्तिष्क में किस प्रकार से कटुता के रूप में भर जाती है। और मौका मिले तो कभी लगता है अरे इसको दिखाऊंगा मैं। यह मेरे साथ हुआ था, बचपन में मेरे साथ यह हुआ था, स्कूल गया तो यह हुआ था, नौकरी करने गया तो यह हुआ था। क्या कुछ मन में नहीं था, लेकिन ये भीमराव अम्बेडकर थे, इतनी बुराइयों से सामना करना पड़ा। इतनी प्रताड़ना झेलनी पड़ी, लेकिन खुद के जीवन में जब मौका आया रत्तीभर इस कटुता को बाहर आने नहीं दिया। बदले का भाव अंश भर भी न संविधान में कभी प्रकट हुआ, न कभी उनकी वाणी में प्रकट हुआ, न उनके कभी अधिकार क्षेत्र में प्रकट हुआ। व्यक्ति की ऊंचाई ऐसे समय कसौटी कसने पर पता चलता है, कैसा महानतम व्यक्तित्व होगा। हम शिवजी को जब उनकी महानता की चर्चा सुनते हैं तो कहते हैं जहर पी लिया था। बाबा साहेब अम्बेडकर ने जीवन में हर पल जहर पीते-पीते भी हम लोगों के लिए अमृत वर्षा की थी। और इसलिए उस महापुरुष की जन्म जयंती पर और वो भी जिस धरती पर उनका नव जन्म हुआ उस दीक्षा भूमि पर प्रणाम करते हुए देश के चरणों में एक नई व्यवस्था देने का आज प्रयास हम कर रहे हैं।

आज अनेक योजनाओं का प्रारंभ हो रहा है, नये भवनों का प्रारंभ हो रहा है। करीब दो हजार मेगावाट बिजली के कारखानों का लोकार्पण हुआ। ऊर्जा जीवन का अटूट अंग बन गई है। विकास का कोई भी सपना ऊर्जा के अभाव में संभव नहीं है। और 21वीं सदी में ऊर्जा एक प्रकार से हर नागरिक का हक बन गया है। लिखित हो या न हो, बन चुका है। देश को 21वीं सदी की प्रगति की ऊंचाईयों पर ले जाना है अगर भारत को आधुनिक भारत के रूप में देखना है, तो ऊर्जा उसकी पहली आवश्यकता है। और एक तरफ पर्यावरण की चिंता के कारण विश्व Thermal Power को चुनौती दे रहा है तो दूसरी तरफ विकसित देशों के लिए वही एक सहारा है। वैश्विक स्तर पर इतनी बड़े conflict के बीच में जब रास्ता निकालना है तब भारत ने भी बीड़ा उठाया है कि हम पूरे विश्व को परिवार मानने वाले लोग हैं, पूरे ब्रह्माण्ड को अपना मानने वाले लोग हैं, हमारे द्वारा हम ऐसा कुछ नहीं होने देंगे, जो भावी पीढ़ी के लिए कोई संकट पैदा करे और इसलिए भारत ने 175 गीगावाट renewable energy का सपना देखा है। Solar Energy हो, Wind Energy हो, Hydro के projects हो और जब नितीन जी बड़े गर्व के साथ बता रहे थे कि नागपुर वासियों को जो गंदा पानी है, वो बिजली के उत्पादन में काम लाया जाता है, recycle किया जाता है। एक प्रकार से पर्यावरण के अनुकूल जो initiative है, मैं इसके लिए नागपुर को बधाई देता हूँ। और देश के अन्य भागों में भी zero waste का concept धीरे-धीरे पनप रहा है।

आज यहां आवास निर्माण का भी एक बहुत बड़ा कार्यक्रम हाथ में लिया गया, उसका भी प्रारंभ हुआ है। 2022 आजादी के 75 साल हो गए। पल भर के लिए हम 75 साल की पहले की जिंदगी के जीने का प्रयास करके देखें। हम उस कल्पना में अगर पहुंचें 1930, 40, 50 के पहले का कालखंड जब देश के लिए लोग जान की बाजी लगा देते थे। हिंदुस्तान का तिरंगा फहराने के लिए फांसी के तख्ते पर चढ़ जाते थे। मां भारती को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए जवानी जेल में खपा देते थे। मृत्यु का आलिंगन करते थे। हंसते-हंसते देश के लिए मर मिटने वालों की कतार कभी बंद नहीं हुई थी। इस देश के वीरों ने वो ताकत दिखाई थी कि फांसी के फंदे कभी कम पड़ जाते थे, लेकिन मरने वाले देश के लिए शहादत देने वालों की संख्या कभी कम नहीं हुआ करती थी। अनगिनत बलिदानों का प्रणाम था कि भारत मां हमारी आजाद हुई है। लेकिन आजादी के दीवानों ने भी तो कुछ सपने देखे थे उन्होंने भी भारत कैसा हो, एक इरादा रखा था। उनको तो वो सौभाग्य मिला नहीं आजाद हिंदुस्तान में सांस लेने का। हमें सौभाग्य मिला नहीं उस आजादी के आंदोलन में अपनी जिंदगी खपाने का, लेकिन हमें मौका मिला है, देश के लिए मरने का मौका न मिला, देश के लिए जीने का मौका मिला है।

क्या 2022 जब आजादी के 75 साल हो रहे हैं। आज हम 2017 में खड़े हैं। पांच साल का समय हमारे पास है। सवा सौ करोड़ देशवासी अगर संकल्प करें कि जिन महापुरुषों ने आजादी के लिए जीवन लगा दिया, उनके सपनों का भारत बनाने के लिए मेरी तरफ से इतना योगदान होगा। मैं भी कुछ करके रहूंगा, और संकल्प करके रहूंगा और सही दिशा में करके रहूंगा, मैं नहीं मानता हूँ कि 2022 आते-आते देश विश्व के सामने खड़े होने की ताकत के साथ खड़ा नहीं होगा, मुझे कोई आशंका नहीं है। और उसमें एक सपना है हमारा 2022 जब आजादी के 75 साल हो तब मेरे देश के गरीब से गरीब का अपना घर हो। इस देश का कोई गरीब ऐसा न हो, जिसको अपना रहने के लिए अपना घर न हो, अपनी छत न हो। और घर भी ऐसा हो, जिसमें बिजली हो, पानी हो, चूल्हा हो, गैस का चूल्हा हो, नजदीक में बच्चों के लिए स्कूल हो, बुजुर्गों के लिए नजदीक में अस्पताल हो ऐसा हिन्दुस्तान क्यों नहीं देख सकते। क्या सवा सौ देशवासी मिल करके हमारे देश के गरीब के आंसू नहीं पोंछ सकते? भीम राव अम्बेडकर जी ने जिन सपनों को ले करके संविधान में रचना की है, उन संविधान को जी करके दिखाने का अवसर आया है। हम 2022 के लिए संकल्प करें, कुछ कर-गुजरने का इरादा लेकर चल पड़ें। मैं मानता हूँ कि यह सपना पूरा होगा।

मैं महाराष्ट्र सरकार को बधाई देता हूँ कि भारत सरकार की योजनाके साथ महाराष्ट्र भी कदम से कदम मिला करके आगे बढ़ रहा है। और बहुत बड़ी मात्रा में घर बनाने की दिशा में काम चल रहा है और उससे लोगों को रोजगार भी बहुत मिलने वाला है। गरीब को घर मिलेगा, लेकिन घर बनाने वालों को रोजगार भी मिलेगा। सीमेंट बनाने वालों को काम मिलेगा, लोहा बनाने वालों को काम मिलेगा, हर व्यक्ति को काम मिलेगा। एक प्रकार से रोजगार के सृजन की भी बड़ी संभावना है। और हिन्दुस्तान के हर कौने में अपने-अपने तरीके से घर बनाने का बहुत बड़ा अभियान चल रहा है। आज उसका भी प्रारंभ करने का मुझे अवसर मिला है।

21वीं सदी ज्ञान की सदी है। और मानव इतिहास इस बात का गवाह है जब-जब मानवजात ज्ञान युग में रहा है, तब-तब हिंदुस्तान ने नेतृत्व किया है। 21वीं सदी ज्ञानका युग है। भारत को नेतृत्व देने का एक बहुत बड़ा अवसर है। आज यहां एक साथ IIT, IIM, AIIMS एक से बढ़कर एक और यहां नये भवनों के निर्माण पर यह सारी institutions चलेगी। महाराष्ट्र के और देश के नौजवानों को अपना भाग्य बनाने के लिए, आधुनिक भारत बनाने के लिए अपनी योग्यता बढ़ाने की इन संस्थानों के द्वारा अवसर मिलेगा। मेरी युवा पीढ़ी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। यह आज जब मैं उनको, मेरी देश की युवा पीढ़ी को यह अर्पित कर रहा हूं, मेरी उन सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं।

आज... पिछले कुछ दिनों से डिजिटल इंडिया की दिशा में हम काम कर रहे हैं और बहुत व्यापक रूप से काम कर रहे हैं। उसका एक फलक है - डिजि-धन, और मेरा मत है वो दिन दूर नहीं होगा। गरीब से गरीब व्यक्ति कहने लगेगा डिजि-धन, निजि-धन। यह डिजि-धन, निजि-धन यह गरीब की आवाज बनने वाला है। मैंने देखा बड़े-बड़े विद्वान विरोध करने के लिए ऐसा विरोध कर रहे थे कि मोदी जी अब कह रहे हैं कि कैशलेस सोसायटी, फलाना-ढिकाना। मैंने ऐसे-ऐसे भाषण सुने आपको फिर मुझे बड़ा व्यंग विनोद के लिए और कुछ करना नहीं पड़ा था। उनको याद कर लेता था तो मुझे बड़ा.. मैं हैरान था मतलब विद्वान लोग क्या बोल रहे हैं।

कम कैश घर में भी आपने देखा होगा धनी से धनी परिवार होगा, बेटा होस्टल में रहता होगा तो भी मां-बाप के बीच चर्चा होती है। एक साथ ज्यादा पैसा मत भेजो, कहीं बेटे की आदत बिगड़ जाये। धनी से धनी परिवार भी, गरीब से गरीब परिवार भी बेटा कहेगा मां मुझे आज पांच रुपया दो, तो बाप समझाता है नहीं-नहीं बेटा ऐसा कर दो रुपया ले जाओ। कम कैश जीवन में भी महत्व रखती है, यह हम परिवार में अनुभव करते आए हैं। सुखी से सुखी परिवार भी बंडल के बंडल बेटों को नहीं देते, क्योंकि उनको मालूम है इससे क्या-क्या होता है। अच्छा कम होता है, बुरा ज्यादा होता है। जो व्यक्ति के जीवन में है वही समाज के जीवन में होता है, वहीं राष्ट्र के जीवन में होता है, वही अर्थव्यवस्था के भी जीवन में होता है। यह सीधी-सीधी सरल समझ को हमने व्यवहार में लाना चाहिए। कम कैश, कम नगद इससे कारोबार चलाया जा सकता है और कोई एक जमाना था जब सोने की ही लगड़ी ही करेंसी रहती थी। सोने की गिनी हुआ करती थी, बदलते-बदलते कभी चमड़े का भी आया, कागज़ का भी आया, न जाने कितने बदलाव आए। और हर युग ने हर बदलाव को स्वीकार किया है। हो सकता है उस समय भी कुछ लोग रह होंगे, जो कुछ कहते होंगे शायद उस समय अखबार नहीं होंगे, इसलिए छपता नहीं होगा, लेकिन कुछ कहते तो होंगे ही होंगे उस समय भी। विवाद भी रह होंगे, लेकिन बदलाव भी हुए होंगे। अब वक्त बदला है। आपके पास alternate व्यवस्थाएं available, सुरक्षित व्यवस्थाएं available हैं और उसमें से BHIM App. और मैं मानता हूं भारत के संविधान में सामान्य मानव को हक देने का काम जिस तरीके से भीमराव अम्बेडकर ने किया है, उसी तरीके से BHIM App अर्थव्यवस्था के महारथी के रूप में काम करने वाली है। यह मेरे शब्द लिख करके रखिए। कोई रोक नहीं पाएगा, यह होकर रहने वाला है।

आप हैरान होंगे हिन्दुस्तान जैसे देश में करेंसी छापना, छाप करके पहुंचाना, सुरक्षित पहुंचाना अरबो-खरबों रुपया का खर्च होता है। अगर इन व्यवस्थाओं से पैसे बच जाए, तो कितने गरीबों के घर बन जाए दोस्तों। कितनी बड़ी देश सेवा हो जाए। और यह सब संभव है इसलिए करना है, न होता तो नहीं करना है। वो भी गुजारा करते थे, पहले वो व्यवस्था थी, जरूरी थी, करते थे। अगर कम कैश की दिशा में हम तय करे आप देखिए बदलाव संभव है। मैं तो हैरान हूं एक-एक एटीएम की रक्षा के लिए पांच-पांच पुलिस वाले लगे रहते हैं। एक इंसान को सुरक्षा के लिए पुलिस देने में दिक्कत होती है, एटीएम के लिए खड़ा रहना पड़ता है। अगर कम कैश का कारोबार हो जाए, आपका मोबाइल फोन ही आपका एटीएम बन जाए। और वक्त दूर नहीं है जब premises-less and paper-less banking जीवन का हिस्सा बनने वाला है। जब premises-less and paper-less banking जीवन का हिस्सा बनने वाला है इसका मतलब हुआ कि आपका मोबाइल फोन यह सिर्फ आपका बटुआ नहीं, आपका मोबाइल फोन आपका अपना बैंक बन जाएगा। Technology का revolution आर्थिक जीवन का हिस्सा बन रहा है। और इसलिए 25 दिसंबर को जब यह डिजिधन योजना को लॉन्च किया गया था। जिस दिन लॉन्च किया था क्रिसमस की शुरुआत थी। Happy Christmas के साथ शुरू किया था। सौ दिन तक सौ शहरों में चला। और आज उसकी पुर्णणावति एक प्रकार से इधर 14 अप्रैल बाबा अम्बेडकर साहेब की जन्म जयंती, BHIM App का सीधा संबंध और दूसरी तरफ गुड फ्राइडे का दिन। Christmas के दिन प्रारंभ किया था, हंसी-खुशी के साथ शुरू किया था। यात्रा करते-करते अब तक चल पड़े।

आज तभी लोगों को लगता था कि जिसके पास मोबाइल फोन नहीं है, क्या करेंगे। मैंने Parliament में बहुत भाषण पढ़े, interesting भाषण हैं सब। देश के पास स्मार्ट फोन नहीं हैं, ढिंगना नहीं है, फलाना नहीं है। हमने उनको समझाया भई 800-1000 रुपया वाले फीचर वाले फोन से भी गाड़ी चलती है, लेकिन जिसको समझना नहीं उसको कैसे समझाए! लेकिन अब तो आपको मोबाइल फोन की आवश्यकता नहीं है, अब आप यह नहीं पूछोगे कि भई क्या करेंगे। आपके पास अंगूठा तो है न। एक जमाना था अनपढ़ होने की निशानी हुआ करती थी। युग कैसे बदल गया है, वही अंगूठा आपकी शक्ति का केंद्र बिंदू बनता जा रहा है। यहां सारे नौजवान दिन में दो-दो घंटे अंगूठे पर लगे रहते होंगे। मोबाइल फोन ले करके मैसेज लिखते होंगे। टेक्नोलॉजी ने अंगूठे को ताकतवर बना दिया है। और इसलिए BHIM-AADHAR भारत गर्व कर सकता है। दुनिया के टेक्नोलॉजी के लिए advance देश के पास भी यह व्यवस्था नहीं है, जो हिंदुस्तान के पास है।

अब जो लोग BHIM App पर विवाद करने के बाद भी लोग स्वीकार करते गए, तो वो आधार पर विवाद करने में लगे हुए हैं। वो उनको काम करते रहेंगे। आपके पास मोबाइल फोन हो या न हो, आपका अगर आधार नंबर है। आप स्वयं किसी दुकानदार के यहां गए हैं और उसके पास छोटा सा instrument होगा। बड़ा PoS मशीन की भी जरूरत नहीं होगा, छोटा सा एक होगा दो इंच बाय दो इंच का, वो आपका अंगूठा वहां लगवा देगा और उससे अगर आपका पहले से ही बैंक के साथ आपका आधार नंबर जुड़ा हुआ है। अगर आपने दस रुपया का माल लिया है, दस रुपया आपका automatic कट हो जाएगा। एक रुपया साथ में ले जाने की जरूरत नहीं। कहीं आपका कारोबार रूकेगा नहीं, कितनी उत्तम व्यवस्था की दिशा में हम जा रहे हैं। और इसलिए जो आज भीम आधार एक ऐसा version.. और आप देखना जी वो दिन दूर नहीं होगा दुनिया की बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटी इस BHIM-AADHAR का case study करने के लिए भारत -- आएगी। सारे नौजवान study करेंगे। दुनिया में आर्थिक बदलाव क्या हो सकता है इसका यह आधार बनने वाला है। यह reference बनने वाला है।

और मैं कल ही हमारे रविशंकर जी को कहता था कि भारत सरकार ने इसका patent करवाया कि नहीं करवाया, क्योंकि यह होने वाला है, दुनिया इस विषय को अपना विषय बनाने के लिए.. मुझे अभी अफ्रीकन देशों के जितने मुखिया लोग मिले, उन्होंने मेरे से इसकी जिज्ञासा भी की और यह भी चाहा था कि हमारे देश के लिए आप कर सकते हैं क्या? धीरे-धीरे इसका वैश्विक विस्तार का कारण भी बन सकता है और भारत एक बहुत बड़े Catalytic Agent के रूप में काम कर सकता है।

इस डिजिडन योजना के तहत हिन्दुस्तान के सौ अलग-अलग शहरों में कार्यक्रम किए गए। लाखों लोगों ने बढ़-चढ़ करके हिस्सा लिया। टेक्नोलॉजी को समझने का प्रयास किया, स्वीकार करने का प्रयास किया। और बहुत बड़ी मात्रा में लोगों को ईनाम मिले और आज जिन लोगों को ईनाम मिला उनमें से एक सज्जन चेन्नई के उन्होंने तो घोषणा कर दी कि मुझे जो ईनाम मिला है, वो मैं गंगा सफाई के लिए समर्पित कर देता हूँ। मैं उनका अभिनंदन करता हूँ। और वैसे भी यह डिजिडन सफाई अभियान ही है। भ्रष्टाचार, कालेधन के खिलाफ लड़ाई का एक बहुत बड़ा माजा रखता है।

और मैं देशवासियों को कहना चाहता हूँ कम cash विचार आपको पसंद आए या न आए। cash-less society का सपना आपको अच्छा लगे या न लगे। नोटो के बिना जिंदगी कैसे गुजरेगी आपके मन में सवाल या निशान हो या न हो, लेकिन इस देश में कोई ऐसा इंसान नहीं होगा, जिसके दिल, दिमाग में भ्रष्टाचार के प्रति गुस्सा न हो। देने वाला भी गुस्सा करता होगा, और कभी लेने वाला भी रात को जा करके सोचता होगा कि यार अभी मोदी आया है कहीं फंस जाऊंगा तो क्या होगा? बहुत बुरा हुआ है, लेकिन आगे बुराई से बचने के लिए एक उत्तम साधन है। जो भी BHIM-AADHAR के सहारे मदद करेंगे मेरी, वो एक प्रकार से भ्रष्टाचार और कालेधन की लड़ाई लड़ने के सिपाही हैं मेरे लिए। यह बहुत बड़ी ताकत है मेरे लिए। और इसलिए मैं इसे निमंत्रण देता हूँ मेरे नौजवानों! और इसमें दो नई चीजें जोड़ी हैं इस बार। और तो योजना यह है कि वो 14 अक्टूबर तक हम चलाएंगे। आज 14 अप्रैल है। 14 अक्टूबर इसलिए 14 अक्टूबर को बाबा साहेब अम्बेडकर ने दीक्षा ली थी। बाबा साहेब अम्बेडकर का दीक्षा का वो पवित्र अवसर था, 14 अक्टूबर। और इसलिए आज 14 अप्रैल से 14 अक्टूबर तक एक विशेष योजना है। आज देखा होगा आपने अच्छे परिवार के नौजवान भी उनके दिमाग में भी है कि हम vacation में कुछ न कुछ काम करे और खुद कमाई करे। धनी परिवार के बच्चे भी अपनी पहचान छुपा करके ऐसी जगह पर जाते हैं और ऐसे काम करते हैं खुद को trained करना चाहते हैं। जिस सर्कल में वो पैदा हुए हैं वहां

वो मौका नहीं बनता है। वो होटल में जाते हैं, बर्तन साफ करते हैं, चाय परोसते हैं इस प्रकार से काम करते हैं। कई पेट्रोल पम्प पर जा करके काम करते हैं। एक गर्व से जीने का.. आज नई पीढ़ी के दिमाग में यह चीजें आ रही हैं।

पहले हम सुनते थे विदेश में नौजवान सब रात को जा करके दो-दो तीन-तीन घंटे ऐसी मेहनत काम करते हैं टैक्सी चलाते हैं, ढिकाना करते हैं, फलाना करते हैं। कुछ कमाई करते हैं और फिर पढ़ते रहते हैं। आज हिंदुस्तान में यह चीज आई नहीं है, ऐसा नहीं है। हमारा ध्यान नहीं है। इस BHIM-AADHAR के तहत मैं इस vacation में मैं मेरे देश के नौजवानों को निमंत्रित करता हूँ। इसमें एक योजना है referral यानी अगर आप किसी को भीम एप के संबंध में समझाएंगे। किसी merchant को समझाएंगे, किसी नागरिक को समझाएंगे, उसके मोबाइल फोन पर भीम एप download करवाएंगे। और आपकी प्रेरणा से वो तीन transaction करेगा, कभी पचास रुपये की चीज़ खरीदेगा, कभी 30 रुपये की, कभी 100 रुपये की खरीदेगा। यह आपके द्वारा अगर हुआ है तो एक अगर आपने व्यक्ति को इसमें जोड़ा तो सरकार की तरफ से आपके खाते में 10 रुपया जमा हो जाएगा। अगर एक दिन मैं आप 20 लोगों को भी यह कर लें, तो शाम को आपकी जेब में 200 रुपया खाते में आएंगे। अगर vacation के तीन महीने तय कर लें कि 200 रुपया कमाना है, बताइये मेरे नौजवान साथियों यह कोई मुश्किल काम है क्या आपके लिए? सामने से कुछ लेना-देना नहीं उसको सिर्फ सिखाना है, समझाना है और जो व्यापारी अपने दुकान पर BHIM-App को लागू करेगा कारोबार उससे शुरू करेगा, तो उसको जो उसकी minimum जो रैंक है उसको करेगा, तो उसको 25 रुपया मिलेगा। उसके खाते में 25 रुपये जमा हो जाएंगे। यानी जिसको आपको समझाना है उसको समझा सकते हैं। लेकिन मुझे तो 10 मिल रहा है, लेकिन तेरे को 25 मिलने वाला है। और यह योजना 14 अक्टूबर तक चलेगी बाबा साहेब अम्बेडकर का दीक्षा प्राप्त करने वाला दिवस था। छह महीने हमारे पास है। हर नौजवान इस vacation में 10 हजार, 15 हजार आराम से कमा सकता है। और आप भ्रष्टाचार के खिलाफ की लड़ाई जीतने के लिए मेरे सबसे बड़े मददगार बन जाएंगे, इसलिए मैं आपको निमंत्रण देता हूँ कि इस योजना में उसकी बारीकी जो लिखित होगी वो ही फाइनल में समझाने के लिए थोड़ा plus-minus बोल रहा हूँ। लेकिन जब आप लिखित पढ़ेंगे तो पक्की योजना आपको समझ आ जाएगी। और मैं चाहता हूँ, मैं देश के नौजवानों को चाहता हूँ कि अब exam हो गई है, मोबाइल फोन उठाइये, इस व्यवस्था को समझिए और per day 20 लोग, 25 लोग, 30 लोग लग जाइये। आप शाम को 200-300 रुपये कमा करके घर चले जाएंगे और पूरे vacation में आप करेंगे अगली साल की आपका खर्चा पढ़ाई का pocket खर्चा अपने निकल जाएगा। कभी गरीब मां-बाप के पास से एक रुपया मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह revolution लाने का प्रयास है।

आज यहां 75 township कम कैश वाली उसका लोकार्पण हुआ। इसका मतलब यह हुआ कि जहां पर township में लोग रहते हैं, अलग-अलग fertilizer कंपनियों की township है, कहीं रेलवे वालों की township है, कहीं फौज वालों की township है ऐसी 75 ने पूरी तरह अपने आप को कम कैश वाला किया है। तो जब मैंने इसकी पहली एक township कम कैश वाली बनी तो मैं उसका presentation ले रहा था। मैंने कहा सब्जी वाले का क्या interest है, वो क्यों यह कारोबार में आया। उसने बड़ा interesting जवाब दिया सब्जी वाले ने, उसने कहा पहले यह जो township में यह जो बैचने के लिए मैं फुटपाथ पर बैठता हूँ, सब्जी बैचता हूँ, तो जो महिलाएं सब्जी खरीदने आती हैं अगर बिल बन गया 25 रुपया 80 पैसा तो कहती है कि चलो 25 रुपये ले लो, काम चल जाएगा, वो 80 पैसे नहीं देती। कितनी भी अमीर परिवार की महिला हो, बड़े से बड़े बाबू की पत्नी हो। वो 80 पैसा नहीं देती थी। ले लो 25 रुपया, चलो ठीक है, छुट्टा छोड़ दो। बोले इसके कारण क्या हुआ है मुझे पूरा 25 रुपया 80 पैसा मिलता है। और बोला शाम को जो मेरा 15-20 रुपया कम पड़ जाता था अब मेरा 15-20 रुपया मेरी extra income ऐसे ही हो गई। अब देखिए कितना फायदा एक गरीब आदमी ने अपने में से ढूँढ लिया। लेकिन यह 75 township एक अच्छी शुरुआत है। यह हम लोगों की कोशिश रहनी चाहिए कि हम कम कैश की ओर देश को ले चले, हम इसमें योगदान दे और यह जो revolution हो रहा है। उसके हम स्वयं एक सिपाही बने। उस बात को हम आगे बढ़ाएं।

मुझे विश्वास है कि आज जिन लोगों को ईनाम मिला है और इतने कार्यकाल में करीब ढाई सौ करोड़ रुपये से ज्यादा ईनाम मिले हैं। वे ईनाम प्राप्त कर करके संतोष न माने। हजारों की तादाद में नागरिकों को ईनाम मिला है वे भी इसके एम्बेसेडर बने, वे भी इस काम को आगे बढ़ाएं। यह देश में परिवर्तन लाने का नागरिकों की मदद से होने वाला एक बहुत बड़ा सफल अभियान है। मैं रविशंकर जी और उनके विभाग की पूरी टीम को नीति आयोग को बड़ी बधाई देता हूँ कि full-proof technology के लिए उन्होंने भरसक कोशिश की। दुनिया में जितने प्रकार की technology में innovation हुए हैं इन सारी चीजों को स्टडी किया है और उसमें से उत्तम से उत्तम क्या हो सकता है। भारत के सामान्य मानव को गरीब से गरीब व्यक्ति भी इसको अपने कारोबार से चला सके। इतना user friendly विश्वस्त यह व्यवस्था विकसित हुई है। मैं फिर एक

बार विभाग के सभी साथियों को बधाई देता हूं। मैं महाराष्ट्र सरकार का अभिनंदन करता हूं कि इस कार्यक्रम की रचना के लिए नागपुर को उन्होंने जजमान के रूप में उत्तम सेवा की। बहुत बड़ी मात्रा में आप सब से मुझे मिलने का अवसर मिला। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी / अमित कुमार / तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

06-अप्रैल-2017 23:01 IST

साहिबगंज झारखंड में कई सरकारी परियोजनाओं के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

भाइयों बहनों आज सांथाल की धरती पर आने का मुझे सौभाग्य मिला है। भगवान बिरसा मुंडा, चांद भैरव, निलांबर-पितांबर जैसे वीर सपूतों की ये धरती। इस धरती को मैं नमन करता हूं और इस धरती के वीर नागरिकों का भी मैं हृदय से अभिवादन करता हूं। आज झारखंड में साहबगंज की धरती पर एक साथ सप्तधारा विकास की योजनाओं का शुभारंभ हो रहा है। सांथाल में इस इलाके में एक साथ इतनी बड़ी विकास की योजनाएं शायद आजादी के बाद किसी एक कार्यक्रम के तहत इस क्षेत्र के विकास के लिये उठाए कदम पहली बार होते होंगे ऐसा मैं मानता हूं। ये पूरे सांथाल इलाके का अगर भला करना है यहां के समस्याओं का समाधान करना है यहां के गरीब से गरीब मेरे आदिवासी भा बहन मेरे पिछड़े भाई बहन अगर इनकी जिन्दगी में बदलाव लाना है तो उसका एक ही उपाय है। और वो उपाय है, विकास। जितना तेज गति से हम विकास यहां करेंगे यहां के जन सामान्य की जिन्दगी बदलने में हम सफल होंगे।

आज एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण कार्यक्रम जो झारखंड और बिहार को जोड़ रहा है। गंगा के ऊपर दो राज्यों को जोड़ने वाला सबसे बड़ा ब्रिज 2200 करोड़ रुपये से ज्यादा लागत और ये सिर्फ दो राज्यों को जोड़ता है ऐसा नहीं ये विकास के नये द्वार को खोल देता है आप यहां से पूर्वी भारत के विशाल फलक के साथ अपने आपको सीधा जोड़ने का इस ब्रिज के बनने से आपको अवसर मिल रहा है।

मैं बिहारवासियों को बधाई देता हूं। मैं झारखंडवासियों को बधाई देता हूं कि एक महत्वपूर्ण ब्रिज का आज शिलान्यास हो रहा है और हमारे नितिन गडकरी जी, ये ऐसे मंत्री हैं जो समय सीमा में काम करवाने में बहुत कुशल हैं। और इसलिये मेरा पक्का विश्वास है कि जिस तारीख को इसका लोकार्पण तैय होगा उस तारीख की सीमा रेखा में पूरा काम पूरा करवा देंगे। ये लटकते हुए काम नहीं रहेंगे। आप कल्पना कर सकते हैं इस इलाके के कितने नौजवानों को रोजगार मिलेगा। और अपने ही जनपद में शाम को अगर घर लौटकर जाना है तो आसानी से जा सके। वहां उनका रोजगार भी होगा उसके साथ-साथ ये काम ऐसा है कि उनका Skill Development भी होगा। एक नई हुनर एक नई महारत, जब दो ढाई साल तक लगातार एक Project पर लगते हैं, तो किसी Engineer से भी ज्यादा काम करने की ताकत उसके अंदर आ जाती है। इस इलाके में इस Project के कारण हजारों परिवार के नौजवान ऐसी ताकत प्राप्त करेंगे। जो आने वाले दिनों में झारखंड हो, बिहार हो, हिन्दुस्तान का और कोई इलाका हो वहां भी अगर कोई ऐसे Project आते हैं तो इस इलाके के नौजवानों की पहली पसंद होगी और लोगों को ज्यादा पैसे देकर के अपने यहां काम के लिये ले जाएंगे। ये ताकत इसमें से पैदा होने वाली है। और इस सारे Project में सबसे बड़ी जो ताकत है ये मानव शक्ति का संयोजित रूप से Skill Development करके विकास करना है।

मैं यहां के नौजवानों को शुभकामनाएं देता हूं। ये आपके आंगन में शुभ अवसर आया है। आप भी मन में ठान लीजिये मेहनत भी करनी है और अपनी क्षमता भी बढ़ानी है। और एक बार क्षमता बढ़ गई तो दुनिया आपको पूछती हुई चली आएगी कि यहां जो अनुभवी नौजवान हैं उनकी हमें जरूरत है। ये बदलाव आने वाला है। आज मुझे यहां एक दूसरे कार्यक्रम का भी लोकार्पण का अवसर मिला है। और वो है साहबगंज से गोविंदपुर तक सड़क का जो निर्माण हुआ है। इसका लोकार्पण करना है। पहले कभी यहां से गोविंदपुर जाना होता तो 10 घंटे, 12 घंटे, 14 घंटे लग जाते थे। अब ये जो नया रोड बना है पांच, सात घंटे में आप गोविंदपुर पहुंच सकते हैं। कितनी बड़ी गति आई है आपके जीवन में इसके कारण कितना बड़ा बदलाव आया है और ये सिर्फ सड़क नहीं है पूरे सांथाल इलाके को बीच से निकलने वाली ये सिर्फ सड़क नहीं है ये पूरे सांथाल के इलाके के गरीब से गरीब नागरिक के जीवन में विकास का एक नया रास्ता खोल रही है। विकास की नई दिशा खोल रही है। विकास का एक नया लक्ष्य नजदीक लाकर के रख रही है। और इसलिये सड़कें बहुत बनती हैं यातायात के लिये काम आती हैं लेकिन ये सड़क उन सड़कों में से नहीं है वो सिर्फ जाने आने का काम नहीं ये विकास कि ओर बढ़ने का एक रास्ता बन रहा है और जो पूरे सांथाल इलाके की सकल सूरत को बदल देगा। ये मेरा पक्का विश्वास है।

भाइयों बहनों नदी को हम मां कहते हैं। और मां हमें सबकुछ देती है लेकिन कभी कभी ऐसी भी कहावत कही जाती है कि मांगे बिना मां भी नहीं परोसती है। गंगा मां सदियों से इस पूरे क्षेत्र को नव पल्लवित करती रही है। ये जीवन धारा के रूप में बह रही है। लेकिन बदलते युग में ये मां गंगा में हमारे जीवन को एक नई ताकत भी दे सकती है 21वीं सदी के विश्व

में ये मां गंगा झारखंड को दुनिया से सीधा-सीधा जोड़ने की दिशा में हम आगे बढ़ना चाहते हैं। क्या कभी आपने कल्पना की थी समुद्री तट के जो शहर होते हैं राज्य होते हैं वे तो अपने आप दुनिया से जुड़ जाते हैं लेकिन Land Lock इलाका झारखंड जैसा इलाका जहां निकट में कहीं समन्दर नहीं है। क्या वह भी विश्व के साथ जुड़ सकता है। जिस Project को लेकर हमारे नितिन गडकरी जी काम कर रहे हैं। और बड़े मनोयोग से कर रहे हैं। और उससे सबसे बड़ा काम होने वाला है। ये Project जब पूरा होगा तो ये झारखंड सीधा-सीधा पूरी दुनिया के साथ जुड़ने की ताकत बन जाएगा। और वो Project है गंगा में Multi model Terminal का शिलान्यास। बंगाल की खाड़ी तक यहां से जहाज चलेंगे गंगा में जहाज चलेंगे, माल ढो कर के ले जाएंगे और यहां कि चीजें सीधे सीधी बंगाल की खाड़ी से निकल कर के समुद्री मार्ग से सीधी दुनिया में पहुंच पाएगी। व्यापार के लिये विश्व व्यापार के लिये जब इस प्रकार की सुविधायें उपलब्ध होती हैं तब विश्व व्यापार के अंदर झारखंड की अपनी जगह बना सकती है। चाहे यहां के स्टोन चिप्स हों, चाहे यहां का कोयला हो, चाहे यहां के अन्य पैदावार हो। विश्व के बाजार में सीधा पहुंचाने का सामर्थ्य इसके अंदर आ सकता है। इतना ही नहीं ये व्यवस्था बनने के बाद अगर यहां का कोयला पश्चिमी भारत में ले जाना है, तो जरूरी नहीं है इसको रोड, रास्ते और रेल से ले जाया जाए। वो बंगाल की खाड़ी से समुद्र के मार्ग उस ओर ले जाया जाए सस्ता पड़ जाएगा। और जो इस क्षेत्र में काम करते होंगे इनकी आर्थिक ताकत बढ़ाने में उपयोगी होगा।

भाइयों बहनों हमारे देश में Highway कि चर्चा चिंता हुई अटल बिहार वाजपेयी की सरकार थी तब हमारे देश के Infrastructure में दो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदान अटल जी की सरकार के Infrastructure के क्षेत्र में के दो में कह रहा हूं और तो सैंकड़ों हैं। एक उन्होंने पूरे हिन्दुस्तान को स्वर्णिम चतुर्कोष से जोड़कर के Infrastructure को आधुनिक रूप देने का एक सफल प्रयोग किया। पूरा किया। दूसरा प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना जिससे हिन्दुस्तान के गांव गांव को जैसे शरीर के अंदर अलग-अलग सिरा और धमनियां होती हैं वैसे प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क के द्वारा रास्तों का पूरा नेटवर्क खड़ा करने का बीड़ा उठाया। बहुत बड़ा काम उनके कार्यकाल में हुआ। बाद में भी जो सरकारें आई उस कार्यक्रम को चला रही है। ये वाजपेयी जी का दूसरा योगदान था।

भाइयों बहनों हमने Infrastructure की बात आती है, तो रोड और रास्तों की चिंता चर्चा की। हाईवे बनाए, हमने हवाई जहाज के लिये एयरपोर्ट बनाना उसकी व्यवस्थाएं खड़ी की। हमने रेलवे के विस्तार के लिये काम किया। लेकिन एक क्षेत्र हमें चुनौती दे रहा था। वर्तमान सरकार ने नितिन गडकरी जी के नेतृत्व में एक ऐतिहासिक नया फैसला लिया है कि हमारे देश की जो पानी से भरी हुई नदियां हैं उसमें यातयात करके कम खर्च में माल ढोने का पूरा अभियान चले और उसी के तहत बनारस से हल्दिया तक कारगो ले जाने के लिये पूरी व्यवस्था विकसित हो रही है। झारखंड को बंगाल की खाड़ी तक जोड़ा जा रहा है। यहां से जहाज चलेंगे। नदी में छोटे छोटे नाव तो हमने बहुत देखे हैं। हजारों टन माल उठाकर ले जाने वाले जहाज चलेंगे। आप कल्पना कर सकते हैं विकास का कौनसा नया क्षेत्र हमारे सामने उभर कर के आ रहा है। Highway है, Airways है, Railways है अब आपके सामने है Water way. ये Water way इसका ये शुभारम्भ शिलान्यास का आज काम हो रहा है। हजारों करोड़ की लागत आने वाली है। भारत में ये पूरा अभियान नये सिरे से हो रहा है। और इसलिये इसका एक कौतव्य होने वाला है। आने वाले दिनों में अर्थशास्त्री इस पर लिखने वाले हैं। इस पर चर्चा करने वाले हैं कि भारत के Infrastructure में Environment Friendly Infrastructure कि ओर कैसे आगे बढ़ रहा है। पर्यावरण की भी रक्षा हो, विकास भी हो, यातायात भी हो, गति भी मिले एक ऐसा काम हो उसी दिशा में तेजी से काम बढ़ाने के लिये नितिन जी का Department आज काम कर रहा है। मां गंगा सब कुछ दे रही थी। अब एक नई भेंट मां गंगा के द्वारा विकास का एक नया मार्ग हमारे लिये प्रस्तुत हो रहा है। इसलिये मां गंगा का हम जितना ऋण स्वीकार करें उतना कम होगा।

भाइयों बहनों मैं आज झारखंड के मुख्यमंत्री श्रीमान रघुवर दास जी को इस बात के लिए बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने इन सांथाल इलाके के किसानों के लिये पशुपालकों के लिये एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण कदम उठाया है। और वो है डेरी उद्योग का। पशुपालक को दूध अगर Assure कीमत पर बिकेगा तो पशुपालन करेगा अच्छा पशुपालन करेगा। आज वो पशुपालन करता है या तो परिवार की दूध की जरूरत पूरी करता है या तो गांव में अड़ोस पड़ोस में थोड़ा दे देता है। लेकिन इसका Commercial Model उसके दिमाग में आता नहीं है। जब डेरी बन जाती है, तब गरीब किसान गरीब पशुपालक को भी एक पशुपालन उसके द्वारा दूध उत्पादन और दूध उत्पादन का Valuation कर के मार्केट एक बहु बड़ी चेन बन जाती है। मैं गुजरात की धरती से आया हूं। अमूल भी वहां का जाना जाता है। हिन्दुस्तान का कोई कोना ऐसा नहीं होगा, जहां अमूल न पहुंचा हो। ये अमूल है क्या आखिर किसी जमाने में सरदार वलभ भाई पटेल ने उनके मार्गदर्शन में एक छोटी सी मंडली बनी। कुछ किसानों ने इक्ठ्ठा आकर के दूध इक्ठ्ठा कर कर के काम शुरू किया। और देखते ही देखते बढ़ता गया बढ़ता गया और आज अमूल का नाम विश्व भर में है। आज रघुवर दास जी इस संथाल के गरीब किसानों के लिये पशुपालकों के लिये उस डेरी का शिलान्यास कर रहे हैं। जो डेरी आने वाले दिनों में लाखों परिवारों के पशुओं का दूध उसका प्रोसेसिंग, उसकी मार्केटिंग, उसकी ब्रांडिंग और पशुपालन को उसके दूध की सही कीमत मिले। रोजाना कीमत मिले। उस दिशा में काम करने का फैसला कर रहे हैं। मेरी उनको बहुत बहुत शुभकामना है। डेरी के क्षेत्र में गुजरात के डेरी उद्योग को काफी

अनुभव है। अगर झारखंड को कोई गुजरात से मदद की जरूरत होगी तो मैं जरूर उन लोगों को कहूंगा कि वे भी आपकी मदद करें और यहां के पशु पालक के लिये यहां के किसानों के लिये एक बहुत बड़ा काम हो जाए। उनके जीवन में एक नया क्योंकि जमीन कभी कभी कम होती है। लेकिन अगर पशुपालन अच्छा हो तो उसको एक ताकत मिल जाती है। और मैं मुख्यमंत्री जी से और भी कहूंगा कि जैसे उन्होंने डेरी के काम के लिये बीड़ा उठाया है, वे डेरी के साथ - साथ शहद का भी काम कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन के द्वारा जो पशुपालन दूध उत्पादन करता है, वो शहद भी उत्पादन कर सकता है। और डेरी के मार्ग से शहद भी इकट्ठा किया जा सकता है। और शहद का भी ग्लोबर मार्केट बन सकता है। हमारा किसान दूध से भी कमा सकता है, शहद से भी कमा सकता है और खेत की पैदावार से भी कमा सकता है। बारह महीना उसकी कमाई का उसमें गारंटी बन जाता है। मुझे विश्वास है कि रघुवार दास जी ने बड़ी दीर्घ दृष्टि के साथ आज भले वो छोटा लगे काम। सरदार वलभ भाई ने जब प्रेरणा लेकर के काम करवाया था बहुत छोटा लगता था। लेकिन वो काम आज दुनिया में मशहूर हो गया। रघुवर दास जी ने जो छोटा सा काम का आरम्भ किया है। उसकी भावि ताकत कितनी है वो मैं बिल्कुल अपनी आंखों के सामने देख पा रहा हूं। और पूरे सांथाल इलाके का भाग्य बदलने में हर पशुपालन किसान का भाग्य बदलने में ये काम आयेगी ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

भाइयो बहनों 2015, 2 अक्टूबर मुझे जस्टिस डीएन पटेल जी के एक निमंत्रण पर खूटी आने का सौभाग्य मिला। और खूटी का न्यायालय खूटी की कोर्ट वो देश की पहली सोलार कोर्ट बनी। सूर्य शक्ति से प्राप्त बिजली से उस न्यायालय का पूरा कारोबार चल रहा है। आज मुझे खुशी है कि फिर से एक बार साहबगंज में एक सरकारी व्यवस्था का परिसर और दूसरा न्यायालय दोनों पूर्ण रूप से सूर्य शक्ति से चलने वाले इकाइयां बन रही हैं। मैं इसके लिये जस्टिस डीएन पटेल और उनकी पूरी टीम को बधाई देता हूं और झारखंड सरकार को भी बधाई देता हूं। उन्होंने सूर्य शक्ति को बढ़ावा दिया है। roof Top Solar Energy का काम जो उन्होंने उठाया है। करीब करीब 4500 किलो वाट सूर्य ऊर्जा उन्होंने Install करने का काम सफलतापूर्वक पूरा कर दिया है। अगर हमें हमारे जंगल बचाने हैं, हमारी भावी पीढ़ी को कुछ देकर जाना है तो हमें हमारे पर्यावरण की रक्षा करनी होगी है। और ऊर्जा का कोई उत्तम स्रोत है जो हमें सहज उपलब्ध है वो है Solar Energy सूर्य शक्ति। और सूर्य शक्ति कि दिशा में आज भारत एक तेज गति से आगे बढ़ रहा है। भारत ने सपना देखा है। 175 Giga Watt Renewable Energy का उसमें 100 Giga Watt Solar Energy का हिन्दुस्तान के हर कोने में सूर्य शक्ति से ऊर्जा मिले। इसको बल दिया जा रहा है। आज हमें जो विदेशों से Energy खरीदनी पड़ती है। उसमें बहुत बड़ी बचत होगी। वो पैसे गरीब के काम आएंगे। आज पर्यावरण को जो नुकसान होता है। उसमें से हमें राहत मिलेगी। और सूर्य शक्ति की दिशा में एक जमाना था सूर्य शक्ति कि एक यूनिट ऊर्जा की कीमत 19 रुपया लगती थी। लेकिन भारत ने जिस प्रकार से अभियान चलाया आज स्थिति आ गयी है कि कोयले से भी सूर्य शक्ति की ऊर्जा सस्ती मिलने लग गई है। अभी अभी जो टेंडर निकला सिर्फ तीन रुपये का निकला 2 रुपया 96 पैसे। यानी एक प्रकार से एक बार Investment Cost लग गई बाद में बिना कोई खर्च हम बिजली प्राप्त कर सकते हैं।

और भाइयों बहनों 21वीं सदी में किसी भी नागरिक को अंधकार में जीने के लिये मजबूर नहीं किया जा सकता। कई परिवार हैं जो आज भी घरों में बिजली का कनेक्शन नहीं ले रहे हैं। उनको लगता है क्या जरूरत है। समझा बुझाने के बाद लेते हैं। सरकार मुफ्त में कनेक्शन देती है तो भी कभी कभी लोग खुद उदासीनता बरत देते हैं। ऐसे परिवारों को बच्चों की बढ़ाई के लिये भारत सरकार ने बच्चे की बढ़ाई के लिये छोटा सा बैटरी सोलार से चलने वाली छोटा बल्ब ऐसा टेबल पर लगा दे जमीन पर लगाकर के पढ़ना चाहता है तो उससे पढ़ सकता है ये लाखों ऐसे गरीब परिवारों को देने की दिशा में एक बहुत बड़ा बीड़ा उठाया। हमारा किसान जहां जमीन से पानी निकाल कर के खेती करता है। उसको बिजली महंगी पड़ती है। अब सोलार पम्प हम लगा रहे हैं। किसान सोलार पम्प से जमीन से पानी निकालेगा। सूर्य से बैटरी भी चार्ज होती रहेगी पानी भी निकलता रहेगा। खेत भी हरा भरा रहेगा। दो फसल लेता है तीन फसल लेने लग जाएगा। उसकी आय जो दोगुना करनी है उसमें ये सोलार पम्प भी काम आएगा। एक बहुत बड़ा रिवोल्यूशन का काम सूर्य ऊर्जा के क्षेत्र में भारत सरकार के द्वारा चल रहा है। झारखंड सरकार ने भी कंधे से कंधा मिलाकर के भारत सरकार के साथ चलने का बीड़ा उठाया है। Solar Energy को बल दे रहे हैं। roof Top Solar Energy के Project को आगे बढ़ा रहे हैं। मैं इसके लिये भी झारखंड को बधाई देता हूं। और मैं देशवासियों से भी कहूंगा कि हम ऊर्जा के क्षेत्र में संवेदनशील बनें। हम ऊर्जा के महत्वमय को समझें। और भावि जीवन के रक्षा को भी समझें। अभी पूरे देश में एलईडी बल्ब का एक अभियान चल रहा है। अगर कोई सरकार अपने बजट में यह कह दे कि हम दस हजार करोड़ रुपये लगाते हैं और ये दस हजार करोड़ रुपया लोगों को बांट देंगे, तो वाह वाई हो जाएगी तालियां बजेगी अखबार में हैडलाइन छपेगी। वाह मोदी कितना अच्छा प्रधानमंत्री है। दस हजार करोड़ रुपया लोगों को बांटने वाला है। भाइयों बहनों आप सबके सहयोग से हमने एक ऐसा काम किया है जो दस हजार करोड़ से भी ज्यादा आपकी जेब में पहुंचा रहा है। हिन्दुस्तान के नागरिकों की जेब में पहुंचा रहा है। क्या किया एलईडी बल्ब लगाईए बिजली बचाइए। बिजली का बिल कम कीजिये। और आपका किसी का साल का ढाई सौ बचेगा किसी का साल का हजार बचेगा किसी का साल का 2 हजार बचेगा वो गरीब बच्चों को दूध पिलाने के काम आ जाएगा। गरीब बच्चों को कुछ शिक्षा दीक्षा देने के काम आ जाएगा। हम जब सरकार में आए तब एलईडी बल्ब साढ़े तीन सौ चार सौ रुपये में बिकता था। आज वो एलईडी बल्ब पचास साठ रुपये में बिकने लग गया। और देश में सरकार के द्वारा 22 करोड़ बल्ब

वितरित कर चुके हैं। और लोगों ने अपने आप किया है दोनों मिलाकर के करीब करीब 50 करोड़ नए एलईडी बल्ब लोगों के घरों में लग चुके हैं। और इससे जो बिजली की बचत हुई है। वो करीब करीब 11 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा है। ये 11 हजार करोड़ रुपया जो बिजली का अवप्रास करने वाले लोग हैं। उनकी जेब में बचने वाला है। कितना बड़ा रिवोल्यूशन आता है जब हम छोटे से बदलाव से काम कर सकते हैं, तो बिजली बचाना दूसरी तरफ सूर्य ऊर्जा का उपयोग करना एक प्रकार से सस्ती से सस्ती बिजली कि दिशा में जाना तो एक 360 डिग्री जिसको कहे, वैसे पूरा ऊर्जा का एक पूरा नेटवर्क बनाकर के काम आज सरकार कर रही है। और उसका भी आपको लाभ मिलेगा।

मैं आज मेरे सामने यहां नौजवान देख रहा हूं। उनके सर पर टोपी है टोपी पर पीले फूल लगे हुए हैं। बड़े शानदार दिख रहे हैं। ये हमारे आदिम जाति के बच्चे हैं। ये पहाड़िया समाज के बच्चे हैं। उनके परिवार में अभी तक सरकार के अंदर काम करने का सौभाग्य नहीं मिला है। सब लोग ताली बजाकर के इनका अभिनन्दन कीजिये। मेरथोडारजी के नये इनिशिएटिव के लिये और इनके मौलिक चिंतन के लिये बधाई देता हूं कि उन्होंने इन पहाड़िया बच्चों को सिलेक्ट किया। सरकारी नियमों में बदलाव किया। उनकी ऊंचाई कम थी तो उनको भी कॉम्परोमाइज किया। उनकी पढ़ाई कम थी उस पर भी कॉम्परोमाइज किया। और उनको ट्रेनिंग देकर के आपके सुरक्षा के काम पर लगाया। वो एक प्रकार से सरकार बन गए हैं। भाइयों बहनों हिन्दुस्तान के आखिरी छोर पर बैठे हुए जो लोगों की गिनती होती है इसमें ये मेरे पहाड़िया बेटे हैं। ये पहाड़िया बेटियां हैं आज वो मुख्य धारा में आ रही हैं। विकास की मुख्य धारा में जुड़ रही हैं। और मैं देख रहा था वो बेटियां जब अपना सर्टिफिकेट लेने के लिये आई थीं। उनका आने का तरीका उनका सल्यूट करने का तरीका उनका अपना प्रेस वालों को जवाब देने का तरीका उनका कॉन्फिडेंस देखकर के मुझे लग रहा है कि ये हमारी शान-ओ-शौकत बन जाएंगी। ये पहाड़िया बिरादरी के मेरे साथी सारे मेरे नौजवान ये झारखंड के भाग्य को सुरक्षा देने वाले एक नई ताकत बन जाएंगे फिर एक बार इनके लिये तालियां बजाकर के इनके लिये गौरव कीजिए। रघुवर दास जी का भी अभिनन्दन कीजिये उन्होंने इतना बड़ा महत्वपूर्ण काम किया है। समाज के आखिरी छोर पर जो आदिवासियों से भी गरीब है। आदिवासियों से भी पछाद है। चारचार पीढ़ी तक जिसको स्कूल में जाने का अवसर नहीं मिला है। ऐसे सारे बच्चे आज हमारे सामने हैं। इससे कितना आनन्द होता है। आज जीवन धन्य हो गया। इन बालकों को देखते हुए और यही मेरे भारत का नीव बनने वाली है मेरे भाइयों बहनों। यही मेरा न्यू इंडिया है। देश का गरीब से गरीब भारत की विकास यात्रा में जुड़ जाएगा इसका ये उदाहरण है।

भाइयों बहनों कुछ महिलाएं आज मंच पर आई थीं। आपको दूर से दिखता था कि नहीं दिखता था मुझे मालूम नहीं झारखंड सरकार कि तरफ से मैं उनको मोबाइल फोन दे रहा था। और मैं देख रहा था कि वे मुझे मेरे सब सवाल के सही जवाब दे रही थीं। उनको मालूम था कि एप क्या होती है बीम एप क्या है। एप कैसे डाउनलोड होती है। इसके आर्थिक कारोबार इस मोबाइल फोन से कैसे उनको सब मालूम था। मुझे इतनी खुशी हुई। जो संसद में हमारे साथी हैं वो कभी कभी कहते हैं कि भारत के गरीब को मोबाइल फोन कहाँ आएगा कहाँ सीखेगा, कहाँ चलाएगा। मैं जरूर संसद में मेरे साथियों को जब मिलूंगा तब कहूंगा कि मैं हिन्दुस्तान में अति पिछड़ा इलाका सांथाल में गया था और वहां कि मेरी आदिवासी बहनें मोबाइल फोन का क्या उपयोग हो सकता है वो मुझे सिखा रही थीं। ये रिवोल्यूशन है। ये डिजिटल इंडिया का रिवोल्यूशन है। ये लेस कैस सोसाएटी का रिवोल्यूशन है। और नोटबंदी के बाद हर किसी को लग रहा है कि अब हम अपने मोबाइल फोन से अपने मोबाइल फोन को ही अपना बैंक बना सकते हैं। छोटे छोटे सखी मंडल उनका कारोबार उनके बीच में एक मुखिया बहन उसके हाथ में मोबाइल फोन हो उसका मोबाइल फोन बैंक से जुड़ा हुआ, मोबाइल फोन उसके ग्राहकों से जुड़ा हुआ एक पूरा नया रिवोल्यूशन इस पहल से आ रहा है। मैं इस सांथाल इलाके की सखी मंडल कि बहनों को बधाई देता हूँ। मेरा बहुत पुराना एक अनुभव है। वो अनुभव आज भी मुझे प्रेरणा देता है। मैं जब गुजरात में मुख्यमंत्री था। तो दक्षिणी गुजरात में आदिवासी बस्ती के बीच में एक कपरारा करके सुदूर इलाका है। तब मैं मुख्यमंत्री था लेकिन वहां जाना होता नहीं था। क्योंकि उस इलाके में ऐसा कोई अवसर नहीं आता था सभा के लिये दो मैदान भी नहीं था पूरा जंगल ही जंगल था। और एक घर यहां तो दूसरा घर दो मील दूर तो तीसरा घर तीन मील दूर। मैंने तय किया नहीं मुझे जाना है। वहां हमने डेरी का छोटा सा काम शुरू किया। एक चिली सेंटर बनाया। जो दूध ठंडा दूध ठंडा करने की व्यवस्था होती है। डेरी में लेजाने से पहले थोड़ी देर जहां दो चार घंटे दूध रखना हो तो वहां दूध रख देते हैं। छोटा सा प्रोजेक्ट होता है। 25 -50 लाख में तैयार हो जाता है। मैंने कहा मैं उस प्रोजेक्ट के लिये आऊंगा। तो हमारे सब लोग नाराज हो गये। साहब इतनी दूर पचास लाख के कार्यक्रम में, मैंने कहा मैं जाऊंगा। मुझे जाना है। मैं गया अब वो जगह ऐसी थी जन सभा तो हो नहीं सकती थी। जनसभा तीन चार किलोमीटर दूर है स्कूल के मैदान में थी। लेकिन दूध भरने के लिये जो महिलाएं आती हैं। वो अपने बर्तन में दूध लेकर के आई हुई थीं। वो चिली सेंटर में आई हुई थीं दूध भरने का कार्यक्रम हो गया। और बाद में मैंने देखा उन महिलाओं ने अपना जो बर्तन था बाजू में रख दिया था और मोबाइल फोन पर मेरी फोटो ले रही थी। करीब करीब तीस महिलाएं थीं। हरेक के हाथ में मोबाइल था। और वो भी फोटो निकालने वाला मोबाइल था। वो फोटो निकाल रही थीं। मैं उनके पास चला गया मेरे लिये बड़ा अजूबा था। इतने बैकवर्ड इलाके में आदिवासी महिलाएं दूध भरने के लिये आई हैं गांव में किसान हैं। मैंने जाकर के पूछा आप क्या कर रही हैं। वो बोली आपका फोटो निकाल रहे हैं मैं बोला फोटो निकाल कर के क्या करोगी। तो बोली इसको हम डाउनलोड करवाएंगे। मैं हैरान था उनके मुंह से डाउनलोड शब्द सुनकर कभी कभी बड़े

बड़े लोगों को भी पता नहीं होता है कि भारत के सामान्य मानवी में विज्ञान टेक्नॉलॉजी आधुनिकता पकड़ने की ताकत कितनी बड़ी होती है। और मैंने आज दोबारा एक बार इन मेरी आदिवासी बहनों के पास देखा उन्होंने कहा हम डिजिटल रिवोल्यूशन की धारा बन जाएंगे। हम इस काम को करके रहेंगे। मैं इन सभी सखी मंडलों को और मोबाइल फोन से कनेक्टिविटी के द्वारा एक डिजिटल क्रांति के सैनिक बनाने का जो अभियान चला है इसके लिये मैं झारखंड सरकार को भी बहुत बहुत बधाई देता हूँ। युग बदल चुका है बदले युग में हमें कैसे आगे बढ़ना चाहिए उस दिशा में हमें जाना होगा।

भाइयों बहनों हिन्दुस्तान का गरीब सम्मान के साथ जीना चाहता है। हिन्दुस्तान का आदिवासी दलित पीड़ित शोषित सम्मान के साथ जिन्दगी जीना चाहता है। वो किसी की कृपा पर चीजें ढुंढता नहीं है। उसका नौजवान कह रहा है कि मुझे अवसर दीजिये मैं अपनी भाग्य रेखाएं खुद लिख दूंगा ये ताकत मेरे गरीब आदिवासी के बच्चों में होती है दलित पीड़ित शोषित के बच्चों में होती है। और मेरी पूरी शक्ति इन बच्चों के पीछे में लगा रहा हूँ। इन नौजवानों के पीछे लगा रहा हूँ। ताकि वही भारत का भाग्य बदलने के लिये एक नई ताकत के रूप में जुड़ जाएंगे। एक नई ताकत के रूप में देश का भाग्य बदलने में जुड़ जाएंगे। और हिन्दुस्तान के भाग्य बदलने में वो ताकत के रूप में काम आएंगे।

भाइयों बहनों भ्रष्टाचार ने काले धन ने देश को तबाह कर दिया दीमक की तरह एक जगह पर बंद करो तो दूसरी जगह पर निकल आता है दूसरी जगह सफाई करो तो तीसरी जगह पर निकल आता है लेकिन आप सबके आशीर्वाद से भ्रष्टाचार और काले धन के खिलाफ लड़ाई जारी रहेगी। जिन्होंने गरीबों को लूटा है उन्हें गरीबों को लौटाना ही पड़ेगा। तब तक मैं चैन से बैठने वाला नहीं हूँ। एक के बाद एक कदम उठाता रहूंगा। और इसलिये भाइयों बहनों आप जो मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं। वे ईमानदारी की लड़ाई के लिये आशीर्वाद है। नोटबंदी के बाद मुझे कुछ नौजवानों से बातचीत का अवसर मिला पढ़े लिखे थे धनी परिवार के थे। मैं सोच रहा था कि नोटबंदी के कारण बड़े परेशान होंगे गुस्से में होंगे नाराजगी व्यक्त करेंगे लेकिन उन्होंने मुझे एक बात बताई वो बड़ी इन्स्टिंग है। उन्होंने कहा कि साहब हमारे परिवार में रोज झगड़ा होता है मैंने कहा क्या झगड़ा होता है। बोले हमारे पिता जी से कहते हैं कि पिताजी आपके जमाने जो सरकार थी नियम थे टैक्स इतने ज्यादा था आपको चोरी करनी पड़ी होगी की होगी। लेकिन अब देश में ईमानदारी का युग आया है। और हम जो पीढ़ी के लोग हैं बेइमानी का कारोबार करना नहीं चाहते हम ईमानदारी से जीना चाहते हैं और ईमानदारी से आगे बढ़ना चाहते हैं। मेरे देश की युवा पीढ़ी में ईमानदारी का युग शुरू हुआ है। ईमानदारी से जीने की इच्छा पैदा हुई है। यही मेरे लिये शुभ संकेत है मेरे भाइयों देश के लिये शुभ संकेत है। अगर देश का युवा एक ओर मन बना ले कि मेरे पूर्वजों मेरे मात पिता को मेरे पिछले वालों को जो कुछ करना पड़ा अब हमें नहीं करना है।

भाइयों बहनों बिना चोरी किये बिना लूट किये भी सुख चैन की जिन्दगी जी सकते हैं। संतोष की नींद ले सकते हैं। और इसलिये हम एक ईमानदारी कि युग की ओर रेशो ले जाना है। 2022 भारत की आजादी के 75 साल होने वाले हैं। भाइयों बहनों ये आजादी के 75 साल ये सिर्फ दीवार पर टंगे हुए कैलेंडर का विषय नहीं हो सकता। ये आजादी के 75 साल कैलेंडर के एक बाद एक डेट बदल जाए 2022 आजाए वो यात्रा नहीं है। आजादी के 75 साल का मतलब होता है देश की आजादी के लिये जान की बाजी लगाने वाले इसी धरती के बिसरा मुंडा से लेकर के अनगिनत लोग थे भाई। क्यों अपने आपको खपा दिया था। आजाद भारत के सपने देखे थे उन्होंने और इसलिये उन्होंने अपने आपको खपा दिया था। क्या उनके सपनों को पूरा करने के लिए वे तो हमारे लिये फांसी तक पर चढ़ गए। वे तो हमारे लिए जिन्दगी जेलों में काट गए। वे तो हमारे लिये परिवारों को तबाह करके मिट गए। क्या हम उनके सपनों के लिये पांच साल में ज्यादा नहीं कह रहा हूँ दोस्तों पांच साल 2022 तक जो भी करेंगे देश के लिये करेंगे। कुछ न कुछ करेंगे तो देश के लिये करेंगे। और देश की भलाई के लिये करेंगे। ये सपना सवा सौ करोड़ देशवासियों का हो। सवा सौ करोड़ देशवासियों का एक एक संकल्प हो कि आजादी के 75 साल होने में पांच साल बाकी है। पांच साल में मैं समाज को देश को ये देकर करे रहूंगा। अगर एक हिन्दुस्तानी एक संकल्प लेकर के एक कदम आगे बढ़ता है 2022 आते आते हिन्दुस्तान सवा सौ करोड़ कदम आगे बढ़ जाएगा दोस्तों ये ताकत है हमारी। और इसलिये समय की मांग है कि हम अभी से सरकार में हैं तो सरकार में विभाग में बैठे तो विभाग में नगर पालिका में बैठे हैं तो नगरपालिका, नगर पंचायत तो नगर पंचायत, स्कूल है तो स्कूल में गांव है तो गांव में मोहल्ला है तो मोहल्ले में जाति है तो जाति में परिवार में हो तो परिवार में कोई न कोई संकल्प करे कि 2022 तक यहां पहुंच कर ही रहना है। कर के रहेंगे। अगर एक बार हर हिन्दुस्तानी का ये सपना बन जाए तो 2022 में आजादी के लिये जान मिटाने वाले महापुरुषों को हम ऐसा हिन्दुस्तान दे सकते हैं कि उनको एक बार तो संतोष होगा कि अब मेरा देश सही दिशा में चल पड़ा, जिस देश के लिये मैंने जिन्दगी खपा दी। वो मेरा देश आगे बढ़ चला वो सपने को लेकर के आगे चलना है। इसी एक कामना के साथ मैं फिर एक बार झारखंड की धरती को नमन करता हूँ। भगवान बिरसा मुंडा की धरती को नमन करता हूँ। मैं इन पहाड़िया नौजवानों को बहुत बहुत बधाई देता हूँ। मैं झारखंड की जनता को शुभकामनाएं देता हूँ। मां गंगा को प्रणाम करते हुए ये जो नया हमने अभियान छेड़ा है। मां गंगा के आशीर्वाद बने रहेंगे। हम एक नई इस पूरे भू भाग में नई आर्थिक क्रांति मां गंगा के भरोसे लाएंगे इसी एक अपेक्षा के साथ आप सबका बहुत बहुत धन्यवाद बहुत बहुत शुभकामनाएं।

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार/हिमांशु सिंह/ शौकत अली

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

22-मई-2017 20:40 IST

गांधीधाम, गुजरात में कंडला बंदरगाह के विभिन्न परियोजनाओं के फाउंडेशन समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

उपस्थित भाइयों और बहनों,

कंडला एक प्रकार से लघु भारत है, Mini-India और आज Airport से कंडला Port तक आने के रास्ते भर आप सबने जिस प्रकार से स्वागत सम्मान किया, एक प्रकार से आपने सड़क के दोनों किनारों पर आबे-हू भारत खड़ा कर दिया था। मैं आपके इस प्यार के इस स्वागत सम्मान के लिये आपका बहुत बहुत आभारी हूँ।

ये शब्दों में कहने की जरूरत नहीं है कि कच्छ के साथ एक मुख्यमंत्री के कार्यकाल के दरमियान मेरा लगाव कैसा था, बार-बार आपके बीच आना होता था। कच्छ की धरती में एक ताकत है। 200 साल पहले भी अगर कोई कच्छी दुनिया के किसी छोर पर गया होगा परिवार, चौथी पांचवी पीढ़ी होगी, लेकिन अगर बीमान हो जाए तो उसका मन करता है की कच्छ चले जाएं, तबियत ठीक हो जाएगी। हम कच्छ के लोग पानीदार तो हैं, पर बिना पानी के जीवन गुजारते रहे। पानी का महात्म्य क्या होता है। ये कच्छ के लोग भालि-भांती समझते हैं। विराट समंदर, मरुभूमि, पहाड़, गौरवपूर्ण इतिहास, 5000 साल पुरानी मावन संस्कृति के सबूत, कच्छ के पास क्या कुछ नहीं है! न सिर्फ हिन्दुस्तान को दुनिया को देने की ताकत इस धरती में है और दुनिया को magnet की तरह आकर्षित करने का सामर्थ्य इस धरती में है।

अभी नितिन जी बता रहे थे कि आज जो वैश्विक अर्थव्यवस्था का रूप है, विश्व बाजार का महात्म्य जिस प्रकार से बढ़ रहा है उस Competition अगर भारत को हमें आगे बढ़ाना है, तो इस वैश्विक अर्थव्यवस्था का लाभ उठाना है। विश्व व्यापार में भारत को अपनी जगह पक्की करनी है तो भारत के पास उत्तम से उत्तम व्यवस्था वाले बंदरों (बंदरगाहों) का होना बहुत जरूरी है। ये कंडला Port और आज जो चीजें वहां निर्माण हो रही हैं, एक प्रकार से कोई सोच सकता है क्या इतने कम समय में आज कंडला Port पूरे एशिया में प्रमुख बंदरों (बंदरगाहों) में उसने अपनी जगह बना ली।

पिछले एक दो साल में चाहे Liquid Cargo हो, चाहे Dry Cargo हो, Port Sector में काम करने वाले हर कोई समझते हैं कि इसका जो Growth है वो Port Sector के अर्थनीति के जानने वाले लोगों के लिये बड़ा ही Surprise कर रहा है। ये Achievement किया है। और धीरे - धीरे Port पर काम करने वाले लोगों को भी लगने लगा है। Union चलते हैं चलते रहेंगे। लेकिन मिलजुल कर के अगर हम इस Port की ताकत को बढ़ाते हैं। एक ताकत है Infrastructure की दूसरी ताकत है Efficiency की, Transparency की और उससे इतना बड़ा परिणाम देश को मिल सकता है, जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते।

अभी नितिन जी बता रहे थे कि ईरान के साथ चाहबहार Port उसका एक निर्णय हम लोगों ने किया है। उस पोर्ट का सीधा संबंध कंडला के Port के साथ आने वाला है। चाहबहार Port और कंडला Port इन दोनों का जुड़ना, इसका मतलब ये होता है कि विश्व व्यापार में अंगद की तरह कंडला अपना पैर जमाएगा, इतना बड़ा परिवर्तन आने वाला है। आज कंडला Port को Mechanise करने की दिशा में कुछ कदम उठाए जा रहे हैं। Capacity Building के लिये 14 और 16 वर्ग के विस्तार और विकास के लिये योजना बन रही है। और बदलते हुए युग में Port City का Concept, Development का एक Economic Activity का एक व्यवस्था उस दिशा में भी योजना बन रही है। Transportation को बल मिले और इसलिये उस प्रकार के मार्ग की रचना जो Traffic को Smooth करे हिन्दुस्तान के कोने कोने में हमारा सामान तेजी से पहुंचे। जिस प्रकार से समंदर में Turn Around Time कोई जहाज आए खाली हो या भरे और कितने दिन में आ के चला जाए उसमें जितना समय कम लगता है उतनी Efficiency की गणना वैश्विक स्तर पर होती है। आज भारत में उस Turn Around Time कम करने के लिये हमारे नितिन जी के नेतृत्व में अनेक Initiatives लिये गए। इस Turn Around Time को कम

करने में एक वर्गता होती है- पोर्ट से बाहर निकलने के बाद आपके सारे ट्रक्स कितनी तेजी से आगे बढ़ जाते हैं। अगर आगे बोटल लेट होगा तो Turn Around Time के लिये पोर्ट में कितनी ही टैक्नॉलॉजी हम लाएं रुकावट बनी रहेगी। और इसलिये आपने देखा होगा कि आज कंडला पूरे गुजरात के हिसाब से देखें तो भी एक कोने में एक छोटा सा नगर। देश के हिसाब से तो ध्यान भी नहीं जाए। लेकिन आज कंडला में करीब करीब 1000 करोड़ रुपयों के Investment के Project आ रहे हैं। 1000 करोड़ कोई सामान्य रकम नहीं है। हम कल्पना कर सकते हैं कि कितनी तेजी से आगे बढ़ें हैं।

अभी वो बता रहे थे कि रोड का काम है हम दो साल में टारगेट किया है। मैं नितिन जी को बता रहा था कि हिन्दुस्तान में रोड के सैक्टर में नितिन जी ने जो गति लाई है, कई वर्षों तक हिन्दुस्तान ने देखी नहीं। मैंने उनको कहा कि आपकी जो विशेषता है, आपकी जो क्षमता है उसका लाभ गुजरात को भी तो मिलना चाहिए। उन्होंने मुझे कहा कि भाई क्या करना है? ये रोड बनाने का काम 24 महीने नहीं 18 महीने में पूरा करके दिखाओ। और मुझे विश्वास है कि नितिन जी को इशारों इशारों में कह दे तो उस काम को पूरा कर देंगे। मुझे विश्वास है हो जाएगा।

आज यहां बाबा साहब आम्बेडकर के नाम से एक Convention Centre भी बन रहा है। विशाल भू भाग में बन रहा है। यहां के लोगों की आवश्यकता के अनुसार बन रहा है। लेकिन मैंने उसका जो plan देखा तो मुझे लगता है शायद रवि भाई ने डरते - डरते बनाया है। उनको लगता है पता नहीं इतने पैसे कहां से आएंगे। कैसे होगा। तो मैंने नितिन जी को कहा है कि अच्छा छोटा मत करो, उसे कुछ नये सिरे से सोचो उन्होंने कहा कि मुझे थोड़ा समय दीजिये मैं सोचकर के बताता हूं। ये Convention Centre भी क्योंकि जिस प्रकार से कच्छ का Development हो रहा है, आज हिन्दुस्तान में कोई एक district तेज गति से आगे बढ़ रहा है तो उस district का नाम कच्छ है। और कोई कल्पना कर सकता है 1998 में भंयकर Cyclone ने हमको तबाह कर दिया था। 2001 भूकम्प ने हमें जमीनदोड़ कर दिया था। लेकिन ये district की ताकत देखिए, यहां के लोगों की खुमारी देखिए आज कच्छ फिर से चल पड़ा। और कांडला ये न सिर्फ गुजरात की अर्थव्यवस्था का केन्द्र बिन्दू बन सकता है, यातायात की दुनिया में कंडला पोर्ट हिन्दुस्तान की अर्थव्यवस्था में भी एक अहम भूमिका निभा सके, इस परिस्थिति में काम कर सकता है। और हम भी उस दिशा में उसे आगे बढ़ाना चाहते हैं। भारत की सामुद्रिक व्यापार विरासत हजारों साल पुरानी है। लोथल में 5000 साल पहले सामुद्रिक व्यापार का इतना बड़ा केन्द्र था। उसके बगल में बल्लभी University थी। उस बल्लभी University में 80 से ज्यादा देशों के बच्चे पढ़ते थे। और लोथल का जो पोर्ट था, बंदर था कहते हैं कि 84 देशों के झंडे वहां हमेशा दिखाई देते थे। हजारों साल पहले! इस देश में दरियाई जहाज बनाने का काम कच्छ में हमारी पूर्वजों की विरासत रही है, हम दुनिया को जहाज देते थे यहाँ से। ये ताकत रही थी हमारी। इस सामर्थ्य को फिर से जीवित किया जा सकता है।

आज कंडला पोर्ट में इमारती लकड़ी बहुत बड़ी मात्रा में आती है। और हमारे कच्छी लोग हिन्दुस्तान के कोने कोने में लकड़ी के व्यापार में लगे हुए हैं। ये इमारती लकड़ी का Value addition कच्छ की धरती पर हो सकता है। दुनिया से लकड़ी आ जाये उसमें Art Work हो Man Made कला उसपर लगे फिर दुनिया में वापस जाये घर बने, बिल्डिंग बने, मकान बने, मंदिर बने, पूजा घर बने दुनिया को बहुत बड़ी भेंट सौगात यहां से Develop की जा सकती है। नमक का व्यापार समुद्री मार्ग से जितना ज्यादा हम कर सके उतना खर्च कम आएगा। तटीय जल परिवहन साढ़े सात हजार किलोमीटर समुद्री तट हो, तो फिर हमें रोड और रेल से हमारा सामान क्यों लेजाना चाहिए। क्यों न समुद्री तट से एक जहाज से हिन्दुस्तान में ही कलकत्ता सामान भेजना होगा। तो यहीं से समुद्र के मार्ग से कलकत्ता क्यों न जाए। पूरे हिन्दुस्तान को चीर कर के जाने की जरूरत क्या है। ये पूरा बदलाव, व्यवस्था में परिवर्तन लाने की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। जिसका लाभ आने वाले दिनों में मिलने वाला है।

हमारे नितिन जी का एक Dream है, लोथल में भारत की जो महान ताकत है उसका विश्व को परिचय हो। इस प्रकार का एक Museum कैसे बने। विश्व व्यापार के दृष्टि से American University का काम महत्वपूर्ण है Human Resource Development का काम महत्वपूर्ण है। और अभी मुख्यमंत्री जी बता रहे थे, उन्होंने Maritime University का अभी वहां एसेम्बली के अंदर बिल भी पास कर लिया है। मेरी उनको शुभकामनाएं हैं। Human Resource Development का ये काम और न सिर्फ गुजरात को समुद्री तट का लाभ होगा और हिन्दुस्तान के व्यापार के लिये भी एक ताकत के रूप में उभरेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

भाइयों बहनों, 2022 भारत की आजादी के 75 साल हो रहे हैं। मैं आज जब कांडला की धरती पर आया हूं, कंडला के लोगों

को कच्छ के लोगों को गुजरात के लोगों देश के लोगों को बार बार यह कहना चाहूंगा के 2022 आजादी के 75 साल हो रहे हैं, हम देश के उन वीर सपूतों को याद करें उन महापुरुषों को याद करें जिन्होंने आजादी के लिये अपनी जिन्दगी खपा दी। कई महापुरुषों ने जेलों में खपा दी कई महापुरुषों ने फांसी के तख्त पर चढ़ गए। कई महापुरुषों ने चार चार पीढ़ी तबाह कर दी, ये देश आजाद हो इसलिये। उस आजादी के 75 साल 2022 में हम कैसे मनाएंगे? एक नागरिक के नाते हम भी तो संकल्प करें कि हमें आजादी के जंग में लड़ने का मौका नहीं मिला था लेकिन भारत को दुनिया में सिरमौर बनाने में इस विकास कि यात्रा में शरीक होने का हमें सौभाग्य मिला है, हम भी कुछ सकारात्मक करेंगे। हम कुछ न कुछ ऐसा करेंगे नागरिक के नाते 2022 में देश को नई ऊंचाई पर लेजाने में मेरा योगदान माना जाए, मेरा संतोष हो। संस्था हो तो वो भी करे, केन्द्र हो तो वो भी करे, नगरपालिका हो तो वो भी करे, पंचायत हो वो भी करे, राज्य सरकार है तो वो भी करे, हर कोई अपने आप को संकल्पबद्ध करे। और अभी पांच साल हमारे पास है, पांच साल में कुछ कर के दिखाए। और तब जा कर के 2022 को मनाएं इस संकल्प के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं जैसा हमने सोचा है।

इस देश के गरीबों की जिन्दगी में बदलाव लाना। चाहे गैस के चूल्हे का कनेक्शन हो, चाहे गरीब की झोपड़ी में बिजली पहुंचाने का प्रयास हो। 2022 तक हमारा सपना है, हिन्दुस्तान के गरीब से गरीब परिवार को भी रहने के लिये अपना खुद का घर हो। और घर में बिजली भी हो, घर में पानी भी हो और घर में शौचालय भी हो, ऐसा घर उसको मिले ये बहुत बड़ा सपना लेकर के काम चलाना है।

ये वर्ष पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की शताब्दि का वर्ष है। भारत के गरीब से गरीब व्यक्ति अंतिम छोर पर बैठे हुए व्यक्ति का कल्याण कैसे हो। इस विचार को केन्द्र में रखते हुए। उन्होंने देश को एक चिंतन दिया था। आज देश पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जन्मशती बना रहा है। तो मैं कंडला पोर्ट ट्रस्ट को, नितिन जी को, उनके विभाग को एक सुझाव देना चाहता हूं कि क्यों न हम ये कंडला पोर्ट है, उसको पंडित दीनदयाल ट्रस्ट पोर्ट कंडला, विधिवत रूप से उसकी प्रक्रिया करें, निर्णय करें और पंडित दीनदयाल ट्रस्ट पोर्ट कंडला के रूप में, क्योंकि गरीबों के लिये काम करना है, दीनदयाल गरीबों के पहचान करता है मेरे देश में। जो दीन-दयालु हैं, वो भाव हमारे सामने रहेगा, तो हमारे अंदर समाज के दबे कुचले, शोषित, पीड़ित वंचित, उनकी जिंदगी में बदलाव लाने के लिये काम कर सकते हैं।

मैं फिर एक बार कच्छ की धरती में फिर एक बार मुझे आपके सामने आने का अवसर मिला। आप सब इतनी बड़ी मात्रा में आकर के आशीर्वाद दिये। इसके लिये आभारी हूं। नितिन जी का आभारी हूं। इस कार्यक्रम में मुझे शरीक होने का सौभाग्य मिला। बहुत बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमारी तिवारी / अमित कुमार/ शौकत अली

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

15-मई-2017 18:10 IST

अमरकंटक, मध्य प्रदेश में 'नमामी नर्मदे - नर्मदा सेवा यात्रा' के समापन समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

विशाल संख्या में पधारे हुए मेरे प्यारे भाइयों और बहनों,

हमारे शास्त्रों में एक मान्यता बनी हुई है कि अगर हम यात्रा कर नहीं सकते हैं, लेकिन किसी यात्री को अगर प्रणाम कर लें तो यात्रा का पुण्य प्राप्त होता है। तो मैं भी आप सभी यात्रियों को प्रणाम करके, जो पुण्य आपने कमाया है; वो आपसे कुछ हिस्सा मांग रहा हूँ। लेकिन वो हिस्सा मैं मेरे लिए नहीं मांग रहा हूँ, आपकी ये यात्रा से कमाया हुआ पुण्य मां भारती के काम आए, सवा सौ करोड़ देशवासियों के काम आए, इस देश के गरीब से गरीबी की जिंदगी के बदलाव लाने में काम आए।

और मुझे विश्वास है नर्मदा यात्रा ही है वो यात्रा जिसको नर्मदा परिक्रमा से जोड़ा गया है। और मैं इस शास्त्र से भली-भांति परिचित हूँ, मैंने उस दुनिया को जीने का कभी प्रयास किया था, और उसमें मुझे पता है कि जब नर्मदा परिक्रमा करते हैं, तब अहंकार कैसे चूर-चूर हो जाता है; अहंकार कैसे मिट्टी में मिल जाता है। और परिक्रमा करने वाले व्यक्ति को मां नर्मदा जमीन पर लाकर खड़ा कर देती है। सारे बंधनों से मुक्त करा देती है। सारे पद-उपाधियों से अभिभूषित हो, उससे भी परिक्रमा के दौरान मुक्ति मिल जाती है। मां नर्मदा और नर्मदा के सेवक के बीच कोई द्वैत नहीं बचता है, एक अद्वैत की अनुभूति होती है। आपने भी आज जब मां नर्मदा की इस महान सेवा करने का संकल्प किया है।

जब वक्त बदलता है, तो कहां से कहां पहुंचा देता है। और जब अतिकार भाव प्रबल हो जाता है, कर्तव्य भाव क्षीण हो जाता है, तब ये समस्याएं पैदा होती हैं; जो आज हमें नर्मदा सेवा के लिए निकलना पड़ा। यही तो मां नर्मदा हैं जिसने हजारों साल से हमें बचाया है, हमें जीवन दिया है, हमारे पूर्वजों की रक्षा की है, लेकिन हमने अपना अधिकार मान लिया, हम कर्तव्य से विमुख हो गए, और मां नर्मदा से जितना लूट सकते थे लूटते रहे। अपने स्वार्थवश अपनी आवश्यकता के अनुसार मां नर्मदा की तो परवाह नहीं की, हमने अपनी परवाह जरूरी की। मन में वो अधिकार भाव था कि मैं मां नर्मदा पर तो मेरा अधिकार है, मैं उसको जैसे चाहूं वैसे उसका उपभोग कर सकता हूँ, और उसी का परिणाम हुआ कि जिस मां नर्मदा ने हमें बचाया था, आज हमें उस मां नर्मदा को बचाने के लिए पसीना बहाने की नौबत आई है। अगर कर्तव्य भाव से हम विमुख न हुए होते, मां के प्रति हमारे कर्तव्यों को हमने निभाया होता तो मां नर्मदा, उसको बचाने की नौबत मनुष्य के जिम्मे नहीं आती। और इसलिए समय से रहते मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश की जनता, वो सजग हो गई।

हिन्दुस्तान में कई नदियां हैं, नक्शे पर निशान हैं, पानी का नामो-निशान नहीं। कई नदियां इतिहास के गर्त में खत्म हो चुकी हैं। हमारे देश में केरल में एक नदी है, शायद एक ही नदी है जिसका नाम भारत पर है; भारत पूजा। उस केरल की नदी बचेगी कि नहीं बचेगी, ये चिंता का विषय है। ऐसा तो नहीं था कि पानी के उपयोग के कारण नदी खत्म हुई है। नदी की रक्षा के लिए जिन तत्वों के साथ उस रक्षा का दायित्व होता है, वो अगर हम नहीं निभाएंगे तो मानव जाति को कितना बड़ा नुकसान होगा।

हम भली-भांति जानते हैं कि मां नर्मदा बर्फीली पहाड़ियों से नहीं आती, बर्फ के चट्टानों से पिघल कर नहीं आती है। मां नर्मदा एक-एक पौधे के प्रसाद से प्रकट होती है और जो हम लोगों को जी हमारे जीवन को पुलकित करती है। और इसलिए मध्य प्रदेश सरकार ने मां नर्मदा के उज्ज्वल भविष्य के लिए, मां नर्मदा की गारंटी के लिए, सबसे प्रमुख काम हाथ में लिया है, वो है पेड़ लगाने का; वृक्षारोपण। हम जब पेड़ लगाएंगे तब हमें भी अंदाज नहीं होगा कि हम आने वाली पीढ़ियों की कितनी बड़ी सेवा कर रहे हैं। हमारे पूर्वजों ने जो तप किया, साधना की, सेवा की, उसी का परिणाम है कि आज हम नर्मदा मैया का लाभ रहे रहे हैं। आज हम जो पुरुषार्थ करेंगे, आने वाली अनेक पीढ़ियां हमें याद करेंगी कि कोई एक वक्त था, जब मां नर्मदा को बचाने के लिए पेड़-पौधों की मदद ले करके फिर एक बार मां नर्मदा को पुनर्जीवन दिया गया था।

करीब-करीब डेढ़ सौ दिन यात्रा ये असंभव कार्य है, लेकिन हमारे देश का दुर्भाग्य है कि जहां कहीं सरकार जुड़ जाए, जहां कहीं राजनेता जुड़ जाएं, तो सके महात्म्य को खंडित करने का ही प्रयास होता है। वरना ये ऐसी घटना है, और मैं मध्य प्रदेश की जनता को नर्मदा यात्रा से जुड़े हुए, इस सेवा यात्रा से जुड़े हुए, लक्षावधि लोगों को, नर्मदा तट पर बसे हुए हर नागरिक को हृदय से बधाई देता हूं। ये ऐसी घटना है कि दुनिया के किसी देश में नदी की रक्षा के लिए डेढ़ सौ दिन तक इतनी तपस्या की गई होती, तो पूरे विश्व में उस की चर्चा हुई होती, पूरे विश्व में उसका जयकारा बोला गया होता, दुनिया के बड़े-बड़े टीवी चैनल इस घटना को अंकित करने के लिए दौड़ पड़ते। लेकिन ये हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हम हमारी अपनी इन प्रयासों का वैश्विक सामर्थ्य क्या है, न उसको जान पाते हैं न समझ पाते हैं, और मौके गंवा देते हैं।

आज कहीं एक Solar park लग जाए तो भी दुनिया में चर्चा होती है कि उस देश के उस इलाके में Solar park लगा है मानवता की रक्षा के लिए। ये नदी बचाने का इतना बड़ा काम हुआ है, पर्यावरण की रक्षा का इतना बड़ा काम हुआ है, 25 लाख से ज्यादा लोगों ने संकल्प लिए हैं, कोटि-कोटि जन उससे जुड़े हैं, शरीर को कष्ट दिया है, कठिनाइयों से गुजारे हैं दिन, स्वयं परिश्रम करके; पैदल चलके, मां पृथ्वी की रक्षा के लिए, नदी की रक्षा के लिए, पर्यावरण की रक्षा के लिए, मानवता की रक्षा के लिए, इतना बड़ा अहम कदम उठाया है। और इसका नेतृत्व करने के लिए मैं शिवराज जी को, उनकी पूरी टीम को, और मध्य प्रदेश की जनता को बधाई देता हूं।

मेरा जन्म गुजरात में हुआ। नर्मदा की एक-एक बूंद पानी का मूल्य क्या है, वो गुजरात के लोग भली-भांति जानते हैं। और आज आपने जब नर्मदा के भविष्य के लिए इतना बड़ा अभियान उठाया है, तो मैं गुजरात के गांव की, किसानों की तरफ से, वहां के नागरिकों की तरफ से; राजस्थान के गांव की तरफ से, किसानों की तरफ से, वहां के नागरिकों की तरफ से; महाराष्ट्र के गांव की तरफ से, महाराष्ट्र के किसानों की तरफ से, महाराष्ट्र के नागरिकों की तरफ से, मध्य प्रदेश की जनता का, मध्य प्रदेश की सरकार का, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री का अनेक-अनेक अभिनंदन करता हूं, उनका धन्यवाद करता हूं।

इन दिनों देश में स्वच्छता अभियान, उसको अब एक ढांचागत व्यवस्था मिली है। लगातार Third party के द्वारा, हिन्दुस्तान में Evaluation हो रहा है। कौन सा राज्य में स्वच्छता का क्या चल रहा है, कौन सा शहर स्वच्छ है। जन-भागीदारी, लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत होती है। और अगर हम जन-सामर्थ्य, जन-शक्ति, जन-भागीदारी, इसकी उपेक्षा करेंगे तो सरकारें कुछ भी करने में समर्थ नहीं होती हैं। कितने ही अच्छे विचार क्यों न हों, कितना ही अच्छा नेतृत्व क्यों न हो, कितनी ही अच्छी व्यवस्था क्यों न हो, लेकिन जन-समर्थन के बिना कभी भी कोई चीज सफल नहीं होती है। और जन-समर्थन से कैसे सफल होती है, इसका उत्तम उदाहरण मध्य प्रदेश ने प्रस्तुत किया है।

पिछली बार जब सर्वेक्षण हुआ तब स्वच्छता की दिशा में मध्य प्रदेश का नाम बदनामी की सीमा में आ गया था, लेकिन मध्य प्रदेश ने मन में ठान ली, ये कलंक मिटाने का संकल्प किया, जन-जागरण किया, जन-भागीदारी बढ़ाई, जन-जन को जोड़ा, और आज मैं मध्य प्रदेश को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। देश में जो hundred city सफाई के लिए आकलन किया गया, उन hundred में, 100 में 22 मध्य प्रदेश के हैं। ये बहुत बड़ी सिद्धि है। हिन्दुस्तान के और राज्यों को भी प्रेरणा देने वाला काम, स्वच्छता की दिशा में मध्य प्रदेश ने जन-भागीदारी से करके दिखाया। इंदौर और भोपाल हिन्दुस्तान के Top पर पहले और दूसरे नंबर पर आये।

100 में से 22 शहर स्वच्छता के अंदर अग्रिम पंक्ति में आ जायें, इसका मतलब ये हुआ कि पूरे राज्य में प्रशासन ने, शासन ने, जनता-जनार्दन ने इसे अपना काम माना। और उसी का परिणाम हुआ है ये नर्मदा योजना सेवा यात्रा की सफलता। ये सफलता भी सरकार की ताकत के भरोसे नहीं हुआ है, ये जनता-जनार्दन की ताकत के भरोसे हुआ है। और जनता की ताकत जब जुड़ती है तो कितने बड़े परिणाम आते हैं; शिवराज जी ने 6 करोड़ का लक्ष्य रखा है, 2 जुलाई को पेड़ लगाने का। और उन्होंने ये 6 करोड़ पेड़ की व्यवस्था के लिए भी पिछले डेढ़ साल से लगातार काम कर रहे हैं; ये जो ये अचानक नहीं हो रही है। उसके लिए नर्सरी के अंदर सारी व्यवस्थाएं करी, की जाती हैं तब जा करके होती है। लेकिन हम जैसे परिवार में एक संतान की देखभाल करते हैं, वैसे ही इन नए हम बोलने वाले पेड़-पौधों की माहवजत करेंगे, चिंता करेंगे, तब जा करके वो वटवृक्ष तैयार होगा।

हमारे यहां शास्त्रों में कहा जाता है जो एक साल का सोचता है वो आनाज बोता है, लेकिन जो आगे का, भविष्य का सोचता

है, वो फलदार वृक्ष बोता है। ये फलदार वृक्ष बोने का काम, ये आने वाले दिनों में अनेक परिवारों को एक आर्थिक गारंटी का भी कारण बनने वाला है। मुझे विश्वास है कि मध्यप्रदेश सरकार ने जो बीड़ा उठाया है और जो उन्होंने कार्य योजना बनाई है उस कार्य योजना की किताब मुझे उन्होंने पहले पहुंचाई थी, मैंने उसका अध्ययन किया; हर किसी के लिए उसमें काम है, हर जगह के लिए काम है; कब करना, कैसे करना, उसका विधि-विधान है; कौन किस काम को देखेगा इसका पूरा प्रारूप है; एक प्रकार से perfect document है future vision का। मैं देश के अन्य राज्यों से भी आग्रह करूंगा और शिवराज जी से भी आग्रह करूंगा कि हिन्दुस्तान के सभी राज्यों को एक किताब भेजें और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा का तरीका क्या होता है; मध्य प्रदेश को एक नमूना के रूप में, एक उदाहरण के तौर पर, उसे ले करके सब अपनी-अपनी योजना बनाएं।

जल ही जीवन है, ये तो हम कहते हैं; नदी माता, ये हम कहते हैं; लेकिन हमारी पूरी अर्थव्यवस्था उसी पर आधारित है। उसके बिना अर्थव्यवस्था खोखली हो जाती है। अगर आज मध्य प्रदेश में कृषि विकास 20 प्रतिशत पहुंचा तो उसमें सबसे बड़ा योगदान माता नर्मदा का है। ये ताकत है, किसान की जिंदगी बदलने की ताकत, ये माता नर्मदा में है।

2022 तक हिन्दुस्तान के किसान की आय दोगुना करने का संकल्प ले करके पूरे देश में काम चल रहा है, मध्य प्रदेश ने उसकी पूरी योजना तैयार कर दी है। और उसका लाभ किसानों के सहयोग से हिन्दुस्तान के हर गांव को मिलेगा, ये मेरा विश्वास है।

भाइयो, बहनों! 2022, आजादी के 75 साल हो रहे हैं। क्या हिन्दुस्तान के सवा सौ करोड़ देशवासी हर पल 2022 का स्मरण नहीं कर सकते हैं? हर पल आजादी के 75 साल की याद नहीं कर सकते हैं? जिन महापुरुषों ने देश के लिए बलिदान दिया, जीवन लगा दिया, जवानी जेलों में खपा दी, कुछ फांसी के तख्ते पर चढ़ गए, जिन्होंने अपने जीवन के परिवार के परिवार तबाह कर दिए; मां भारती की आजादी के लिए क्या उनके सपनों को याद करते हुए हम संकल्प नहीं कर सकते कि 2022 तक, व्यक्ति के नाते मैं देश के लिए इतना करूंगा, परिवार के नाते इतना करूंगा, समाज के नाते इतना करूंगा। हम गांव के लोग मिलके ये करेंगे; हम नगर के लोग मिल करके ये करेंगे; हम संस्था के नाते ये काम करेंगे, हम समाज के नाते ये काम करेंगे, हम राज्य के नाते, देश के नाते ये संकल्प करेंगे।

2022, 'नया भारत' बनाने का सपना ले करके चलना है। हर हिन्दुस्तानी को जोड़ना है। आजादी के आंदोलन में जैसे देश जुड़ गया था; देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए, 'नया भारत' बनाने के लिए हर देशवासी को जोड़ना है। और इसलिए मैं आग्रह करूंगा, देशवासियों से आग्रह करूंगा, मैं मध्य प्रदेश के सभी संगठनों से आग्रह करूंगा; आप भी मिल-बैठ करके तय करिए कि 2022 तक देश के लिए आपकी संस्था, आपका परिवार, आपका समाज, आपका संगठन, आपका दल क्या करेगा; आप लोग तय कीजिए। एक बार देश में माहौल बने, अभी हमारे पांच साल हैं। पांच साल में हम देश को कहां से कहां पहुंचा सकते हैं। मुझे विश्वास है अगर सवा सौ करोड़ देशवासी एक कदम देश के लिए आगे चल पड़ेंगे तो देश पांच साल के भीतर-भीतर सवा सौ करोड़ कदम आगे निकल जाएगा। और इसलिए हम इस संकल्प को ले करके चलें।

मैं आज पूज्य अवधेशानंद जी का विशेष आभारी हूं, जो आशीर्वचन उन्होंने मेरे लिए कहे हैं, जो भाव उन्होंने प्रकट किए हैं; मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करूंगा कि हम सब में वो क्षमता आए, वो अच्छाइयां आए, वो समर्पण का भाव आए; ताकि देश की सही सेवा करने के लिए हम अपने-आप को योग्य पाएं, योग्य बना पाएं। मैं उनके इस आशीर्वाद वचन के लिए हृदय से बहुत-बहुत आभार प्रकट करता हूं और उनको प्रणाम करता हूं।

मैं आप सबको भी हृदय से बधाई देता हूं, और जैसा शिवराज जी ने कहा, यात्रा का यहां विराम है; लेकिन अब यात्रा में जो भी सोचा, जो भी देखा, जो भी किया, इसको चरितार्थ करने का यज्ञ शुरू हो रहा है। ये सेवा का यज्ञ शुरू हो रहा है। यात्रा समाप्त हुई, यज्ञ आरंभ हुआ। यज्ञ में आहुति देनी पड़ती है, समय देना पड़ता है, अपनी सारी इच्छा-आकांक्षाओं को समाज के लिए अहुत करनी पड़ती है। मुझे विश्वास है ये नर्मदा के उज्ज्वल भविष्य का यज्ञ आप सबके सफल प्रयत्नों से और अवश्य नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा। इसी एक भावना के साथ आप सब मेरे साथ बोलेंगे- दोनों मुट्ठी बंद करके, हाथ ऊपर करके बोलेंगे- मैं कहूंगा नर्मदे, आप कहेंगे सर्वदे।

नर्मदे - सर्वदे

आवाज मां नर्मदा के उस किनारे तक पहुंचनी चाहिए, खम्बात की खाड़ी तक।

नर्मदे - सर्वदे

नर्मदे - सर्वदे

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/अमित कुमार/निर्मल शर्मा

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

30-जून-2017 20:10 IST

मोडासा में वात्रक, माजुम, और मेस्वो बांध पर जलापूर्ति के प्रति समर्पित योजना का शुभारंभ करने के अवसर पर
प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ।

मंच पर विराजमान राज्य के लोकप्रिय और यशस्वी मुख्यमंत्री श्री विजयभाई रुपाणी, उप-मुख्यमंत्री श्री नीतिन भाई पटेल, पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल, गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष भाई श्री रमणभाई, गुजरात सरकार के मंत्री महोदय श्री भूपेन्द्र सिंह चुडासमा, श्री गणपत भाई वसावा, श्री बाबु भाई बोखरिया, श्री शंकर भाई, केन्द्र सरकार में मेरे साथी मंत्री महोदय और गुजरात के आदिवासी समाज के अग्रणी भाई श्री जसवंत भाई भाभोर, राज्य के मंत्री श्री वल्लभ भाई, केन्द्र में संसद में मेरे साथी श्रीमान दीपसिंह राठोड़ जी, मोडासा नगरपालिका के अध्यक्ष वनिता बेन, भारतीय जनता पक्ष के प्रदेश अध्यक्ष श्री जितुभाई वाघाणी, भाजप के जिल्ला अध्यक्ष भाई रणवीर सिंह, भाई के सी पटेल और यहां एकत्रित विशाल जनसमुदाय में उपस्थित मेरे प्यारे भाईओ और बहनो,

कैसे हो? मजे मे?

आज मैं मोडासा में एक विशिष्ट जवाबदेही अदा करने के लिये आया हूं। लेकिन मोडासा में आना-जाना मेरे लिये कोई नई बात नहीं। मोडासा भी मेरे लिये नया नहीं है। उन दिनों मैं बस से मोडासा आता था। कंधे पे थैला होता था और मोडासा में मेरा मुकाम सामान्यतः राजा भाई के घर होता था। उन दिनों ये वनिता प्राथमिक कक्षा में अध्ययन करती थी। और आज वही वनिता मोडासा नगरपालिका की अध्यक्षा है, मोडासा के विकास के लिये कार्य करती है। कभी-कभार स्कूटर पर सवार होकर मोडासा आना-जाना होता था। मोडासा, मालसर, मेघरज - पूरे रूट पर फिरता था। कई सालों तक यहां के जन-जन के साथ जुड़ने का, उनके जीवन को समझने का और उनके साथ जीने का सौभाग्य मुझे मिला है। आज जल के साथ संबंधित ये महाकाय योजना साकार हो रही है। आज पानी, जल आप के घर तक पहुंच रहा है। सामान्यतः दिपावली हमारा सबसे बड़ा त्यौहार है। आपने आज तक जितनी दिपावली मनाई हो, उन सब की खुशी से भी ज्यादा खुशी का अवसर आज है।

आज का कार्यक्रम किसी पाईप लाइन, कोई नहर तक सीमित नहीं है। हम सभी जानते हैं के हमारे शरीर में शिरा और धमनी के माध्यम से रक्त संचार होता है, शरीर के एक-एक अंग को रक्त मिलता है, इस तरह शरीर का विकास होता है। शरीर के किसी भाग में शिरा और धमनी के माध्यम से रक्त संचार बंद हो जाता है, तो उस अंग को लकवा हो जाता है। जिस तरह हमारे शरीर के लिये रक्त संचार जरूरी है, ठीक उसी तरह किसी भी विस्तार के विकास के लिये पानी या जल आवश्यक है। संस्कृति और समुदाय के लिये जल जीवन है, प्राण वायु है।

हम सभी जानते हैं कि जहां पानी का प्रवाह होता है, वहां सजीवता होती है। जहां पानी का अभाव होता है, वहां निर्जीवता पनपती है। इसलिये जबसे भारतीय जनता पक्ष को गुजरात की जनता की सेवा करने का अवसर मिला है, तब से हमारे नेतृत्व ने कार्य में एकसूत्रता दिखाई है। भारतीय जनता पक्ष के सरकार में चाहें केशुभाई पटेल का नेतृत्व हों, श्रीमती आनंदीबेन पटेल का नेतृत्व हो या विजयभाई रुपाणी का नेतृत्व हो या फिर मुझे सेवा करने का अवसर मिला हो - आप को एकसूत्रता देखने को मिलेगी। भारतीय जनता पक्ष की जितनी सरकार बनी, आपने भाजपा को जितना समय कार्य करने का अवसर दिया, हमारे नेतृत्व ने कभी आधे-अधूरे कार्य नहीं किये। सरकारी सहाय के टुकड़े फेंक कर चुनाव जीतने का मार्ग हमने कभी अपनाया नहीं।

एक जमाना था। मालपुर और मेघरज के मेरे भाईओ, जरा याद कीजिये। हम सभी सरकार के पास किसलिये जाते थे? तहसीलदार को किस समस्या के लिये आवेदन दिया करते थे? जब अकाल पड़ता था, तब मालपुर, मेघरेज, खेडब्रहमा, अंबाजी, दांता तक, हम सरकार को कागज का टुकड़ा देते थे, कोई नेता आये तो उसे आवेदन करते थे, कोई मंत्री आये तो उसे भी कागज का टुकड़ा थमाते थे। और हमारी मांग क्या होती थी? हम अरज करते थे कि साहब, इस साल अकाल पड़े, तो हमारे गांव में मिट्टी का काम कराने की मंजूरी दीजिएगा। गढ़दे खोद के मिट्टी का काम करने की और इस मिट्टी से हमारे गांव में मार्ग बनाने का काम कीजिएगा। और जो सरकार मिट्टी का काम कराती थी, उसे मार्ग पर बिछाने का काम कराती थी, उसे वो बड़े से बड़ा काम गिनाती थी, अपनी उपलब्धि के स्वरूप पेश करती थी। और सरपंच गा-बजाके पूरे गांव को कहता था कि, इस साल चुनाव में इस पक्ष को वोट देना है, क्योंकि इस साल अकाल में इसी पक्ष की सरकार ने गांव में खुदाई करवाई, मिट्टी को मार्ग पर बिछाया। हमारे यहां सरकारें बनी और चली गई। और काम किसे कहते हैं? गढ़दे खोदे, मिट्टी निकाली और मार्ग पर बिछाई - इसी को हमने काम कहा, विकास कहा। इसी नाम पर राज करके गुजरात को विकास की यात्रा से वंचित रखा गया।

भाईओ और बहनो,

आज पूरे देश में गुजरात के विकास मॉडल की चर्चा क्यों होती है? क्योंकि हमने आधे-अधूरे काम करना बंद किया, भ्रष्टाचार को रोका और स्पष्ट लक्ष्यों के साथ परिणामलक्ष्य कार्य किए। इसी वजह से आज गुजरात का विकास मॉडल पूरे देश में अनुकरणीय बना। आपको इसका एक उदाहरण दें। जब सालों पहले नर्मदा योजना का विचार किया गया था, जिन सरकारों ने इसकी योजना बनाई थी, उस सभी के दस्तावेज उपलब्ध हैं। उस दस्तावेजों में आप के खेत को, आप के विस्तार को नर्मदा का पानी मिलेगा उस का जरा-सा भी उल्लेख नहीं है। उसका नामों-निशान नहीं है। नर्मदा का न, अरावल्ली जिल्ला या साबरमती के उपरवास में इस योजना को पानी मिलेगा - इनमें से किसी बात का उल्लेख नहीं है।

जिस तरह शरीर में सभी शिराओं और धमनियों में रक्त संचार हो, तो ही उसका विकास होता है, ठीक उसी तरह गुजरात के कोर्ने-कोर्ने में पानी का प्रवाह अविरत बहें तो ही उसका स्थायी विकास संभव था। उस सपने को हमने संजोया था। और मैं इस राज्य की युवा पीढ़ी को प्रशिक्षित करना चाहता हूँ, शिक्षित करना चाहता हूँ, जानकारी देना चाहता हूँ कि आप की आयु 15, 17 या 18 साल की होगी, लेकिन तकलीफ किसे कहते हैं, उसका अहसास शायद आपको नहीं होगा। आपकी माता पानी के लिये 3-5 किलोमीटर चलकर गांव से बाहर जाती थी - ये दृश्य शायद आपने देखा नहीं होगा। आपके बड़े भाई 25-30 साल के होंगे। उनको रात को अभ्यास करने की इच्छा होती थी, लेकिन बिना बिजली के अभ्यास करने में कितनी समस्या होती थी - ये उनको पता है, शायद आपको अहसास नहीं होगा। आप के बड़े भाई को अभ्यास करने के लिये 5-7 किलोमीटर दूर स्कूल जाना पड़ता था। सप्ताह में दो दिन बस आती थी। ये दिन आपके बड़े भाई ने देखे होंगे, शायद आपको पता भी नहीं होगा। 15-17 साल के इन युवाओं को अहसास नहीं है कि - दुःख किसे कहते हैं, समस्या कैसी होती है, अंधरा कैसा होता है, बिना सड़क, बिजली के कितनी दिक्कतें होती हैं, नजदीक में स्कूल न होने की वजह से कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है - इन बातों से ये युवा पीढ़ी वाकिफ नहीं है।

मेरे देश के बड़े-बुजुर्ग लोगों से अपील है कि आप घर में आपके परिवार के युवा सदस्यों को बताइए कि सालों पहले जीवन कैसा था? हम कैसे जीते थे? बिना बिजली के दिन कैसे बीतते थे? बिना बिजली के अंधकारमय रातें कैसी लगती थी? बारिश के लिये कैसे तरसते थे? जब तक हम उस भयानक दिनों को याद नहीं रखेंगे, तब तक हमें पानी का मूल्य समझ में नहीं आयेगा और इसलिये भाईओं, जनजागृति आवश्यक है। वात्रक हो, माझूम हो या फिर मेश्वो या हाथमती हो - सभी जलाशय क्रिकेट के मैदान जैसे थे। इस के अंदर आप कबड्डी खेल सकते थे। बारिश के महिनो के अलावा पानी नहीं दिखता था। एक सपना संजोया था - सुजलाम सुफलाम योजना का।

भाईओ और बहनो,

आप ही बताओ कि मही नदी का उदय भाजपा सरकार के आने के बाद हुआ था? भाजपा के सत्ता में आने के बाद मही नदी का अवतरण हुआ था। मही सदीओं से बह रह थी। उसका पानी सदियों से प्रवाहित हो रहा था। उसका पानी समुंद्र में मिल जाता था और खारा हो जाता था। मुझे पूछना है कि भाजपा से पूर्व शासन करती किसी सरकार को क्यों ख्याल नहीं आया की मही नदी के पानी को बनास तक ले जाये और किसानों के जीवन को समृद्ध किया जाए? हजारो करोड़ रुपये खर्च करके 450 किमी लंबाई की सुजलाम सुफलाम योजना पूर्ण कर दी। दशकों से कोर्ट-कचहरी और भारत सरकार के विभिन्न विभागों की दया पर निर्भर नर्मदा योजना आज जाकर पूर्ण हुई है। मुझे भी दिल्ली जाने के बाद इन सभी चीजों को व्यवस्थित करने के लिए पसीना बहाना पड़ा है।

भाईओ और बहनो,

सुजलाम सुफलाम योजना के अंतर्गत हमने उन विस्तारों तक पानी पहुंचाया, जहां नर्मदा का पानी पहुंचता नहीं था। ये विस्तार, ये प्रदेश उजाड़, विरान है। इन विस्तारों में पानी कि किल्लत देखने को मिलती थी। यहां के किसान एक फसल लेने के लिये ईश्वर पर निर्भर था, वो अच्छी बारिश के लिये ईश्वर को प्रार्थना करता था और आज सुजलाम सुफलाम के बदौलत वो साल में तीन-तीन फसल का मालिक बन गया है। सालों पहले शहर में अपने घर में पानी की 2 इंच की पाइपलाइन लाने के लिये उसे रुपये कहां से आएंगे ये सोचना पड़ता था। काफी मशक्कत करनी पड़ती थी। हर मोहल्ले में, हर घर तक पानी पहुंचाना हो तो उसे 25 वर्ष की योजना बनानी पड़ती थी, उसके लिये फंड की व्यवस्था करनी पड़ती थी।

जरा सोंचें, हमने पूरे गुजरात में कोने-कोने में महाकाय पाईप लाइन बिछा दी। ये पाईप इतनी बड़ी है कि आप मारुति कार लेकर जा सकते हैं। सड़क बनाने की समस्या थी पर हमने खेत के अंदर से फसल को नुकसान करे बिना पाईप को बिछाया। केनाल बनाने के लिये किसान के पास से जमीन लेनी पड़ती थी। पर हमने ज्यादा खर्च करके एक तीर से दो

निशान साथे - एक, किसान की जमीन को बचाया, और दो - उनकी जमीन को हरी करी दी। ये काम करने का हमने सफल प्रयास किया।

मित्रो,

ये विज्ञान की भी खूबी है। मैं चाहता हूँ कि गुजरात की इंजीनियरिंग शाखा के सभी छात्र, इंजीनियरिंग शाखा के अभ्यास क्रम में, श्रीमान भूपेन्द्रसिंह यहां उपस्थित हैं, अभ्यास क्रम में गुजरात के जल प्रकल्प में किस प्रकार की तकनीक का इस्तेमाल हुआ, पम्पिंग स्टेशन का निर्माण कैसे हुआ, पानी को इतनी ऊंचाई पर कैसे पहुंचाया जाता है, इतनी दूर से पानी को कैसे लाया जाता है, संपूर्ण तकनीक किस तरह काम करती है - ये सभी चीजों को इंजीनियरिंग शाखा के छात्रों को समझाना चाहिये, उनके अभ्यास क्रम में शामिल किया जाना चाहिये। तब जाकर उसे पता चलेगा कि गुजरात कैसे चमत्कार कर दिखाता है!

55 मंजिला इमारत। आपको याद होगा कि अहमदाबाद में सालों पहले एक बहुमंजिला इमारत बनी थी। लाल दरवाजा के पास ये इमारत बनी थी। दस या बारह मंजिला थी। हम गांव में स्कूल में से अहमदाबाद की दूर पर गये थे। तो दूर में दो चीजे दिखाते थे - एक, कांकरिया और दूसरा, बहुमंजिला सरकारी भवन। दस-बारह मंजिला इमारत हम सबके लिये अजुबा थी और पहली बार लिफ्ट देखी थी। हम सभी बच्चे लिफ्ट कैसे आती-जाती है वो अचरज के साथ देखते थे।

भाईओ और बहनो,

ये ज्यादा पुरानी बात नहीं है। आप जानते हैं कि ये पानी मेश्वो तक, माझूम तक के आपके वात्रक तक - पानी इस तरह पहुंचेगा नहीं, 55 मंजिला भवन - उसको देखना हो तो ये पगड़ी नीचे गिर जाए, टोपी नीचे गिर जाए, तब जाकर दिखे। 55 मंजिला भवन में पानी को नीचे से उपर ले जाने में कितनी मुश्किल होती है? जरा सोचो, पूरी नदी को 55 मंजिला भवन की ऊंचाई तक ले जायेंगे और फिर अरावल्ली के जिल्ले के 600 गांवों में पानी जाएगा। आप कल्पना कीजिये। ये सिर्फ रुपये-पैसे का खेल नहीं है। ये भगीरथ प्रयास है, जिसका आशय भविष्य की पीढ़ीओं को समृद्ध करने का है, गुजरात के किसानों को सुखी करने का है, गुजरात की माताओं और बहनों को पानी के लिये पांच-पांच किलोमीटर तक पैदल जाना न पड़े इसके लिये किया गया पुरुषार्थ है। ये प्रयास बेकार नहीं जाना चाहिये। मेरे लिये ये गौरव की बात है कि आनंदीबेन ने जिस कार्य की शुरुआत की, जिसे विजयभाई ने आगे बढ़ाया और उसकी बदौलत मुझे अरावल्ली की गोद में आकर इसका लोकार्पण करने का सौभाग्य या अवसर मुझे मिला।

शामलाजी का पुनर्निर्माण हुआ। आप मुझे बताइए के ये श्यामसुंदर शामलाजी मेरी सरकार बनने के बाद अवतरित हुए थे। ये मंदिर हमारी सरकार के पहले का नहीं है? मेरे मुख्यमंत्री बनने से पहले मेरा ये कालिया राजा नहीं था? जवाब दीजिये, शरमाईये नहीं। मेरे आदिवासी भाईओ आपको तो पता है। आप शामलाजी के मंदिर में जाये तो घूमते-घूमते पैर सूज जाये तब जाकर भगवान के दर्शन होते थे और आज देखो, शामलाजी का भव्य निर्माण कर दिखाया। शामलाजी में भगवान तो सदियों से बैठा था, पर उसकी देख-रेख करने वाला गांधी नगर में कोई नहीं था और इसलिये वो एक कोने में छूपा हुआ था। हमने उसे उसका गौरव फिर से वापस दिलाया है।

भाईओ और बहनो,

सामान्यतः ऐसी मान्यता है कि भगवान बुद्ध का प्रभाव सिर्फ पूर्वीय भारत और एशिया के कुछ गिने चुने देशों में था। भगवान बुद्ध का प्रभाव पश्चिम भारत में भी था, पर इसकी जानकारी बहुत कम लोगों की थी। पर जब शामलाजी के नजदीक देव की मोरी में उत्खनन हुआ, तब भगवान बुद्ध के अवशेष मिले। लोगों को अचरज हुआ कि पश्चिम भारत में भी भगवान बुद्ध का प्रभाव था। मेरा सद्भाग्य है कि मेरा जन्म वडनगर में हुआ, जिसके बारे में चीनी प्रवासी युएनत्संग ने लिखा है कि वडनगर में 10,000 बौद्ध भिक्षुओं के लिये छात्रालय था। जब मैं चीन गया था, तब चीन के राष्ट्रपति मुझे उनके गांव ले गये। जब युएनत्संग वापस चीन गये, तब चीन के वर्तमान राष्ट्रपति के गांव में रहे थे। खास बात ये है कि भारत में युएनत्संग सबसे ज्यादा समय मेरे गांव वडनगर में रहे और वापस चीन जाकर उसके वर्तमान राष्ट्रपति के गांव में रहे। उन्होंने यहा एक संग्रहालय का निर्माण कराया है। वहां उन्होंने मुझे सब कुछ दिखाया, युएनत्संगने गुजरात के बारे में, वडनगर के बारे में जो कुछ चाइनीज भाषा में लिखा था उसकी जानकारी मुझे दी। कहने का तात्पर्य ये है कि बुद्ध का प्रभाव गुजरात में था। अरावल्ली में देव की मोरी में उनके अवशेष मिले हैं। मेरा एक सपना है कि इस देव की मोरी में,

अरावल्ली पर भगवान बौद्ध का एक भव्य स्मारक बनाना। दुनिया भर के यात्री उसे देखने आये ये सपना है मेरा। मुझे भरोसा है कि गुजरात जनता को आशीर्वाद मिला तो उस सपने को भी पूरा करके दिखाऊंगा।

भाईओ और बहनो,

यहां मोडासा के बस पोर्ट के शिलान्यास की विधि की और बस पोर्ट की योजना का चित्र प्रस्तुत किया गया तब पूरे माहौल में खुशी छा गई थी, तालीयों की गड़गड़ाहट सुनाई दी थी। कभी किसी ने कल्पना नहीं की थी गरीब इन्सान बस में प्रवास करता होगा। अमीर लोग हवाई जहाज में सफर करते हैं और उसके लिये एयरपोर्ट तो भव्य होते हैं। दिन में दो हवाई जहाज आते हैं, फिर भी एयरपोर्ट भव्यातिभव्य होते हैं। और हर रोज हजारों लोग सफर करने के लिये जिस बस स्टेशन में आते हैं, उस पर किसी का ध्यान दरकार नहीं होता। सभी तरफ कचरे के ढेर होते हैं, गंदगी होती है, दीवारें पिचकारी से लाल होती हैं, शौचालय में तो आप कदम भी नहीं रख सकते। भाईओ और बहनो, गरीबों के लिये ये सुविधा क्यों नहीं इस विचार के साथ गुजरात सरकार ने अत्याधुनिक बस पोर्ट के निर्माण की शुरुआत की। आज हिंदुस्तान के कोने-कोने से लोग देखने आते हैं कि एयरपोर्ट से भी बस पोर्ट बड़ा हो सकता है, अच्छा हो सकता है, सुंदर हो सकता है, ज्यादा सुविधा वाला हो सकता है, गरीबों को ज्यादा उपयोगी हो सकता है - इस प्रकार के कार्य करने कि दिशा में हम अग्रसर हैं।

भाईओ और बहनो,

आज यहां एपीएमसी के नये भवन का उद्घाटन करने का मुझे अवसर मिला। भारत सरकार ने एक महत्वपूर्ण योजना शुरू की है। हिंदुस्तान के किसानों को आज अपने गांव से थोड़े दूर मार्केट यार्ड में जाकर अपना उत्पादन बेचना पड़ता है। किसान यार्ड में व्यापारी जो दाम तय करता है, उसी दाम पर किसानों को अपना उत्पादन बेचना पड़ता है। लेकिन अब किसानों को उससे मुक्ति मिलने वाली है, मजबूरी का जीवन जीने की आवश्यकता नहीं है। हमने E-NAM (इलेक्ट्रॉनिक - नेशनल एग्रिकल्चर मार्केट) नाम की एक व्यवस्था का सर्जन किया है। इस व्यवस्था के साथ देशभर के 400 एपीएमसी मार्केट संलग्न हैं, जिसमें मोडासा का एपीएमसी भी शामिल है। अब किसान अपने मोबाइल पर इन सभी मार्केट के साथ जुड़ जायेगा। वो अब देश के विभिन्न बाजारों में अपने उत्पादन के दाम जान सकेगा, उसको जहां ज्यादा दाम मिले वहां अपने उत्पादन की बिक्री कर सकेगा। हमने इ-नाम नाम के इस टेक्नोलॉजी आधारित प्लेटफॉर्म पर एक समान, एकीकृत राष्ट्रीय कृषि बाजार को खड़ा किया है, जिसका सिर्फ एक उद्देश्य है - किसानों का उद्धार करना। अब किसान अपने माल की बिक्री बंगाल, बिहार, कोचि या पंजाब - किसी भी राज्य में कर सकेगा। अब किसान अपना उत्पादन की बिक्री कब, कहां और किस दाम पर करना है ये तय कर सकेगा। ये काम इस सरकार ने कर दिखाया है। पूरे देश को संकलित करने का, कृषि बाजारों को संलग्न करने का काम इस सरकार ने कर दिखाया है। मुझे यकीन है कि इसका फायदा आने वाले दिनों में इस देश के किसानों को मिलेगा।

भाईओ और बहनो,

भारत सरकार ने एक महत्वपूर्ण योजना शुरू की है - किसान संपदा योजना। आज हमारे यहां किसानों के उत्पादन के रख-रखाव की पर्याप्त सुविधा नहीं है, जिसके परिणामस्वरूप कई उत्पादन बेकार हो जाते हैं। फलफलादि का आयुष्य कम होता है। अगर समय पर ग्राहक तक न पहुंचे, तो बिगड़ जाते हैं और किसानों को घाटा होता है। कुल देखे तो इससे देश को हजारों करोड़ों का घाटा होता है और किसानों के मेहनत बेकार होती है। इसी वजह से भारत सरकार ने किसान संपदा योजना शुरू की है और इसके तहत हजारों करोड़ों रुपये का इस्तेमाल किसानों के उत्पादनों की मूल्य वृद्धि के लिये, फूड प्रोसेसिंग के लिये, उसके रख-रखाव के लिये विविध संसाधन का निर्माण करने के लिये किया जाएगा। वेस्ट में से बेस्ट की फिलोसोफी हमने किसान संपदा योजना में अपनायी है। इस योजना से किसानों की जमीन की गुणवत्ता बढ़ेगी, उसकी कोई चीज बेकार नहीं जायेगी। भारत सरकार ने नवम्बर में दिल्ली में हिंदुस्तान के अब तक का एग्री प्रोसेसिंग का बड़ा ग्लोबल इवेंट आयोजित करके दुनिया में किस प्रकार की तकनीक का इस्तेमाल होता है उसका प्रदर्शन कर किसानों के प्रशिक्षित करने का महाअभियान शुरू किया है। इसका उद्देश्य किसानों को समृद्ध करने का है।

भाईओ और बहनो,

आजादी मिलने के बाद पहली बार प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना प्रस्तुत की गई है। ये ऐसी योजना है, जिसमें मेरे किसान सुरक्षिता की अनुभूति कर सकता है। आज तक कई फसल बीमा प्रस्तुत किए गए थे, लेकिन उसमें से ज्यादातर बैंक के साथ ऋण संबंधित थी। दरअसल ये योजना बैंक की गारन्टी ज्यादा थी, किसानों की सुरक्षा की कम। प्रधानमंत्री फसल बीमा

योजना में किसानों को रु. 100 के प्रीमियम में सिर्फ दो से पांच रुपये चुकाने होते हैं, जबकि बाकी की रकम भारत सरकार या राज्य सरकार चुकाती है। पहले बीमे में पूरे जिल्ले का हिसाब होता था, अब हर गांव का हिसाब होगा। कोई जिल्ले में पांच गांव में बारिश न हुई, तो उस गांव के किसान बीमा के हकदार बनेंगे - इस प्रकार की व्यवस्था का सर्जन किया गया है। पहले पानी के भर जाने की वजह से फसल को नुकसान हो तो बीमा नहीं मिलता था, पर अब मिलता है। मान लो कि, जून महिने में बारिश होगी इस आशा में किसान ने सभी तैयारी कर दी, बियारण का छंटकाव किया, मजदूरों को तय कर लिया, पर जून महिने में बारिश न हुई तो? जुलाई-अगस्त में बारिश न हुई तो? पहली बार प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में ईश्वर की अनुकंपा से बारिश न हुई तो किसान को उसके खेत में से लघुतम आवक देने की बीमा की गारन्टी दी गई है। कई बार ज्यादा बारिश हो तो बीमा मिलता है, फसल बिगड़ जाये तो बीमा मिलता है, हिमप्रपात हो तो बीमा मिलता है, पर खेत में फसल का ढग हो, बाजार में अनाज पहुंचाना हो, और बीच में बारिश, आंधी या कोई कुदरती-कृत्रिम आपत्ति की वजह से फसल को नुकसान हो, तो इसका मुआवजा भी प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में देने का काम हमने किया है, जो पहले नहीं मिलता था।

भाईओ और बहनो,

गुजरात के ज्यादा से ज्यादा किसानों ने इस प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ लेने की शुरुआत की है। आप जितना ज्यादा लाभ लेंगे, इतनी मात्रा में सुरक्षा बढ़ेगी।

भाईओ और बहनो,

साल 2022 में हिंदुस्तान अपनी आजादी की 75वीं सालगिरह मनायेगा। साल 2003 में मैंने कहा था कि आने वाले पांच साल में हम गुजरात के किसानों की आय दुगुनी करेंगे और हमने वो कर दिखाया और आज मैं कहता हूं कि साल 2022 में हिंदुस्तान के स्वतंत्रता की 75वीं सालगिरह पर, जिस धरती पर लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान, जय किसान' का मंत्रोच्चार किया, उस धरती पर हिंदुस्तान के किसानों की आय दुगुनी करने का अभियान हमने शुरू किया है। बीज से लेकर बाजार तक एक चेन का निर्माण करके साल 2022 तक हिंदुस्तान के किसानों की आय दुगुनी हो - ये महाअभियान हमने शुरू किया है और आज ये योजना किसानों की, गांवों की समृद्धि के महाअभियान का एक भाग है। आज नर्मदा का पानी 55 मंजला इमारत जितनी उंचाई तक पहुंचाकर पूरे अरावल्ली जिल्ले को पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध कराने का एक महान कार्य गुजरात सरकार ने किया है, और इस प्रकार का मानवता का कार्य, गुजरात के गांवों को सुखी, समृद्ध करने का कार्य, गुजरात की माताओ और बहनो को मुसीबतों में से मुक्ति दिलाने का अभियान, गुजरात के किसानों को स्वनिर्भर करने का कार्य - इस प्रकार के पावन कार्य में भागीदार होने के लिये मुझे आमंत्रित किया, मुझे आप के बीच आने का सौभाग्य दिया, आप के आशीर्वाद पाने का अवसर दिया - इस पर मैं राज्य सरकार का अंतःकरण से आभारी हूं। और आप सभी को, मेरे मोडासा के नागरिकों को, मेरे मालपुर, मेघरज, बायड, भीलोडा और आसपास के गांव के नागरिकों को शुभकामना देता हूं।

मेरे साथ पूरी ताकात से मुठ्ठी बंद करके बोलिये, मैं कहूंगा नर्मदे आप बोलेंगे सर्वदे।

नर्मदे....

सर्वदे...

नर्मदा मैया हमारे घर आयी है, उसे नर्मदा के पूजारियों के मिजाज का अहसास होना चाहिये...

नर्मदे....

सर्वदे...

नर्मदे....

सर्वदे...

नर्मदे....

सर्वदे...

मित्रो,

आप का बहुत-बहुत धन्यवाद।

 <https://ssl.gstatic.com/ui/v1/icons/mail/images/cleardot.gif>***

AKT/AK/MK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

30-जून-2017 23:10 IST

अहमदाबाद, गुजरात में ट्रांसस्टैडिया "एरिना प्रोजेक्ट" के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

सभी वरिष्ठ महानुभाव और इससे भी ज्यादा हिंदुस्तान का नाम रोशन करने वाले मेरे खिलाड़ी मित्र,

जो लोग इस इलाके से परिचित हैं, 10 साल पहले यह कांकरिया कैसा था। यह डेरी का टूटा-फूटा जर्जर, एक ईमारत और ज्यादातर कुत्ते आकर के घुस जाते थे, ऐसी वीरान बंजर अवस्था में पड़ा था। अगर सपने देखने का सामर्थ्य हो तो दुनिया कैसी बदलती है वो यहाँ आप आकर के देख सकते हो। खेल जगत के जितने भी लोग आज यहाँ आए हैं, मैं उनसे आग्रह करूंगा कि बाद में इस पूरे Stadium की सारी Facility देखकर के जाएं और औरों को भी आप प्रेरित करें कि अब हिंदुस्तान में भी वो सारी व्यवस्थाएं विकसित हो रही हैं जो हमारे खिलाड़ी दुनिया भर में देखते हैं।

मुझे जब भी हमारे देश के खिलाड़ियों से मिलने का मौका मिला, मैं उनसे जुड़ जाता हूँ, उनसे बड़ी प्यार से बातें करता हूँ, उनसे सुनता हूँ। मैंने कभी मेरे देश के खिलाड़ियों के हौसले में कमी नहीं पाई है। उनके परिश्रम में कमी नहीं पाई है। कठिनाईयों के बीच भी दुनिया के सामने भारत का झंडा फहराने के लिए जी जान से जुटने के उनके इरादों में कभी कमी नहीं पाई है। लेकिन कठिनाई यह है कि हमारे पास सामर्थ्यवान युवा पीढ़ी है, यह पूरा New India मेरे सामने हैं, पूरा New India, लेकिन हमारी सोच आप हैरान होंगे इन खिलाड़ियों से तो मैंने पूछा नहीं है लेकिन इनको तो अनुभव आया होगा, अगर विमान में जा रहे हैं, ट्रेन में जा रहे हैं, तो लोग उनको पूछते होंगे, परिचय हुआ, क्या करते हो? कोई कहेगा मैं National Game खेलता हूँ। कोई कहेगा मैं International Game खेलता हूँ। तो अगला क्या सवाल आएगा मालूम है? अगला सवाल इनको पूछते हैं, भई तुम खेलते हो, National खेलते हो, International खेलते हो, करते क्या हो? यानि खेलना ये भी देश की सेवा है। जीवन में Carrier का रास्ता है, यह हमारे देश में किसी के गले नहीं उतरता है। इन सबको अनुभव होगा। वो कहेगा कि मैं National खेलता हूँ, तो पूछते हैं कि अच्छा खेलते हो पर और क्या करते हो? सीमा पर जो जवान खड़ा रहता है और कोई उनको पूछे कि तुम क्या कर रहे हो, तो कहेगा मैं सीमा पर जवान के तरह खड़ा रहता हूँ और फिर कोई उसे पूछे, लेकिन आप काम क्या करते हो? तो उससे बड़ा दुख क्या होगा! मेरे खिलाड़ियों के साथ भी समाज के अंदर यही होता रहता है। और समाज में नहीं परिवार में भी ये लोग भी जब शुरुआत की होगी तब घर में सब कहते होंगे, बस खेलते ही रहोगे कि कुछ पढ़ाई करोगे? कुछ पढ़ना लिखना है कि नहीं करना है? सुबह होती है निकल जाते हो, और कुछ लोग तो पुलेला गोपीचंद को भी कहते होंगे कि अरे भई तु मेरे बच्चों की ज़िंदगी मत बिगाड़।

हमारे देश में यह माहौल है, यह माहौल मुझे बदलना है। खेल व्यक्ति के जीवन में तो कई ऊंचाईयां पाने का अवसर बन चुका है लेकिन उन खिलाड़ियों के माध्यम से 125 सौ करोड़ हिंदुस्तानी अपना माथा उंचा करके दुनिया के सामने जा सकते हैं। दुनिया के किसी भी देश में वहाँ के किसी खिलाड़ी का नाम अगर मैं भाषण में देता हूँ तो 5-5 मिनट तक तालियां बजती रहती है, अगर उस देश के किसी खिलाड़ी का नाम अगर मैं उस देश में बोलता हूँ।

अभी मैं Portugal में था दो दिन पहले, वहाँ के Football के Player को मैंने याद किया, सारा-सारा माहौल बदल गया, तालियों से माहौल गूंजने लग गया। खिलाड़ियों के प्रति यह सम्मान, यह आदर, यह हमारे देश की परंपरा होनी चाहिए, हमारे परिवार की परंपरा होनी चाहिए, हमारे देश की यह सामाजिक विरासत के रूप में पनपना चाहिए। व्यवस्थाएं भी विकसित होनी चाहिए। आज मुझे खेल महाकुंभ, उस कार्यक्रम की Launching के App का लोकार्पण करने का अवसर मिला। ज़रूरी नहीं है कि हर कोई National International खिलाड़ी बनें। लेकिन खेलने से ज़िंदगी की मज़ा कुछ और होती है दोस्तों। खेल जीना सीखाता है। खिलाड़ी की ज़िंदगी से एक बात हम बहुत आसानी से सीख सकते हैं। कभी-कभी लोग

कहते हैं कि हम राजनेताओं को ज्यादा कहते हैं कि विजय पचाना सीखना चाहिए। लेकिन मैंने देखा है कि खिलाड़ियों ने पराजय को कैसे जी सकते हैं, ये खिलाड़ी के अंदर ताकत होती है और वही उसको विजय का रास्ता तय करके देती है। ये सामर्थ्य खेल जगत में से आता है, खेल के मैदान से आता है। हर पल जय-पराजय का खेल रहता है और जिंदगी में जय-पराजय को ही खेल बनाकर के जी लेना, ये भी तो जीवन का बड़ा सौभाग्य होता है, जो इन खिलाड़ियों के सौभाग्य में होता है। हमें व्यवस्थाएं भी विकसित करनी हैं।

खेल महाकुंभ पिछली बार 30 लाख लोग गुजरात में खेल के मैदान में उतरे थे। यह जरूरी नहीं है कि सब Champion होंगे, अगर खेल चलता है तो बगल में जाकर तालियां बजाने से भी खिलाड़ी की ताकत बढ़ती है दोस्तों, उसको हिम्मत मिलती है, उसका हौसला बुलंद हो जाता है। खेल एक स्वाभाविक Culture बनना चाहिए, और इसलिए खेल महाकुंभ जब शुरू किया, आज इतने कम समय के अंदर गुजरात, वर्ना गुजरात के लोग, खेल और गुजरात, यह किसी के दिमाग में fit ही नहीं होता है।

गुजराती यानि School College में पढ़ने जाए तो जेब में 2 Pen लेकर के जाता है और शाम को आते-आते 1 Pen बेचकर के आता है। उसकी रगों में व्यापार होता है। वो कोई भी नई चीज़ लेकर के जाएगा, अपने दोस्तों को दिखाएगा और बेचकर के आएगा। उस गुजरात के अंदर इतनी खेल प्रतिभाएं हैं। राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय खेलों में वो अपना करतब दिखा पा रही है, इससे बड़ा आनंद क्या हो सकता है? 25 साल में गुजरात को 10 गोल्ड मेडल मिले, 25 साल में 10, और यह खेल महाकुंभ का परिणाम है कि 1 साल में गुजरात 10 गोल्ड मेडल लेकर के आ गया।

अब हर शहर को, हर जिले को खेल-कूद के लिए आवश्यक मैदान तैयार करना, coaching लाना, अच्छे अपने Students बनाना, स्कूल में Culture बनाना ये धीरे-धीरे उसमें से Percolate होने वाला है। जैसे गुजरात में हमने खेल महाकुंभ किया, अब पूरे देश में 'खेले इंडिया' का हम अभियान चलाने वाले हैं। करोड़ों-करोड़ों लोग खेलें और खेल ही है जो जिंदगी को खिलने के लिए अवसर देता है और इसलिए आज जब मैंने इस Stadium को देखा, क्योंकि मैं प्रारंभ से इससे जुड़ा रहा इसलिए हर पल का पता था। लेकिन देखने के बाद मुझे लगा कि और मैं उदित को कहूंगा कि पूरे दिन में आधा घंटा-एक घंटा School College के युवकों को Stadium का Tour कराने का कार्यक्रम बनाना चाहिए। गुजरात सरकार ने भी students को ये stadium देखने के लिए लाना चाहिए। जब वो देखेंगे तो पता चलेगा कि ये कितना बड़ा विज्ञान है। खेल के पीछे कितनी बड़ी ताकत लगती है। आधुनिक technology खेल में कितना बड़ा role play कर रही है। खेल जगत के लोगों के लिए खानपान पर कितने प्रतिबंध होते हैं। कितनी मर्यादाएं होती हैं। मुझे याद है हमारा पार्थिव, हमारे मित्र का बेटा है तो बचपन से हम इसे अच्छी तरह जानते हैं। उसके चाचा, पार्थिव एक अच्छा cricketer बनें, सुबह चार बजे स्कूटर पर इस बालक को लेकर करके इसके चाचा लगातार stadium जाते थे। लगातार, और पूरी जिंदगी, अपने भाई के बेटे को खिलाड़ी बनाने के लिए सुबह चार बजे उठना, कितनी ही ठंड क्यों न हो, स्कूटर पर उसको stadium तक ले जाना, वो खेले उसको प्रोत्साहित करना, उसमें से एक पार्थिव पटेल पैदा होता है। पूरा परिवार लग जाता है; पूरा परिवार लग जाता है।

आपमें से मैं सबसे आग्रह करूंगा कभी दीपा से मिलिए। एक खिलाड़ी के रूप में तो सारा हिन्दुस्तान जानता है दीपा को, लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि इससे बढ़िया मैंने कोई motivator नहीं देखा है। कभी सुनिए उसको, शरीर का आधा हिस्सा काम नहीं कर रहा है, लेकिन जब भी बात करती है, नए सपनों की बातें करती है, नए उमंग की बात करती है, नए हौसले की चरितार्थ करने की बात करती है। ये हैं लोग और ये हमारी युवा पीढ़ी के हीरो हैं। इनको ले करके देश में खेल का माहौल बनाना, देश की युवा पीढ़ी को प्रेरित करना है। आवश्यक infrastructure खड़ा करना है और पहली बार देश में public private partnership के model से खेल जगत का एक नया model गुजरात ने दिया है। सरकार और उद्योग जगत मिल करके व्यापार जगत के मिल करके हमारी नई पीढ़ी के लिए कैसा व्यवस्था खड़ी कर सकते हैं, इसका एक नमूना है।

और मुझे विश्वास है कि आने वाले दिनों में ओलम्पिक के मैदानों में भारत की भी गूंज सुनाई देगी, और अधिक ताकत के साथ सुनाई देगी, और अधिक व्यापकता के साथ सुनाई देगी। दुनिया के छोटे-छोटे देश भी ओलम्पिक में सफलता के कारण सारी दुनिया में अपना नाम बना देते हैं; सवा सौ करोड़ का हिन्दुस्तान भी इन सपनों को पूरा कर सकता है, वो सामर्थ्य हमारे देश में है। अवसर चाहिए नौजवानों को, व्यवस्था चाहिए नौजवानों को और परिवार से पूरा समर्थन चाहिए नौजवानों को। यही नौजवान हमारे देश के भविष्य को बदलने का सामर्थ्य रखते हैं और इसलिए एक ऐसी व्यवस्था खड़ी हुई है।

मैं भी देश में जहां-जहां खिलाड़ियों से मिलूंगा मैं उनसे जरूर आग्रह करूंगा कि आप जरा इस व्यवस्था को देख कर आइए। उसमें क्या और सुधार किया जा सकता है, और क्या जोड़ा जा सकता है, धीरे-धीरे देश में इस प्रकार की व्यवस्थाएं कैसे विकसित करें, खेल के मैदान की तरफ लोगों को कैसे आकर्षित करें, वरना आज video game के पीछे हमारा बचपन बर्बाद हो रहा है दोस्तों। मुझे खेल के मैदान में बच्चे चाहिए, खेल के मैदान में। और मैं कभी स्कूलों में जाता था जब गुजरात में था तो मैं स्कूलों में जाता था। दो-दो, तीन-तीन दिन लगातार जाता था और बच्चों को एक सवाल पूछता था, कि दिन में कितनी बार तेरे शरीर में पसीना निकलता है? कितना दौड़ते हो, पेड़ चढ़ जाते हो कि नहीं चढ़ जाते हो? सीढ़ी कितना तेजी से चढ़ पाओगे? और कभी मुझे दुख होता था, बहुत सारे बच्चे कहते थे, नहीं जी, पसीना-वसीना क्या होता है? स्कूल आते हैं सीधे ही घर चले जाते हैं और फिर कहीं बाहर जाते नहीं हैं।

ये बचपन हमारे लिए उज्ज्वलता की निशानी नहीं है। ये हम सबका दायित्व है कि हमारे परिवार के बच्चों को खेल के मैदान से जोड़ें। साधनों के बिना भी खेल खेला जा सकता है। फुटबॉल, मुझे अभी भी समझ नहीं आ रहा है; क्रिकेट में हमने अच्छा किया है, गर्व की बात है, करते रहना है। लेकिन फुटबॉल और हॉकी, इसको हम भूल नहीं सकते। मेरा साथी भूटिया यहां बैठा है, इसने देश का नाम रोशन किया है फुटबॉल की दुनिया में। इस बार Under Nineteen, FIFA World Cup इस बार भारत में होने जा रहा है। मैं दुनिया के खिलाड़ियों को इसलिए ला रहा हूं, मेरे देश के जवानों की इच्छा जगे। दुनियाभर के खिलाड़ी यहां आएंगे और इसलिए ये हमारा काम है, हम आने वाले दिनों में क्रिकेट के सिवाय भी बहुत खेल हैं; जिनमें भारत पुनः अपनी महारत हासिल कर सकता है। शूटिंग के क्षेत्र में, तीरंदाजी के क्षेत्र में, वृहत रूप से भारत के नौजवान अच्छा कर रहे हैं। और आपने देखा होगा खेल की दुनिया में भी बेटियां, बेटों को परास्त कर रही हैं दोस्तों। बेटियां नाम रोशन कर रही हैं। एक से बढ़ करके एक काम, हिन्दुस्तान को गौरव दिलाने का काम हमारे देश की बेटियां कर रही हैं। अगर मेरे देश की बेटियों में ये सामर्थ्य है तो उससे बड़ी हमें प्रेरणा क्या चाहिए? इससे बड़ी प्रेरणा क्या चाहिए?

आइए दोस्तों, देशभर के अंदर खेल जीवन का हिस्सा बनाने का एक अभियान चलाएं, व्यवस्था विकसित करें, उद्योग जगत आगे आएंगे, परिवार आगे आएंगे, सरकारें आगे आएंगे, समाज आगे आए और भारत खेल की दुनिया में भी अपना नाम रोशन करे।

इसी एक कामना के साथ मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं।

ये ऐसा कार्यक्रम है, 'नया हिन्दुस्तान' मेरे सामने बैठा है। यहां से जाने का मन न करे, ऐसा माहौल है। लेकिन यहां से जाते ही रात को 12 बजे Parliament में भारत के भाग्य की एक नई दिशा के द्वार वहां खुलने वाले हैं। तो मुझे यहां सीधा Parliament पहुंचना है। लेकिन फिर भी जितना समय था, आप सबके बीच बिताने का अवसर मिला। मैं इन खिलाड़ियों का हृदय से आभारी हूं कि आप लोग आए। क्योंकि सचमुच में हमारे शब्दों से आपके पसीने की ताकत बहुत है। आपकी मेहनत की ताकत बहुत है। आइए, आगे आइए दोस्तों, ये लोग हैं जिन्होंने देश का नाम रोशन किया है। और इसमें ताजा-ताजा नाम आपने सुना होगा, श्रीकांत का। श्रीकांत जरा हाथ ऊपर करो। श्रीकांत अभी-अभी, अभी-अभी दुनिया में हिन्दुस्तान का नाम रोशन करके आया है।

भाइयो, बहनों! ये है हमारे देश की अमानत। हम सब खड़े हो करके तालियों की गूंज से इनका सम्मान करें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार/ अमित कुमार/ अमित/ निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

29-अगस्त-2017 19:35 IST

प्रधानमंत्री द्वारा राजस्थान में विभिन्न प्रमुख राजमार्ग परियोजनाओं के उद्घाटन और आधारशिला रखने के अवसर पर उनके भाषण का मूल पाठ

आप सब इतनी विशाल संख्या में हम सबको आशीर्वाद देने के लिए आये मैं इसके लिए आप सबका हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। पिछले दिनों बाढ़ के कारण देश के कुछ भागों में काफी मुसीबत आई। कई लोगों को अपनी जान गवाना पड़ी। किसानों को भी काफी नुकसान हुआ। राजस्थान में भी कई स्थानों पर ये संकट आया। राज्य सरकार ने अपना एक प्रतिवेदन भारत सरकार को भेजा है। भारत सरकार की तरफ से भी एक उच्चस्तरीय समिति राजस्थान का दौरा कर चुकी है। मैं राजस्थान के बाढ़ पीड़ित भाइयों-बहनों को, किसानों को विश्वास दिलाता हूँ कि संकट की घड़ी में भारत सरकार पूरी तरह आपके साथ खड़ी रहेगी और इस संकट से बाहर निकल कर एक नए विश्वास के साथ हम सब आगे बढ़ें, इसके लिए मिल जुल करके भरपूर प्रयास भी करेंगे। आज एक ही कार्यक्रम में पंद्रह हजार करोड़ रुपयों से ज्यादा लागत वाले विकास के कामों का शिलान्यास होना या लोकार्पण होना, ये अपने आप में राजस्थान के लिए एक ऐतिहासिक अद्भुत घटना है- योजनाओं की घोषणाएं करना। चुनाव के समय भांति-भांति के वादे करना, अखबारों में बहुत बड़ी-बड़ी हेडलाइन छप जाना। आप भी भले हम भी भले। माला दो तुमको डालू, माला दो तुमको डालू। ये सारे खेल देश भलीभांति देखता आया है सालों से यही चला आया है हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है इन पुरानी बुराइयों को खतम करने में इतनी ताकत लगती है जिसकी आप कल्पना नहीं कर सकते ऐसे हालात छोड़ कर गए हैं। सारी व्यवस्था ऐसे चरमरा गई है बुराईयां इतनी प्रवेश कर चुकी हैं अगर कोई ढीला ढाला इंसान होता तो शायद उसको देखते ही डर जाता लेकिन हम जरा अलग मिट्टी के बने हुए हैं चुनौतियों को चुनने की भी आदत है और चुनौतियों को चुनौती देने की भी आदत है और चुनौतियों को स्वीकार करते हुए रास्ते खोजते हुए मंजिल की ओर देश को ले जाने के लिए जी जान से जुटने का माजा भी रखते हैं अभी नितिन जी वर्णन कर रहे थे चंबल के उस ब्रिज का 2006 से 2017 तक 11 साल और बजट कितना 300 करोड़ से भी कम। सरकार में फर्क क्या होता है? काम करने वाली सरकार किसको कहते हैं? यह समझने के लिए ये घटना काफी है। एक छोटा सा ब्रिज, 300 करोड़ रुपए की लागत का, ब्रिज साल- डेढ़ साल में बन जाये, सामान्य पद्धति से बनाये तो साल डेढ़ साल में बन जाये। 11 साल बीत गए और आज पांच हजार छह सौ करोड़ के वो प्रोजेक्ट। जरा पत्रकार मित्र हिसाब देखें तो दिमाग में 300 करोड़ का प्रोजेक्ट 11 साल पांच हजार छह सौ करोड़ के काम। 2014 में दिल्ली में हमारी सरकार बनने के बाद विचार आया, योजना शुरू हुई, कार्यक्रम बना और आज तीन साल के भीतर-भीतर पांच हजार छह सौ करोड़ के कामों का लोकार्पण हो रहा है। हमने उस संस्कृति को लेने का प्रयास किया है जिस काम का हम आरम्भ करेंगे उसे पूरा करने का प्रयास भी हम ही करेंगे और जब कोई योजना विलम्बित हो जाती है एकाध चुनाव में राजनीतिक लाभ तो शायद मिल जाता होगा। पत्थर गाड़ दिया फूल माला पहन ली फोटो निकलवा दी अखबार में छपवा दी एकाध बार चुनाव तो निकल जाएगा। लेकिन बाद में अगर वो योजना अटकी पड़ी है, हजारों करोड़ रुपयों की लागत बढ़ती जाती है। काम न होने के कारण जो नुकसान हुआ है, वो अलग। काम अटकने के कारण जो नुकसान हुआ है वो अलग। और देश का पूरा अर्थतंत्र एक गढ़वे में पड़ी हुई ये योजनाएं खा जाती हैं। ऐसे गढ़वे में पड़ी इतनी योजनाओं को मुझे बाहर निकालने में इतनी ताकत लग रही है जैसे किये ब्रिज आपने देखा बंद पड़ा था काम। कोर्ट कचहरी में उलझ रहा था। हिम्मत के साथ, ईमानदारी के साथ फैसले लेते हैं, निर्णय करते हैं तो परिणाम भी मिलता है। और आज वो परिणाम आपके सामने है, आने वाले दिनों में नौ हजार करोड़ से भी ज्यादा केनए काम अकेले राजस्थान में होंगे। इनमें प्रमुखतया रोड सेक्टर के काम हैं, कहीं रोड की चौड़ाई, कहीं नई पुलिया, कहीं नया रोड, कहीं रोड का आधुनिकीकरण। एक साथ नौ हजार करोड़ से ज्यादा रुपयों के काम को शुरू करना। अगर यही काम 500 करोड़ के आज करते, 500 करोड़ के पांच दिन बाद करते, फिर 500 करोड़ के एक महीने बाद करते, तो राजस्थान के अगले चुनाव तक हम राजनीति की रोटियां सेकते रहते। लेकिन वो रास्ता हमें मंजूर नहीं है। हमें काम करना है, समय सीमा में काम करना है और इसलिए एक साथ योजना बना करके, नौ हजार करोड़ रुपयों से ज्यादा लागत से नए कामों का आज शिलान्यास हो रहा है। और जब इतनी बड़ी जिम्मेदारी के साथ कार्यक्रमों की बात करते हैं, तो पूरा करने के संकल्प के साथ करते हैं। और मैं राजस्थान की धरती को विश्वास दिलाता हूँ कि ये करके रहेंगे और राजस्थान की काया पलट हो कर रहेगी। देश के विकास में इंफ्रास्ट्रक्चर का बहुत महत्व होता है। ये ज्यादा लागत वाले होते हैं, समय लम्बा लेने वाले काम होते हैं। राजनीतिक दृष्टि से लोगों का धैर्य खो भी जाता है और इसलिए सरकारें, राजनेता लम्बे समय की योजनाएं, लम्बे समय के बड़े काम, इनसे भागते रहते थे, पुराने जमाने में। यह हम भली-भांति जानते हैं कि देश को अगर नई ऊँचाइयों पर ले जाना है, तो हमें हमारी

व्यवस्थाओं को भी आधुनिक बनाना पड़ेगा। रेल हो, रोड हो, पानी की व्यवस्था हो, बिजली की व्यवस्था हो, ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क हो, वाटर वेज हो, कोस्टल कनेक्टिविटी का रास्ता हो, हर प्रकार से आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए अब विलम्ब करना भारत के लिए फायदेमंद नहीं होगा। और एक बार इस प्रकार की आधुनिक व्यवस्थाये विकसित होती हैं, तो सिर्फ जमीन पर एक बड़ी काली लम्बी लकीर दिखती है ऐसा नहीं है। वो लम्बी काली पट्टी जो रोड है, वो काले रंग वाला रोड आपके जीवन में रोशनी भरने का काम कर देता है। आप विचार कीजिए कि नौ हजार करोड़ रूपयों के लागत से बनने वाले रोड से किसान को कितना फायदा होगा। वे अपनी फसल, अपने फल फूल, सब्जी आसानी से ले जा सकेंगे-जब अटल बिहारी वाजपेई जी ने गोल्डेन चतुस्क बनाया तो शुरू में लोगों को लगता था,वाह! क्या बढ़िया रोड बन गया! पहले ऐसा रोड नहीं था।आनंद आता था, गाड़ी तेज चलती थी। बात वहाँ नहीं हो सकती थी। मुझे बराबर याद है राजस्थान के इसी इलाके से सटा हुआ गुजरात का हिस्सा चाहे साबरकाठा हो, चाहे अहमदाबाद जिले के कुछ किसान वहाँ हो फल, फूल, सब्जी और दूध ये अच्छा रोड बनने के कारण,एक दिन मैं दिल्ली के बाजार में जा करके बिकते थे। और वहाँ गाँव के किसान की आय में आमूल-चूल परिवर्तन आया है। एक बार अच्छे रोड बन जाते हैं तो मेरा किसान जिसको अपनी फसल शहर तक ले जाने में दिक्कत होती है फल-फूल, सब्जी दूध दो- दो दिन अगर विलंब हो जाता है तो इनका 20 से 30 प्रतिशत तबाह हो जाता है। खरीददार लेने को तैयार नहीं होता है।जब अच्छे रोड का Network बनता है तो देश की Economy में भी गति आती है। दूर-सुदूर गाँव में बैठे किसानों को अपने पसंदीदा बाज़ार में पहुँचने के लिए एक अवसर मिलता है जब रोड बन जाते हैं Infrastructure बन जाता है। गाँव की गरीब माँ प्रसूता से पीड़ित है, दवाखाना दूर है, 25-30 किलोमीटर दूर जाना है, अगर अच्छे रोड हैं तो माँ और बच्चे की जिंदगी बच जाती है। लेकिन अगर रोड ठीक नहीं है तो उस माँ को जिंदगी से हाथ धो देना पड़ता है- रोड से ये काम होता है। राजस्थान में तो राजस्थान का रोड तो पैसे उगलने की ताकत रखता है-पैसे उगलने की। शायद हिंदुस्तान के और भागों को रोड से जितना फायदा मिलता है उससे पाँच गुना लाभ राजस्थान को मिलता है क्योंकि राजस्थान में दूरियाँ बहुत हैं। भू-भाग बहुत बड़ा है और राजस्थानके जीवन में Tourism की बहुत बड़ी ताकत है विश्व भर का Tourist राजस्थान से परिचित है। दुनिया भरके Tourist को पुष्कर के मेले में आने का मन करता है, दुनिया के Tourist को झील की नगरी उदयपुर में आकर समय बिताने का मन करता है। दुनिया भर के Tourist को जैसलमेर के पास मरुभूमि में जाकर के एक नई जिंदगी का एहसास करने का मन करता है। किसी को श्रीनाथ जाना है, किसी को एकलिंग जाना, अनगिनत जगहें हैं राजस्थान के हर कोने में Tourism को आकर्षित करने की- Inherent ताकत पड़ी है। एक ऐसी Magnetic Power है जो कि न सिर्फ हिन्दुस्तान के कोने-कोने में दुनिया भर से यात्रियों को खींचने की ताकत रखती है। और जब Tourist आता है न, वो जेब खाली करने के लिए आता है और यहाँ के लोगों का जेब भरने के लिए आता है। और Tourism एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें कम से कम पूंजी निवेश से ज्यादा ज्यादा से लोगों को रोजगार मिलता है।हर कोई कमाता है। फूल बेचने वाला कमाएगा, प्रसाद बेचने वाला कमाएगा, पूजा का सामान बेचने वाला कमाएगा, Auto Rikshaw वाला कमाएगा, Taxi वाला कमाएगा, गेस्ट हाउस वाला कमाएगा, Handicraft बेचने वाला कमाएगा, चाय बेचने वाला भी कमाएगा। ये ताकत जिस राज्य में है, लेकिन अगर ट्राफिक जाम रहता है, रास्ते टूटे फूटे हैं,गड्ढे से भरे हुए हैं कोई Proper signage नहीं है,कोई Parking की व्यवस्था नहीं है, सही से स्थान-स्थान पर पेट्रोल पंप की सुविधा नहीं है तो Tourist एकाध बार तो आएगा लेकिन जल्दी-जल्दी वापस जाने के लिए सोचता रहेगा। ये 15000 करोड़ रूपए के प्रोजेक्ट सिर्फ जमीन पर रास्ते नहीं बना रहे हैं। वो राजस्थान के भाग्य के रास्ते खोल रहे हैं। ये मैं साफ देख रहा हूँ और इसलिए ये जो Infrastructure Project पर बल दिया जा रहा है, भारत सरकार इसके पीछे पूरी तरह खर्च करने पर लगी हुई है। इसलिए कि हिन्दुस्तान में Infrastructure को एक आधुनिक स्थान पर ले जाना है। Optical Fibre Network-दूर-सुदूर गाँव के बच्चों को Quality Education कैसे मिले, दूर-सुदूर गरीब के बच्चे को भी जैसी शिक्षा उदयपुर के अच्छे से अच्छे स्कूल में मिलती हो, अजमेर के अच्छे से अच्छे स्कूल में मिलती हो वैसी ही शिक्षा दूर-सुदूर बाँसवाड़ा के जंगल में रहने वाले मेरे आदिवासी भाई को कैसे मिले। ये Digital Network के द्वारा,Optical Fibre Network के द्वारा,Long distance Education के द्वारा, नई पीढ़ी को नई शिक्षा के द्वारा, नई Technology के माध्यम से शिक्षा के द्वारा शिक्षा देने का एक बड़ा अभियान। और उसी के तहत लाखों किलोमीटर Optical Fibre Network लगाया जा रहा है। अब ये Optical Fibre Network लगता है तो करोड़ों रूपए की लागत लगती है, अरबों, खरबों की लागत लगती है। लेकिन वहाँ जहाँ से गुजरती है, किसी को दिखता नहीं है। लेकिन इसमें मेरा क्या? हमारे लिए क्या हो रहा है, ध्यान में ही नहीं आता है। लेकिन जब वह लग जाएगी, बच्चों की पढ़ाई का काम होता होगा, बीमार मरीजों को टेलिमेडिसिन से दवाइयों की अच्छी सुविधा प्राप्त हो जाएगी, उसके उपचार के रास्ते तय हो जाएंगे, गाँव के लोगों को भी शहर की सुविधाएं उपलब्ध हो जाएगीं। आप कल्पना कर सकते हैं कि हिन्दुस्तान के गाँव में कितना बड़ा परिवर्तन आएगा? हम उस Infrastructure को बल देते हुए काम को आगे बढ़ा रहे हैं।

अभी मुख्यमंत्री जी बता रही थीं उज्ज्वला योजना के बारे में। लाखों की तादाद में गरीब माँ-बहनों के पास आज गैस का चूल्हा पहुँच गया। एक माँ जब लकड़ी के चूल्हे से धुँएँ में खाना पकाती है तब 400 सिगरेट का धुँआँ उसके शरीर में जाता है। उन माँ-बहनों के उन बच्चों की जो खेलते हैं,उनके स्वास्थ्य की कौन चिंता करेगा? और एक जमाना था गैस का

सिलेंडर लेने के लिए कितने पापड़ बेलने पड़ते थे। कितनी कठिनाइयाँ थीं, कितने नेताओं से चिट्ठी चौपाई करनी पड़ती थी। ये ऐसी सरकार है जो गरीब के घर जा करके उसको गैस का चूल्हा देने का अभियान चला रही है और लाखों परिवारों को दे चुकी है।

पहले रोड बनते थे-उससे आज दोगुना रोड बन रहे हैं। पहले रेल बनती थी- उससे आज दोगुना रेल बन रही है। चाहे पानी पहुँचाना हो, चाहे Optical Fibre Network पहुँचाना है- हमने गति भी बढ़ा दी है, काम का स्केल बढ़ा दिया है, स्कोप भी बढ़ा दिया है और स्कूल में भी हमने सुधार करके चीजों को आधुनिक बनाने में सफलता प्राप्त की है।

अभी जीएसटी आया-शुरू में लोगों को लग रहा था लेकिन दुनिया के लिए अजूबा है, सवा सौ करोड़ का इतना बड़ा देश-रातों रात एक व्यवस्था बदल जाए और देश के सवा सौ करोड़ नागरिक नई व्यवस्था से अपने आप को Adjust कर लें। ये हिन्दुस्तान की ताकत का परिचय करवाता है-दोस्तों! हर किसी को गर्व होगा कि मेरे देश के अन्दर गाँव में भी बैठे छोटे व्यापारी को भी Technology के द्वारा आधुनिक कैसे बनना उसके मन में एक इच्छा जगी है और मैं चाहूँगा, मैं राजस्थान के अफसरों से खास आग्रह करूँगा कि एक अभियान चलाइए। 15 दिन का-गाँव-गाँव हर व्यापारी छोटा हो तो भी 20 लाख की सीमा से नीचे हो तब भी, 10 लाख की सीमा से नीचे हो तब भी, उसको भी जीएसटी में जोड़िए ताकि इस जीएसटी का लाभ उस गरीब व्यापारी को भी मिले और छोटे व्यापारी को भी मिलना चाहिए। अगर वह जुड़ेगा नहीं तो गाड़ी कहीं अटक जाएगी, वहीं रुक जाएगी, नीचे तक लाभ पहुँचेगा नहीं, एक अभियान के स्वरूप में काम उठाना चाहिए। आप देखिए राजस्थान की आय में भी आप ने कल्पना नहीं की होगी कि इतना परिवर्तन आएगा, इतना बढ़ावा होगा और उसका परिणाम ये होगा कि राजस्थान के गरीबों की भलाई के लिए अनेक नई योजनाएं सरकार अपने हाथ में ले सकती है। जीएसटी के कारण अकेले Transportation में, जो Department भी हमारे नितिन जी देखते हैं-पहले Driver घर से निकलता था अगर उसको समुद्री तट बंदर पर सामान पहुँचाना हो तो अगर हम किलोमीटर की गिनती करें, ट्रक के स्पीड की गिनती करें, तो तीन दिन में पहुँच सकता है। लेकिन पहले हर जगह पर चुँगी, हर प्रकार के चुँगी नाका। और नाकों पर क्या क्या होता था, वो सब जानते हैं कि दुनिया कैसी चलती थी। वो बेचारा पाँच दिन में पहुँचता था। दो दिन ट्रक एक सप्ताह में अगर दो दिन ट्रक पड़ी रहती है तो देश की Economy को 25 प्रतिशत से ज्यादा नुकसान होता है Transportation में। ये जीएसटी के बाद सारे चुँगी नाके गए, ट्रक के Driver को खड़े रहना जो लाल पास, नीला पास का जो चक्कर था सब बंद हो गया। और वो पहले पाँच दिन लगते थे अब तीन दिन में पहुँच रहा है। दो दिन ज्यादा माल ढो करके आगे बढ़ रहा है। उसके कारण माल ढोने के खर्च कम हुए। Transport वालों की आय बढ़ी और मैं तो नितिन जी से कह रहा हूँ कि प्रतिदिन नए Transport के कानून भी बदलने चाहिए। आज हमारे देश में क्या है एक ट्रक के अंदर माल ले कर जाते, पूरा उसी के अंदर ढो कर ले जाते हैं। अब समय की माँग है-ट्रक और ट्राली। जैसे ट्रैक्टर में होता है वो अलग कर दी जाए। ट्राली के अंदर सामान भरा हो, जयपुर में ट्राली छोड़ दो, ट्रक ले कर चले जाओ, दूसरी ट्राली लगा लो- आगे बढ़ जाओ। ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि ड्राइवर रात को अपने घर पहुँच सके। परिवार में बच्चों के साथ रह सके। मैं ऐसी ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था में Transport Transformation लाने का हमारा काम है। और Transformation देश में लाना है तो Transport पद्धति से भी बहुत तेजी से लाया जा सकता है और एक व्यापक योजना के साथ विकास की नई ऊँचाइयों को पार करने की दिशा में हम चल रहे हैं।

मैं फिर एक बार स्वागत सम्मान के लिए, आपके प्यार के लिए, आपके आशीर्वाद के लिए, आपका हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद!

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बाल्मीकि महतो

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

22-सितम्बर-2017 21:40 IST

वाराणसी में अनेक विकास परियोजनाओं के शुभारम्भ के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मंच पर विराजमान उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्रीमान रामनाथ जी, राज्य के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्रीमान योगी आदित्यनाथ जी, केंद्र में मंत्रीपरिषद की मेरी साथी श्रीमती स्मृति ईरानी जी, केंद्र में मंत्रीपरिषद में मेरी साथी श्री अजय टम्टा जी, राज्य के उपमुख्यमंत्री श्रीमान केशव प्रसाद मोर्य जी, इसी क्षेत्र के सांसद कई वर्षों तक मंत्रीपरिषद में मेरी उत्तम साथ देने वाले और अब उप्र भारतीय जनता पार्टी का सुकाम संभाल रहे हैं डाक्टर महेंद्र नाथ पांडे जी, रेलवे बोर्ड के चेयरमैन श्रीमान अश्वनी जी जिन्होंने गरीबों के कल्याण के लिए उनको आत्मनिर्भर बनाने के लिए बहुत बुद्धिमानी से, बारीकी से financial inclusion का एक बहुत बड़ा बीड़ा उठाया है। ऐसे उत्कर्ष बैंक के प्रबंध निर्देशक श्रीमान गोविंद सिंह जी और विशाल संख्या में पधारे हुए मेरे बनारस के मेरे प्यारे भाईयो और बहनों

आज एक ही कार्यक्रम में एक ही मंच से एक हजार करोड़ रूपयों से ज्यादा लागत के कुछ प्रकल्पों को लोकार्पण और कुछ प्रकल्पों को शिलान्यास होने जा रहा है। मैं उत्तर प्रदेश सरकार का भी बहुत आभारी हूं। कि उन्होंने बनारस क्षेत्र के विकास के लिए पूर्वी भारत के विकास का जो हमारा सपना है उसमें ये बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। और इसलिए राज्य सरकार भी अभिनंदन की अधिकारी है। आज करीब 300 सौ करोड़ रूपयों की लागत से वस्त्र मंत्रालय द्वारा, Textile Ministry द्वारा जिस प्रकल्प का लोकार्पण हो रहा है मैं नहीं मानता हूं पिछले कई दशकों में बनारस की धरती पर इतनी बड़ी प्रकल्प की योजना साकार हुई हो। और जिस प्रकल्प का शिलान्यास हम करते हैं उसका उद्घाटन भी हम ही करते हैं वर्ना राजनीति हिसाब किताब से शिलान्यास होते रहते हैं योजनाएं लटकती रहती हैं, पूरी नहीं होती हैं। यहां दो पुल का लोकार्पण हुआ अब कितने समय से लटकी हुई चीजे, लेकिन योगी जी ने आकर के उसका बीड़ा उठाया आज वो साकार हो गया और उस पार के लोगों के लिए विकास के लिए नए दरवाजे खुल जाते हैं सुविधाएं बढ़ जाती हैं।

आज बुनकर और शिल्पकार भाईयो और बहनों के लिए मैं समझता हूं कि एक स्वर्णिम अवसर है। आपके पास अपने पूर्वजों से ये कौशल्य तो प्राप्त है। दुनिया के लोगों को अचंभित करने वाली चीजे निर्माण करने का आपका सामर्थ्य है लेकिन जंगल में मोर नाचा किसने देखा। अगर यही हाल रहा तो इस काशी क्षेत्र के मेरे शिल्पकार भाई, बुनकर भाईयो को कभी विश्व के सामने अपने सामर्थ्य का परिचय कराने का अवसर नहीं आ सकता। ये initiative ऐसा है जो हमारे इन छोटे-छोटे बुनकर भाई, शिल्पकार भाई-बहन जो अपनी कलाकारी के द्वारा अपनी हस्तकला के द्वारा जो निर्माण करते हैं अगर उसको एक वैश्विक बाजार नहीं मिलता है। तो इसकी आर्थिक गतिविधि अटक जाती है। मैं जब नया नया यहां सांसद बनकर के इन बुनकर भाईयो से बातचीत कर रहा था तो मैं एक ही बात सुन रहा था कि हमारे बच्चे अब इस काम जुड़ना नहीं चाहते। हमारे परिवार के सदस्य अब इससे बाहर निकलना चाहते हैं। वे पढ़ लिख कर के कहीं बाहर जाना चाहते हैं। और तभी मुझे लगा कि इतना बड़ा सामर्थ्यवान आर्थिक गतिविधि का हथियार अगर हमारे इन परिवारों से छूट जाएगा तो आने वाला इतिहास हमें माफ नहीं करेगा। क्योंकि एक ऐसी अमानत आपके पास है जिससे आप दुनिया को चकाचौंध कर सकते हैं। और जैसे-जैसे युग आगे बढ़ रहा है दुनिया भी भारत की इस विशेषताओं के प्रति आकर्षित हो रही है। और इसलिए 300सौ करोड़ की लागत से बनी हुई ये इमारत, ये सिर्फ इमारत नहीं है। ये भारत के सामर्थ्य का परिचय कराने वाली ये हमारे काशी क्षेत्र के शिल्पकार बुनकरों के सामर्थ्य की एक ऐसी कथा को संजोये हुए है जो भविष्य के नए दरवाजे खोलने की ताकत रखते हैं। मैं यहां के आटोरिक्षा ड्राइवरों से, टैक्सी वालों से आग्रह करूंगा कि काशी में अगर कोई भी टूरिस्ट आता है उस टूरिस्ट को यहां जरूर ले आइए। आग्रह करके ले आइए, एक ही जगह पर काशी क्षेत्र के सामर्थ्य का उसको परिचय करवाइए, और जो भी टूरिस्ट आएगा कुछ न कुछ तो खरीद कर के जाएगा। विदेशी टूरिस्ट आएगा वो तो शायद यहां से हटने का नाम नहीं लेगा। ये जो museum बना है वो काशी के tourism को भी बढ़ावा देगा। जो श्रद्धापूर्वक काशी में यात्रा के रूप में आते हैं वे जो ये चीजों की मुलाकात करेंगे, इसे देखेंगे, काशी के सामर्थ्य को जानेंगे मुझे विश्वास है कि काशी के tourism को भी बढ़ावा मिलेगा। काशी के इस कला-कौशल्य को भी ताकत मिलेगी। और एक नये आर्थिक गतिविधि का एक केंद्र बनेगा।

मैं आज मेरे सभी बुनकर भाईयो बहनों को, मेरे सभी शिल्पकार भाईयो बहनों को ये सौगात देते हुए हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं। और उनकी प्रगति के लिए शुभकामनाएं देता हूं। भाईयो बहनों हर समस्या का समाधान आखिर विकास में ही है। पहले ऐसी सरकारें आकर गई जिनको विकास से नफरत जैसा माहौल था उनके लिए सरकारी तिजोरी, चुनाव

जीतने के कार्यक्रमों में तबाह हो जाती थी। हमारी कोशिश ये है कि विकास की वो बातें साकार हों ताकि गरीब से गरीब की जिंदगी में बदलाव लाने का अवसर तैयार हो। हमारे गरीबों का सशक्तिकरण हो अगर हमारे गरीब के हाथ में कुछ सामर्थ्य आ जाए, कोई अर्थव्यवस्था आ जाए। उसको काम करने का अवसर मिल जाए तो मुझे विश्वास है हिन्दुस्तान का कोई भी गरीब, गरीब नहीं रहना चाहता। आप किसी भी गरीब से बात कीजिए। उनसे पूछिए कि आपने जैसी जिंदगी गुजारी क्या आप अपने बच्चों को भी ऐसी ही जिंदगी जीने के लिए पंसद करेंगे क्या? गरीब से गरीब कहता है कि मेरे नसीब में जो था मैंने भुगता, मेरे बाप-दादा ने जो मुझे जो दिया था मैंने तो मेरी जिंदगी काट दी लेकिन मैं नहीं चाहता हूं कि मेरी आने वाली पीढ़ी ऐसी गरीबी की जिंदगी जीने के लिए मजबूर हो जाए। हर गरीब के दिल में अपने संतानों को विरासत में गरीबी देने की इच्छा नहीं है वो भी चाहता है कि मैं ऐसी जिंदगी जीऊं ताकि मेरे संतानों को विरासत में गरीबी न मिले। वो अपने पैरों पर खड़े हों मेहनत करें, मजदूरी करें, काम करें, नया काम सीखें लेकिन सम्मान के साथ जीने वाला मैं उनको बनाना चाहता हूं। हर गरीब का जो सपना है अपने भावी पीढ़ी के लिए मेरी सरकार का भी वही सपना है जो मेरे हर गरीब की भावी पीढ़ी के लिए सपना है। और इसलिए हम सारी योजनाएं समाज के हर तबके में सशक्तिकरण आए अपने पैरों पर खड़े रहने का सामर्थ्य आए उस दिशा में प्रयास कर रहे हैं। इस भू-भाग में विशेषकर के उत्कर्ष बैंक के द्वारा इस काम को बल दिया जा रहा है। मैं उनको बधाई देता हूं कि जिस समर्पण भाव से हमारे गोविंद जी और उनकी टीम इस काम में लगी है मैं बधाई के पात्र है।

भाईयो बहनों काशी में आज एक वाटर एम्बुलैस का भी लोकार्पण हुआ है। जल शव वाहनी का भी लोकार्पण हुआ है। जब मैंने पहली बार जल शव वाहनी का विचार रखा था तो कई लोगों को आश्चर्य हुआ था। मैंने कहा कि काशी के ट्रेफिक की समस्या और शमशान यात्रा में जुड़े हुए लोगों की समस्या उसका निकार करने के लिए हमें पानी के मार्ग का भी उपयोग करना चाहिए, जलमार्ग का भी उपयोग करना चाहिए। हमारे जलमार्ग में भी एक ताकत है। उसको आर्थिक विकास से जोड़ना हमारे जलमार्ग को सामान्य मानवी सुविधाओं से जोड़ना, टूरिस्ट के नाते जो गतिविधिया होती हैं उसे ओर अधिक आगे बढ़ाना। उस दिशा में हमने कई प्रयास शुरू किए हैं। उसी के तहत आज इसका भी लोकार्पण हो रहा है।

बनारस के मेरे प्यारे भाईयो बहनों आपको मालूम है जब मैं बनारस में चुनाव लड़ने के लिए आया था तो उसके साथ-साथ मैं बड़ोदा में भी चुनाव लड़ रहा था। और बड़ोदा ने भी मुझे भारी मतों से विजयी बनाया था। बनारस ने भी मुझे भारी मतों से विजयी बनाया था। लेकिन जब एक सीट छोड़ने की बात आई तो मैंने सोचा कि बड़ोदा को आगे बढ़ाने के लिए बहुत सारे साथी मेरे वहां हैं। बड़ोदा की प्रगति के लिए वो कोई कमी नहीं रखेंगे। लेकिन काशी के लिए अगर मैं अपना समय खपाता हूं तो शायद मेरे जीवन का संतोष हो। और इसलिए मैंने काशी की सेवा करने का चुना लेकिन आज मुझे खुशी है कि बड़ोदरा और बनारस को जोड़ा जा रहा है। कि बड़ोदरा और बनारस महामना एक्सप्रेस से जुड़ रहे हैं। आज यहां से बड़ोदा से महामना एक्सप्रेस का आरंभ हुआ। बड़ोदा से सूरत होते हुए ये महामना एक्सप्रेस बनारस पहुंचेगी। गुजरात में से Textile सबसे पहले अहमदाबाद से चलता हुआ ये Textile उद्योग बनारस में आया। आज फिर से महामना एक्सप्रेस के द्वारा बड़ोदा वो भी एक संस्कृति नगरी है। वे भी एक विद्या का धाम है। बनारस भी संस्कृति नगरी है, विद्या का धाम है। दोनों को जोड़ना और वाया सूरत जो textileका धाम बना हुआ है। एक ऐसी ये रेल की व्यवस्था जिसका सीधा संबंध पूर्वी उत्तर प्रदेश के सामान्य नागरिकों के साथ तो है ही है लेकिन इसका संबंध आर्थिक गतिविधि के साथ ज्यादा है। मैं भारत के रेल मंत्रालय को हमारे रेल मंत्रालय पीयूष जी अभी बड़ोदा से महामना एक्सप्रेस की विदाई कर रहे थे और सूरत में इसी धरती की संतान हमारे रेल मंत्री श्रीमान मनोज सिन्हा जी सूरत से उसकी विदाई कर रहे हैं। एक अदभूत संयोग आज इस महामना एक्सप्रेस के लोकार्पण का भी बना है। भाईयो बहनों मैं आपका लंबा समय लेना नहीं चाहता। लेकिन आज देश तेज गति से प्रगति कर रहा है। गरीब और मध्यम वर्ग के कल्याण को केंद्र में रख कर के कर रहा है। अनेक साहसपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। बीस-बीस पच्चीस-पच्चीस साल से लटके हुए मुद्दों का निपटारा बड़ी हिम्मत के साथ किया जा रहा है। बड़ी हिम्मत के साथ निर्णय किए जा रहे हैं, फैसले किए जा रहे हैं। और उसका परिणाम आज पूरी दुनिया देख रही है। कि भारत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। भारत बदल रहा है। हमें पूर्वी उप्र को भी बदलना है। हमें पूर्वी भारत को भी बदलना है। देश की अर्थव्यवस्था में जैसे पश्चिमी की ताकत है वैसी पूर्व की ताकत बने उस दिशा में हम काम कर रहे हैं। आज की ये योजनाएं एक हजार करोड़ रुपयों के ये प्रोजेक्ट मुझे विश्वास है कि यहां के आर्थिक जीवन में बदलाव लाने के लिए, यहां के सामाजिक जीवन में बदलाव लाने के लिए, यहां के infrastructure में बदलाव लाने के लिए एक बहुत बड़ी ताकत के रूप में काम आएंगे। मैं फिर एक बार उप्र में योगी जी के नेतृत्व में जो अनेक गतिविधिया तेज गति से चल रही हैं। छः महीने के अल्पकाल में योगी जी ने जो कमाल करके दिखाया है। मैं उनको हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

अतुल तिवारी/शाहबाज़ हसीबी/बाल्मीकि महतो/ममता

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

17-सितम्बर-2017 18:20 IST

सरदार सरोवर बांध देश को समर्पित करने के बाद प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ (17.09.2017)

भारत माता की जय।

भारत माता की जय।

विशाल संख्या में पधारे हुए मेरे प्यारे भाइयो और बहनों।

दभोई बहुत बार आया; कभी बस में आता था, कभी स्कूटर पर आता था, कभी कार्यकर्ताओं की मीटिंग लेता था, कभी जनसभा को संबोधित करता था। न जाने कितनी-कितनी यादें आप सबके साथ जुड़ी हुई हैं। लेकिन दभोई में ऐसा विराट दृश्य पहले कभी नहीं देखा। ये विराट जनसागर माँ नर्मदा की भक्ति का जीता-जागता प्रतीक है।

आज विश्वकर्मा जयंती है। भारत में सदियों से जो हाथ से काम करते हैं, पसीना बहाते हैं, श्रम करते हैं, निर्माण का कार्य करते हैं; technician हो, इंजीनियर हो, मिस्त्री हो, मिट्टी का काम करने वाले हों, चूने और सीमेंट का काम करने वाले हों, जो भी स्थापत्य से जुड़े हुए कामों से जुड़ा है, उन सबको भारत में विश्वकर्मा के रूप में देखा जाता है; आज ऐसे विश्वकर्मा की जयंती का पर्व है। और इसलिए इससे बड़ा कोई उत्तम संयोग नहीं हो सकता है कि जब विश्वकर्मा जयंती पर विश्वकर्मा के उपासक, जिन-जिन लोगों ने इस Sardar Sarovar Dam का निर्माण किया है; उन सबके उस परिश्रम का पुण्य स्मरण करते हुए, उनकी उस कठोर साधना का पुण्य स्मरण करते हुए, मां भारती को हिन्दुस्तान का एक बड़ा Sardar Sarovar Dam सौगात में देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

भाइयो, बहनों, यहां मुझे आज मेरे जन्मदिन की भी बहुत सारी बधाइयां दी जा रही हैं। जिन-जिन लोगों ने बधाई दी है, जिन-जिन लोगों ने शुभकामना व्यक्त की है, मैं उनका हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं और जन्मदिन के साथ-साथ जो भावनाएं प्रकट की हैं, उन भावनाओं के अनुकूल अपने-आप को निखारने का, बनाने का और पल-पल आपके सपनों के लिए जीने के लिए मैं अपने परिश्रम की पराकाष्ठा करने में कोई कमी नहीं रखूंगा। जिऊंगा तो आपके सपनों के लिए, खपूंगा तो भी आपके सपनों के लिए, और आपके सपने साकार हों, इसके लिए सवा सौ करोड़ देशवासियों की शक्ति जुटा करके एक नए भारत, एक New India, उसको पा करके रहना है।

एक गांधी, दुबले-पतले गांधी, साबरमती के आश्रम में साधना करते-करते देशवासियों को आजादी के लिए जोड़ सकते हैं तो माँ नर्मदा के आशीर्वाद से, साबरमती के आशीर्वाद से, देश के वीर पुरुषों के त्याग-तपस्या के आशीर्वाद से, इस देश के महापुरुषों की साधना के आशीर्वाद से, सवा सौ करोड़ देशवासी, आजादी के 75 साल होने पर एक नए भारत का निर्माण बनाने में कोई कमी नहीं रखेंगे, ये मेरा पूरा-पूरा विश्वास है।

भाइयो, बहनों, ये Sardar Sarovar Dam ..आज भारत के लौहपुरुष, सरदार वल्लभ भाई पटेल की आत्मा जहां भी होगी, हम सब पर ढेर सारे आशीर्वाद वो हम पर बरसाती होगी। दीर्घदृष्टा किसको कहते हैं? 71 साल पहले, आजादी के पहले, मेरे भी जन्म से पहले, हम में से कईयों के जन्म से पहले, सरदार पटेल साहब ने Sardar Sarovar Dam का सपना देखा था।

देश आजाद हुआ, मैं आज बड़े विश्वास के साथ कहना चाहता हूं कि दो महापुरुष अगर कुछ और साल जीवित रहे होते तो ये Sardar Sarovar Dam 60-70 के दशक में ही बन करके, ये पश्चिम के सारे राज्य सुजलाम, सुफलाम बन गए होते, हरे-भरे हो गए होते। हिन्दुस्तान के अर्थजगत को एक अभूतपूर्व सामर्थ्य देने का सौभाग्य पश्चिम के इन राज्यों को मिला होता। वे दो महापुरुष थे- एक, सरदार वल्लभ भाई पटेल, जिन्होंने नर्मदा नदी के महात्म्य को, सामर्थ्य को, गुजरात की आवश्यकता को, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान के जीवन को, एक मां नर्मदा कैसे बदल सकती है, इसका सपना संजोया था, दीर्घ-दृष्टि से उस project की कल्पना की थी। और दूसरे- दूसरे महापुरुष थे, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर। जिन लोगों को बाबा साहेब अम्बेडकर का अध्ययन करने का अवसर मिला है, वो देख सकते हैं कि भारत में जलक्रांति के लिए, जलशक्ति के लिए, waterways के लिए, सामुद्री सामर्थ्य के लिए, मंत्री-परिषद के अपने अल्पकाल में भी जितनी योजनाएं,

जितनी कल्पनाएं, पूज्य बाबा साहेब अम्बेडकर ने रखी थीं, शायद ही कोई एक सरकार इतना काम सोच भी सकती है, जो काम बाबा साहेब अम्बेडकर ने सोचा था।

अगर ये दो महापुरुष कुछ साल ज्यादा जीवित रहते, हमें उनकी सेवाओं का लाभ कुछ वर्ष अधिक मिला होता, तो मेरे प्यारे देशवासियों आज बाढ़ के कारण जो प्रदेश तबाह हो जाते हैं, सूखे के कारण जहां का किसान मर रहा है, ये सारी समस्याओं से देश बाहर निकल आता और देश प्रगति की नई ऊंचाइयों को पार कर लेता। लेकिन ये हमारा दुर्भाग्य रहा कि हमें इन दोनों महापुरुषों को बहुत पहले खो देना पड़ा। आज ये Sardar Sarovar Dam भारत को समर्पित हो रहा है, सवा सौ करोड़ देशवासियों को समर्पित हो रहा है, गांधी और सरदार की धरती से समर्पित हो रहा है। जिस धरती पर बाबा साहेब अम्बेडकर की जिंदगी में एक नया बदलाव आया था, गायकवाड़ के कारण; उस धरती से समर्पित हो रहा है। देश की एक नई ताकत का ये प्रतीक बनेगा, इस विश्वास के साथ आज इन सभी महापुरुषों को, उनका स्मरण करते हुए, ये भव्य-दिव्य योजना आप सबके चरणों में समर्पित करता हूं, देशवासियों को समर्पित करता हूं, मां भारती को समर्पित करता हूं।

भाइयो, बहनों, योजनाएं बनना, योजनाएं पूरी होना बहुत स्वाभाविक होता है लेकिन शायद हिन्दुस्तान में जितनी तकलीफें माँ नर्मदा को झेलनी पड़ीं, इस योजना को झेलनी पड़ीं, दुनिया की कोई ताकत ऐसी नहीं थी, जिसने इसमें रुकावटें पैदा न की हों। World Bank है, फैसला कर लिया, Sardar Sarovar Dam के लिए पैसे नहीं देंगे। भारत के लिए हजारों करोड़ रुपये की इतनी बड़ी योजना आर्थिक मदद के बिना हो नहीं सकती थी। और उसी World Bank ने कहा कि पर्यावरण के विरोधी हैं, गलत प्रचार की आंधी चलाने वालों ने इतना झूठ फैला कर रखा था। भाइयो, बहनों हमने भी ठान ली थी, World Bank और No World Bank, हम भारत के पसीने से Sardar Sarovar Dam बना के रहेंगे, और आज- आज इसे बना दिया।

जिस World Bank ने environment के नाम पर, पर्यावरण के नाम पर, Sardar Sarovar Dam को मदद करने से इंकार कर दिया था। 2001 में कच्छ के भूकंप के बाद उसका पुनर्निर्माण हुआ, और वो eco friendly, environment friendly development हुआ, उसी World Bank को गुजरात के भूकंप के काम को World Bank का environment का सबसे बड़ा award, Green Award, गुजरात को देने के लिए मजबूर होना पड़ा था।

भाइयो, बहनों, अगर एक बार हिन्दुस्तान के लोग संकल्प कर लेते हैं तो दुनिया की हर चुनौती को चुनौती देने का सामर्थ्य ये देश रखता है। और उसी का परिणाम है। Sardar Sarovar Dam का काम, कभी-कभी हमारे देश में राज्यों की शक्ति, राज्यों की चुनौती, इसकी बहुत चर्चा होती रहती है, comparative study होता रहता है। लेकिन पश्चिम भारत के हम कुछ राज्य, अगर आजादी के बाद का इतिहास देखा जाए, हम ज्यादा से ज्यादा इन इलाकों में विकास के अंदर सबसे बड़ी कोई रुकावट बना है तो पानी बना है। पानी का अभाव, पशु हो, इंसान हो, अपना खेत-खलिहान, गांव छोड़ करके 200-200, 400-400 किलोमीटर दूर चले जाते थे, जहां पानी मिल जाए; वहीं पर 4-6 महीना गुजारा करके जब वर्षा होती थी तो वापस आते थे। कभी किसी ने इस दर्दनाक जिंदगी की कल्पना की है? बिना पानी के जिंदगी कैसी होती है?

जब मैं गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में काम कर रहा था, सीमा पर जाना मेरा स्वभाव था। बीएसएफ के जवान हों, सेना के जवान हों; मैं दिवाली उनके बीच मनाया करता था। जब एक बार गुजरात की सीमा पर जा करके बीएसएफ के जवानों के साथ बैठा तो बीएसएफ के जवान पीने के लिए पानी, सैंकड़ों camel, सैंकड़ों ऊंट, पानी ढो करके लाते थे तब ये रेगिस्तान में देश की सुरक्षा करने वाले हमारे जवानों को पीने का पानी मिलता था। उस दर्द को मैंने भलीभांति अनुभव किया था। और जब Sardar Sarovar Dam का काम आगे बढ़ा तो मन में एक इच्छा जगी, कि मैं भारत और पाकिस्तान की सीमा पर मेरे बीएसएफ के जवान, जो बिना पानी रेगिस्तान में खड़े हैं, मैं नर्मदा का पानी उन तक ले जाऊंगा। पाइप लाइन लगाई 700 किलोमीटर दूर। कई वर्षों से, दशकों से ऊंट जब पानी ढो करके लाता था, तब मेरे देश की रक्षा करने वाला जवान पानी को पाता था। जिस दिन मैं पानी ले करके, नर्मदा का पानी ले करके पहुंचा, मैंने बीएसएफ के जवानों के चेहरे पर वो खुशी देखी थी, वो engineering miracle था कि हमें यहां से पानी उठा करके 700 किलोमीटर दूर नर्मदा का पानी पहुंचाया, और पहुंचाने के लिए पानी को कभी-कभी तो 60 मंजिला ऊंचाई तक उठा करके ले जाना पड़ा, फिर नीचे ले आए।

भाइयो, बहनों, पूरा Sardar Sarovar Dam एक engineering miracle है। Canal network engineering miracle है। और मैं तो देश के architects को, engineers को, structure design करने वाले civil engineer, electrical engineer, इन सभी विद्यार्थियों से आग्रह करूंगा कि वो अपने अध्ययन में एक project के रूप में इसको लें। भविष्य में निर्माण कार्य के लिए कैसी नई दिशा मिलती है, उनको अवसर मिलेगा।

भाइयो, बहनों ये गुजरात के नहीं, ये मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, इनके करोड़ों किसानों के भाग्य को बदलने वाला project है। गुजरात ने इसको lead लिया और भाइयो, बहनों हमने कोशिश की, दुनिया भर की हमारी आलोचना करने के प्रयास हुए, अनाप-शनाप झूठे आरोप लगाए गए। माँ नर्मदा की इस योजना को रोकने के लिए ढेर सारे षडयंत्र हुए। लेकिन

हमने हमेशा ये करके रखा था कि हम इसको राजनीतिक विवादों का विषय नहीं बनने देंगे। ये 21वीं सदी की भाँवी पीढ़ी के भाग्य का निर्णय करने वाले हैं, इसलिए राजनीति की भाषा के साथ हम अपने-आपको नहीं जोड़ेंगे।

भाइयो, बहनों मैं आज भी उसका पालन करता आया हूँ। कितनी मुसीबतें हुई हैं, किस-किस ने मुसीबत की हैं, मेरे पास कच्चा चिट्ठा है, लेकिन वो राजनीति मुझे करनी नहीं है, उस रास्ते पर मुझे जाना नहीं है।

मैंने देखा है गुजरात के साधु-महात्मा, आध्यात्म का संदेश देना जिनके जीवन का काम था, लेकिन जब-जब सरदार सरोवर नर्मदा योजना की बात आई, मैंने देखा है गुजरात का संतगण, उसने अगुवाई की लड़ाई लड़ी, अनशन पर बैठे। इतना ही नहीं जब World Bank ने पैसे देने से मना कर दिया था, तो गुजरात के मंदिरों से भी Sardar Sarovar Dam बनाने के लिए पैसे दिए गए थे और तब जा करके ये Sardar Sarovar Dam बना है। और इसलिए ये किसी एक दल का, किसी एक सरकार का कार्यक्रम है, ऐसा हमने कभी नहीं माना। ये कोटि-कोटि जनों का कार्यक्रम है, पानी लिए तरसते हुए लोगों के संकल्प का कार्यक्रम है, और ये पानी गुजरात की धरती को, सूखी धरती का है।

भाइयो, बहनों जीवन में कुछ पल होते हैं जो व्यक्ति के जीवन में बड़ी भावुकता से भर देते हैं। मेरे जीवन में भी माँ नर्मदा के लिए कुछ भी करना, ये भावुकता से भरा हुआ है। क्योंकि मैं देखता हूँ कि मेरी धरती माँ, ये सूखी-सूखी मेरी धरती माँ, पानी की बूंद के लिए तरसती हुई धरती माँ, उसको जब नर्मदा का पानी बेटा देता है, उस बेटे के लिए इससे बड़ी भावुक पल क्या हो सकता है? मेरे राज्य की कोटि-कोटि माताएं, बेटियां पढ़ाई छोड़ करके सर पर बर्तन ले करके, तीन-तीन किलोमीटर पीने का पानी लेने के लिए जाती थीं। 6 साल, 8 साल, 10 साल की बच्ची माँ को पानी लाने में मदद करती थी। पढ़ाई छोड़ देती थी। एक बेटे के नाते, आज जब ये माँ नर्मदा का जल उनकी मुसीबतों को मुक्त करता है, तो इन कोटि-कोटि माताओं के आशीर्वाद मुझ जैसे बेटे को मिलें, इससे बड़ा जीवन का भावुक पल क्या होगा?

वो अबोध पशु जो बोल नहीं पाते, मानव जाति की सेवा के लिए उनका शरीर काम आता है। वो अबोध पशु, पीने का पानी, खाने के लिए घास, चारा; इसको पाने के लिए 200-200 किलोमीटर पशु पैदल चले जाते थे। आज जब नर्मदा का पानी पहुंचेगा, हरा चारा मिलेगा, हरा चारा मेरा वो पशु खाएगा, अबोल पशु को पीने का पानी मिलेगा। अबोल पशु भी जब आशीर्वाद देता है तो भारत माँ के बेटे के रूप में इन कोटि-कोटि पशुओं के आशीर्वाद भी मेरे लिए भावना का सबसे बड़ा पल होना बहुत स्वाभाविक है।

भाइयो, बहनों मैं जन्मदिन मनाने वाले लोगों में से नहीं रहा। लेकिन जन्म दिन में और विश्वकर्मा जयंती हो, और कोटि-कोटि लोगों के पूरी शताब्दी के भाग्य का निर्माण होता हो तो ये पल, ऐसा पल इतने सालों में मेरे जीवन में कभी नहीं आया, जो आज गुजरात ने मुझे दिया है।

भाइयो, बहनों विकास की तो ये एक बहुत बड़ी मिसाल है। पंडित लोग इसको अध्ययन करेंगे, Concrete कितना उपयोग हुआ? कहते हैं कश्मीर से कन्याकुमारी और कंडला से कोहिमा, आठ मीटर चौड़ा Cement concrete का रोड बनाया जाए, हिमालय से समंदर तक और कंडला से कोहिमा तक आठ मीटर चौड़ा Cement concrete का रोड बनाया जाए, उसमें जितना concrete लगता है, इतना concrete इस project में लगाया है, भाई साहब। क्या कुछ नहीं करना पड़ा, और इसलिए भाइयो, बहनों, ये नर्मदा का पानी- ये पानी नहीं है, ये पारस है पारस। और जब पारस का plus लोहे से होता है तो लोहा भी सोना हो जाता है, वैसे ही ये पारस रूपी माँ नर्मदा का स्पर्श धरती के जिस कोने में होता है, वो स्वर्णिम बन जाती है, भाइयो, बहनों। और इसलिए भारत के स्वर्णिम भाग्य का काम ये नर्मदामयी पारस रूपी माँ के द्वारा होने वाला है ये मैं देख रहा हूँ।

भाइयों, बहनों, किसान का भला होगा, पीने का पानी मिलेगा, गुजरात में आर्थिक क्रांति आएगी। लेकिन हमारे देश में देखिए- पश्चिम भारत पानी के लिए तरसता है और पूर्वी भारत- उसको विकास के लिए बिजली चाहिए, गैस चाहिए। और आपने देखा है जब से हम दिल्ली सरकार में बैठे हैं, केंद्र में सेवा करने का आपने मौका दिया है। हमने भारत का संतुलित विकास हो, पश्चिम को पानी मिले, पूर्व को बिजली मिले, गैस मिले, ताकि मेरा पूर्व भी ताकतवर बने, मेरा पश्चिम भी ताकतवर बने और मेरी भारत माँ की दोनों भुजाएं सामर्थ्यवान बनें, उस योजना को ले करके हम काम कर रहे हैं।

भाइयो, बहनों, ये Sardar Sarovar Dam किसी एक राज्य का नहीं है। मुझे बराबर याद है जब राजस्थान को पानी दिया, Sardar Sarovar Dam से राजस्थान को पानी दिया, वसुंधरा जी उस समय मुख्यमंत्री थीं, भैरोसिंह शेखावत और जसवंत सिंह जी- भैरों सिंह जी भारत के उपराष्ट्रपति थे; वो मुझे मिलने आए। उन्होंने मुझे कहा था, भैरो सिंह जी और जसवंत सिंह जी ने कहा था कि मोदीजी आपको मालूम है, ये राजस्थान को पानी देने का मतलब क्या होता है? बड़े भावुक थे और बड़ी भावना से उन्होंने कहा, मोदीजी जरा इतिहास देख लीजिए। थोड़े से पानी के लिए सदियों पहले राज्यों के बीच तलवारें चलती थीं, लड़ाइयां होती थीं, राज्यों के राज्यों का पराजय हो जाता था, जय-विजय का इतिहास बन जाता था; और आपने कोई संघर्ष नहीं, कोई तनाव नहीं, कोई झगड़ा नहीं, कोई आंदोलन नहीं, सीधा सरदार सरोवर से नर्मदा का पानी राजस्थान

की सूखी धरती को दे दिया! बाइमेर, पाकिस्तान की सीमा तक पानी पहुंचा दिया? भाइयो, बहनों मैंने उन दो नेताओं की आंख में वो भावनाएं देखी हुई हैं। और मुझे खुशी है कि जब-जब ऐसे लोगों को शासन करने का मौका मिला है जिनके लिए दल से बड़ा देश है, तब-तब नर्मदा योजना ने प्रगति की है। जिनके लिए देश से बड़ा दल है, उस समय नर्मदा योजना को रुकावटें आई हैं।

आज ये Dam का काम पूरा हुआ है, मैं आदरपूर्वक मध्यप्रदेश की जनता का, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का आदरपूर्वक धन्यवाद करना चाहता हूं। आज ये योजना पूरी हुई है, इसके लिए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्रीमान देवेन्द्र फडणवीस, महाराष्ट्र की जनता, उनका मैं हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूं। आज ये योजना परिपूर्ण हुई है, मैं उन मेरे आदिवासी भाइयों, बहनों का आदरपूर्वक नमन करना चाहता हूं, जिन्होंने 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' अपना कुछ छोड़ना भी पड़ा तो छोड़ने के लिए आगे आए और उनकी तरफ एक आदर के भाव के साथ आने वाली भी सरकारें देखेंगी ये मुझे विश्वास है। उनके सुख-दुख की चिंता आने वाली भी सरकारें करेंगी, ये मुझे पूरा भरोसा है। मैं उन मेरे आदिवासी भाई-बहनों को नमन करता हूं जिनके त्याग के कारण, जिनके बलिदान के कारण आज ये भारत माँ, प्यासी मेरी भारत माँ, नर्मदा के जल से पुष्पित-पल्लवित होने जा रही है, इससे बड़ा जीवन का क्या सौभाग्य हो सकता है।

भाइयो, बहनों, हमारे देश में भारत को एक बनाने का भगीरथ काम सरदार साहब ने किया। अगर सरदार साहब न होते तो देश कैसा बिखरा हुआ होता ये हम भली-भांति समझ सकते हैं। कश्मीर को छोड़ करके पूरे हिन्दुस्तान को एक करने का काम सरदार साहब के जिम्मे था, उन्होंने करके दिखाया। और आज हम एक भारत श्रेष्ठ भारत का सपना ले करके आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन आजादी के बाद इस महापुरुष को जिस रूप में देश को समझना चाहिए, जिस रूप में इस महापुरुष की देश की पीढ़ी को प्रेरणा मिलनी चाहिए, उसको किसी न किसी कारण से संभव नहीं हुआ।

मैं अपना पवित्र कर्तव्य मानता हूं कि हिन्दुस्तान की आने वाली पीढ़ियों में भी सरदार साहब का नाम अमर रहे, सरदार साहब का काम अमर रहे, सरदार साहब की प्रेरणा अमर रहे और कभी-कभी प्रतीकात्मक चीजें, वो प्रेरणा का कारण भी बनती हैं और उसी सपने को पूरा करने के लिए दुनिया में, आप मुझे भली-भांति जानते हैं, मुझे छोटा काम जमता ही नहीं है। न मैं छोटा सोचता हूं, न मैं छोटा करता हूं। सवा सौ करोड़ का देश जब मेरे साथ हो, सवा सौ करोड़ देशवासियों के सपने हों, तो मुझे छोटे सपने देखने का हक भी नहीं है भाई। और इसलिए सरदार साहब को statue बनाने का निर्णय किया तो मन में ठान ली थी, ये दुनिया में सबसे ऊंचा होगा, दुनिया में सबसे ऊंचा। कुल मिलाकर करीब 190 मीटर और प्रतिमा होगी 182 मीटर। अमेरिका में जो statue of liberty है, उससे ये statue of unity, हमारे सरदार साहब की प्रतिमा अमेरिका के statue of liberty से दो गुना ऊंची होगी, double होगी भाई।

आप कल्पना कर सकते हैं, दुनिया भर से लोग statue of liberty देखने जाते हैं। हमारे यहां दक्षिण गुजरात में जाओ तो सापूतारा है, सौराष्ट्र में जाओ तो गिरि के lion हैं, कच्छ में जाओ तो बड़िया सा रेगिस्तान है, उत्तर में जाओ तो मां अम्बे है, थोड़ा आगे जाओ तो आबू हैं। लेकिन ये एक मेरा इलाका ऐसा है कि जहां tourism की संभावनाएं हैं और इसलिए भाइयो, बहनों ये सरदार पटेल का statue, आप देख लेना मेरे शब्द लिखके रखना, रोजाना लाखों लोग यहां आते होंगे, लाखों लोग आते होंगे, tourism का एक ऐसा सेंटर बन जाएगा यहां के हजारों गांवों की रोजी-रोटी का वो कारण बनने वाला है; ये सपना मैंने देखा हुआ है।

और यहीं पर देश की आजादी के लिए मर-मिटने वाले लोग, कुछ लोगों को लगता है मुट्ठीभर लोगों ने ही देश को आजाद किया? मुट्ठीभर लोगों ने ही बलिदान दिए, और गीत भी कुछ ही लोगों के गाए गए। देश की आजादी के इतिहास को भुला दिया गया है। देश के लिए मर मिटने वालों को याद करने में कुछ लोग कतराते रहे हैं। 1857 से 1947 तक मेरे आदिवासियों ने हर हुकूमत के सामने लड़ाई लड़ी है, बलिदान दिए हैं। एक साथ सौ-सौ आदिवासियों को फांसी पर लटका देते थे अंग्रेज, वे झुकने को तैयार नहीं थे। आजादी की जंग के अंदर हिन्दुस्तान के हर राज्य में, जहां-जहां आदिवासी हैं, आजादी के जंग में बलिदान देने में कभी वो पीछे नहीं रहे हैं। जंग की शुरुआत करने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई है। मेरे देश की भावी पीढ़ी को पता चलना चाहिए कि मेरे आदिवासी भाई जंगलों में रहे, पहाड़ों में रहे, पहनने के लिए कपड़े नहीं थे, लेकिन मां भारती की आजादी के लिए बलिदान देने में कभी पीछे नहीं रहे। उनका सम्मान होना चाहिए, उनका गौरव होना चाहिए, भावी पीढ़ी को उनकी प्रेरणा मिलनी चाहिए। और इसलिए हिन्दुस्तान में जहां-जहां, जिस-जिस राज्य में आदिवासियों ने 1857-1947 तक आजादी के जंग में जो कुछ भी किया है, हमारी सरकार उसका museum बनाना चाहती है।

देश को भी भावी पीढ़ी को हमारे आदिवासियों के लिए गौरव होना चाहिए, अभिमान होना चाहिए। माँ भारती के लिए मरने वाले उनके पूर्वजों के प्रति श्रद्धा भाव होना चाहिए और इसलिए हिन्दुस्तान के सभी राज्य, जहां-जहां आदिवासियों के पराक्रम की गाथा है, वहां ऐसा एक आधुनिक, digital technology वाला, virtual museum बनाना है। आज उसकी शुरुआत, शिलान्यास करने का मुझे अवसर गुजरात की धरती से मिला है। धीरे-धीरे हिन्दुस्तान के सभी राज्यों में ये

पनपेगा। मैं इसे मेरे जीवन का बड़ा सौभाग्य मानता हूँ और मेरे उन वीर आदिवासियों को भगवान बिरसा मुंडा से ले करके हमारे जाम्बुघोडा के नायका समाज तक के, हर किसी के प्रति श्रद्धा और आदर का नमन करते हुए आज इसका शिलान्यास भी करने का मुझे सौभाग्य मिला है और आने वाले समय में इसका भी लाभ मिलेगा।

ये पूरा Sardar Sarovar Dam- water sports के लिए, adventure water sports के लिए, recreation के लिए, tourism के बड़े सेंटर के लिए, एक ऐसा ये जगह बनने वाली है, जो गुजरात की सबसे आर्थिक गतिविधि वाला केंद्र, ये कल तक जो जंगल थे, रोजी-रोटी कमाने के लिए शहरों में लोगों को भटकना पड़ता था, अब वो रोजी-रोटी यहां घर के सामने आएंगी, ये काम होने वाला है। बड़ोदरा से ले करके, भड़ूच से ले करके, रोड का निर्माण, रेल का निर्माण, तेज गति से चलने वाली गाड़ियों का निर्माण; ताकि tourist लोग वहां आए, आराम से आए और हिन्दुस्तान का एक महत्वपूर्ण tourist centre बने। एक आगरा का ताजमहल सदियों पहले बना, आज भी हम दुनिया में सिर्फ एक आगरा का ताजमहल दिखाते रहते हैं। भाइयो हिन्दुस्तान के हर कोने में दुनिया को देने के लिए, दुनिया को दिखाने के लिए बहुत कुछ है। ये Sardar Sarovar Dam ये सरदार पटेल का statue, ये आदिवासियों के पराक्रम की गाथा गाने वाला museum, ये देश का और दुनिया के टूरिस्टों को आकर्षण का केंद्र बनने वाला है।

ऐसे इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आज शुभारंभ हो रहा है। Dam का लोकार्पण हो रहा है। मैंने आज सरदार साहब का statue के काम को भी detail में उसका परीक्षण किया। जिस गति से काम चल रहा है, जिस प्रकार की technology का उपयोग हो रहा है, सीखने-समझने जैसा लगा।

मैं सचमुच में आज देशवासियों को ये अमूल्य तोहफे देते हुए बहुत ही गर्व की और संतोष की अनुभूति करता हूँ। मैं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री को एक और काम के लिए बधाई देना चाहता हूँ। पिछले दिनों, क्योंकि सबको मालूम होगा कि नर्मदा मईया पहाड़ से नहीं आती है, जंगलों से आती है। और इसलिए नर्मदा मईया को जंगलों को हरा-भरा रखने का भी अभियान मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री ने उठाया। करीब 8-9 महीने पैदल यात्रा चली। करोड़ों वृक्ष लगाने का अभियान चला। इन करोड़ों वृक्षों के माध्यम से उन्होंने आने वाली शताब्दी तक नर्मदा का पानी कम न हो, इसका बीड़ा उठाया है। मैं मध्यप्रदेश की जनता का, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री का, इस पवित्र कार्य करने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ। नदी बचाने का काम शायद पहले इस देश में ऐसा नहीं हुआ है। आज मैंने देखा है, हमारे देश के कई संत, कई संस्थाएं नदी बचाने का अभियान चला रही हैं, त्याग-तपस्या के साथ चला रही हैं। पर्यावरण की रक्षा के लिए देश में जो प्रयास हो रहे हैं, ये प्रयास भी हृदय से अनेक-अनेक अभिनंदन के पात्र हैं और इसलिए इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए भी मैं हृदय से सबको बधाई देता हूँ।

भाइयो, बहनों, कल मैं रात को जब दिल्ली से चला तब एक दुखद समाचार मिले, हमारे देश के एक वीर सैनिक, वीर सेनापति और मुझे जब-जब मैं मिला, हमारे देश के मार्शल, श्रीमान अर्जुन सिंह, 1965 की लड़ाई जिनके नाम से जुड़ गई है, ऐसे एक वीर योद्धा, 98 की उम्र और अभी कुछ दिन पहले एक कार्यक्रम में हम मिले, पूरा uniform पहन करके आते थे। Wheel chair पर आना पड़ता था, और वो देखते ही खड़े हो करके salute करते थे। मैं उनको प्रार्थना करता था, मार्शल आपने खड़ा नहीं होना चाहिए। लेकिन वो एक ऐसे soldier थे, discipline उनकी रगों में ऐसी थी, वो ऐसे ही खड़े हो जाते थे।

कल जब उनको Heart attack आया, पता चला, मैं अस्पताल उनको मिलने चला गया। जज्बा वो ही था, spirit वो ही था, शरीर साथ नहीं दे रहा था लेकिन रगों में भरी पड़ी उस discipline की तड़पन नजर आती थी। ऐसे एक वीर योद्धा, वीर सैनिक, उनको हमने खो दिया है। मैं उनको आदरपूर्वक नमन करता हूँ। उनको श्रद्धांजलि देता हूँ। और उनके पराक्रम को ये देश हमेशा-हमेशा याद रखेगा, उनकी discipline को याद रखेगा, उनकी त्याग-तपस्या को याद रखेगा, मां भारती के प्रति उनके समर्पण को याद रखेगा, और आने वाली पीढ़ियां उनसे प्रेरणा लेते हुए मां भारती के लिए कुछ न कुछ करने का संकल्प करेंगी और 2022 में नया इंडिया बनाने की दिशा में सिद्धि प्राप्त करके रहेंगी।

इसी एक भावना के साथ मैं फिर एक बार गुजरात सरकार का धन्यवाद करता हूँ, गुजरात की जनता का धन्यवाद करता हूँ, इन चारों सरकारों का अभिनंदन करता हूँ, जिनका इस project में योगदान रहा है और बिजली घर-घर पहुंचाने में मां नर्मदा भी काम आ रही है, वो जमीन को भी सुखलाम, सुखलाम करेगी, हमारे घरों में भी उजाला फैलाएगी। ऐसी मां नर्मदा को नमन करते हुए आप सबसे मैं आग्रह करता हूँ, दो मुट्ठी बंद करके मैं बोलूंगा- नर्मदे, आप बोलिए, सर्वदे। आज मां नर्मदा है तो सब कुछ है।

नर्मदे - सर्वदे। पूरी ताकत से बोलिए,

नर्मदे - सर्वदे।

नर्मदे - सर्वदे। नर्मदे - सर्वदे।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बाल्मीकि महतो

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

20-अक्टूबर-2017 18:18 IST

उत्तराखण्ड के केदारनाथ में केदारपुरी पुनर्निर्माण परियोजना शिलान्यास समारोह में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूलपाठ

मेरे साथ पूरी ताकत से बोलिए, जय जय केदार।

देवभूमि उत्तराखंड का सभी भाई-बहनों ते मेरा सादर नमस्कार। बाबा केदार को आशीर्वाद सबु पर बनियो रहो, इन्ही कामना छै।

कल ही देश और दुनिया में दीपावली का पावन पर्व मनाया गया। इस दीपावली के पावन पर्व निमित्त देश और दुनिया में फैले हुए हमारे सभी बंधु-भगिनी को केदारनाथ की इस पवित्र धरती से अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं।

गुजरात जैसे कुछ राज्य हैं, जहां आज नववर्ष प्रारंभ होता है। नूतन वर्ष अभिनंदन, साल मुबारक। विश्वभर में फैले हुए वो सभी परिवार जो आज नूतन वर्ष का प्रारंभ करते हैं, उनको भी मेरी तरफ से नववर्ष की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। आप सबको नूतन वर्ष अभिनंदन, साल मुबारक। फिर एक बार बाबा ने मुझे बुलाया है। फिर एक बार खिंचता चला आया बाबा के चरणों में। आज फिर पुराने लोग मिल गए मुझे। उन्होंने जो कुछ मेरे विषय में सुना होगा, वो आज मुझे पुनः स्मरण करा रहे थे।

कभी ये गरुड़ चट्टी, जहां पर जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष बिताने का मुझे सौभाग्य मिला था। वो पल थे जब इस मिट्टी में रम गमाया गया था मैं। लेकिन शायद बाबा की इच्छा नहीं थी कि मैं उसके चरणों में जीवन व्यतीत करू और बाबा ने मुझे यहां से वापस भेज दिया। और शायद बाबा ने तय किया होगा एक बाबा क्या, सवा सौ करोड़ बाबा हैं देश में, कभी उनकी तो सेवा करो। और हमारे यहां तो कहा गया है- जन सेवा ही प्रभु सेवा है। और इसलिए आज मेरे लिए सवा सौ करोड़ देशवासियों की सेवा, यही बाबा की सेवा है, यही बट्टी विशाल की सेवा है, यही मंदाकिनी की सेवा है, यही गंगा मां की सेवा है। और इसलिए आज फिर एक बार यहां से संकल्पबद्ध हो करके, यहां से नई ऊर्जा को प्राप्त कर-करके, भोले बाबा के आशीर्वाद ले करके पूर्ण पवित्र मन से, दृढ़ संकल्प से 2022; भारत की आजादी के 75 साल; हर हिन्दुस्तानी का संकल्प, हर हिन्दुस्तानी के दिल में दुनिया में हिन्दुस्तान को सिरमौर पहुंचाने का इरादा, बाबा के आशीर्वाद से हर हिन्दुस्तानी में वो चेतना जगेगी। हर हिन्दुस्तानी उस संकल्प को पार करने के लिए जी-जान से जुटेगा।

इस संकल्प के साथ मैं सबसे पहले इस पवित्र धरती पर प्राकृतिक आपदा के जो शिकार हुए, देश के हर राज्य में से किसी ने किसी ने अपना देह यहीं पर छोड़ दिया और बाबा की धरती में वो रम गया। उन सभी आत्माओं को आज मैं आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूं। देश के सभी राज्यों के वो लोग थे। और उस समय मेरी स्वाभाविक संवेदनशीलता थी। मैं वैसे तो एक राज्य का मुख्यमंत्री था, किसी दूसरे राज्य में encroachment करने का ना मुझे हक है, न मैं ऐसा कभी सोच भी सकता हूं। लेकिन मैं अपने-आप को रोक नहीं पाया था। अच्छा किया, बुरा किया ये तो इतिहास तय करेगा। लेकिन उन पीड़ितों के लिए पहुंच जाना; मेरे मन को मैं रोक नहीं पाया था, मैं चला आया था।

और उस समय मैंने उस समय की सरकार से प्रार्थना की कि आप गुजरात सरकार और सरकार को केदारनाथ के पुनर्निर्माण का काम दे दीजिए, जैसा देशवासियों कस सपना होगा मैं पूरा करूंगा। जब कमरे में हम बैठे थे, तब उस समय के मुख्यमंत्री सहमत हो गए, सारे अफसर सहमत हो गए, उन्होंने कहा अच्छा है, मोदी जी अगर गुजरात जिम्मेदारी लेता है और मैंने खुशी में आ करके, बाहर निकल करके मीडिया के सामने भी मेरा संकल्प व्यक्त किया था। अचानक टीवी पर खबर आ गई कि मोदी अब केदारनाथ के पुनर्निर्माण की जिम्मेदारी ले रहा है। तो पता नहीं दिल्ली में तूफान मच गया। उनको लग रहा है ये गुजरात का मुख्यमंत्री अगर केदारनाथ भी पहुंच जाएगा, एक घंटे के अंदर ऐसा तूफान खड़ा हो गया कि राज्य सरकार पर दबाव आया और राज्य सरकार को अतिरिक्त रूप से घोषणा करनी पड़ी कि हमें गुजरात की मदद की जरूरत नहीं है, हम कर देंगे। ठीक है जी, जब दिल्ली में बैठे हुए लोगों को परेशानी होती है तो मैं क्यों किसी को परेशान करूं? मैं हट गया। लेकिन शायद बाबा ने ही तय किया था, ये काम इस बाबा के बेटे के हाथ से ही होना था।

और जब मैं यहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार बन गई, उत्तराखंड के लोगों ने भरपूर समर्थन किया, तो मेरा विश्वास पक्का हो गया कि बाबा ने तय कर लिया है कि ये काम मुझे करना ही पड़ेगा और इसीलिए कपाट खुलते समय मैं आया था, मन में कुछ संकल्प करके गया था और कपाट बंद होने से पहले यहां पहुंच गया हूं और बाबा के श्रीचरणों में फिर से एक बार निवेदन करता हूं कि केदारनाथ की भूमि को अनुकूल ऐसा भव्य पुनर्निर्माण करने का आज शिलान्यास हो रहा है। समय-सीमा में तीर्थ क्षेत्र कैसा होना चाहिए, यहां के पुरोहितों के लिए व्यवस्था कैसी होनी चाहिए, पंडितों की सभी आवश्यकताओं का ध्यान कैसे रखा जाए, उन्होंने जो मुसीबत झेली है उससे भी अच्छी शानदार जिंदगी उनको मिले, इसके लिए कैसा प्रबंध किया जाए; इसको मध्य-बिंदु रखते हुए इसके विकास की, पुनर्निर्माण की योजना-खाका तैयार है। लगातार मैं स्वयं मीटिंगें करता रहा, हर चीज को देखता रहा; design क्या होगी, architecture क्या होगा? हमारे जो धार्मिक architecture होता है, मंदिरों का architecture होता है, वो सारे विधि-विधानों के नियमों का पालन करते हुए पुनर्निर्माण कैसा होगा? इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए इसके विकास का चित्र खाका तैयार किया गया।

अब पुरोहितों को जो मकान मिलेंगे, एक प्रकार से three-in-one होंगे। नीचे जो यात्री आएंगे उनकी सेवा के लिए जो प्रबंध करना चाहिए, उसके लिए सारा प्रबंध रहेगा। ऊपर के मंजिले पर वो खुद रहेंगे, और उसके मंजिले पर जो पुरोहित हैं, उनके जो यजमान आते हैं, उनके यहां जो मेहमान आते हैं, उनके लिए भी रहने का प्रबंध होगा। 24 घंटे बिजली होगी, पानी होगा, स्वच्छता का पूरा प्रबंध होगा और इस पूरी सड़क को बहुत चौड़ा कर दिया जाएगा; और उसके बाद पुरोहितों के लिए अलग से व्यवस्था खड़ी की जाएगी।

बहुत बड़ी मात्रा में यात्रियों को आने के बाद कुछ उनको पूजा-प्रसाद लेना है, कुछ यहां तीर्थ की चीजें लेनी हैं, वो सब प्रबंध मिल जाए; उसकी व्यवस्था रखेंगे। पोस्ट ऑफिस हो, बैंक हो, टेलीफोन के लिए व्यवस्था हो, कम्प्यूटर का उपयोग करने के लिए व्यवस्था; वो सारा प्रबंध रहेगा।

यहां पर आज एक प्रकार से पांच परियोजनाओं का आरंभ हो रहा है। एक, जैसे मैंने कहा- इस पूरे मार्ग का चौड़ीकरण, RCC से बनाया जाएगा और सारी आधुनिक व्यवस्थाओं से जुड़ा हुआ होगा। जैसे ही यात्री चलना शुरू करेगा, जिस प्रहर में वो आया होगा उसी प्रहर का मंद स्वर मंदाकिनी के तट से वो संगीत को भी सुनता हुआ, भक्तिमय होता हुआ वो इधर की ओर चल देगा।

मंदाकिनी के घाट का भी retaining wall का भी निर्माण कार्य, वो भी। एक प्रकार से लोग जो यात्री आएँ उनको जा करके बैठने की सुविधा संबधित हो, कल-कल बहती नदी के स्वर को सुन पाएँ ऐसा प्रबंध हो। जैसा मैंने कहा है approach road, भव्य-दिव्य बनाने वाला approach road बनेगा। उसकी lightening की व्यवस्था भी वैसी ही रहेगी जैसे मंदाकिनी के पास retaining wall और एक घाट का निर्माण होगा, क्योंकि दोनों तरफ जलशक्ति का अनुभव होता है, जलस्रोत का अनुभव होता है। तो एक तरफ है मां सरस्वती; उसके भी retaining wall और उसके भी घाट का निर्माण, इसको किया जाएगा। और इसके पीछे भी काफी धन लगाया जाएगा।

और एक जो श्रद्धा का विषय रहा है, ढाई हजार साल पहले करेल की कागड़ी में जन्मा हुआ एक बालक सात साल की उम्र में घर छोड़कर निकल पड़ता है। हिमाचल, कश्मीर से कन्याकुमारी, मां भारती का भ्रमण करता है। हर भू-भाग की मिट्टी को अपने भाल पर लगाता हुआ, तिलक करता हुआ इस केदार पर पहुंचता है और आखिरी जीवन को भी यहीं पर समाहित कर देता है। जिस आदि शंकराचार्य के लिए एक पूरी चिंतनधारा भारत में सैंकड़ों वर्षों तक प्रेरणा देती रही, प्रभावित करती रही, उनका एक समाधि-स्थल; वो भी इस हादसे में नष्ट हो गया। उसकी डिजाइन पर अभी काम चल रहा है। मैं श्रद्धा और architecture को निमंत्रण देता हूं कि ऐसा भव्य दिव्य आदिशंकर को वो स्थान बने, उनका समाधि-स्थल बने, और वो भी ऐसे बने कि आदिशंकर का स्थान केदार से थोड़ा सा भी अलग हुआ; ऐसा अनुभव न करें। लेकिन यात्री को

आदिशंकर के पास जाते ही उस महान तपस्या की परम्परा के साथ एक आध्यात्मिक चेतना की अनुभूति हो; वैसी एक रचना हो, उस दिशा में काम चल रहा है। आज उसका भी शिलान्यास हो रहा है।

मैं जानता हूँ खर्च होगा लेकिन मेरा पूरा विश्वास है, अगर एक बार हिन्दुस्तान के यात्री श्रद्धा के भाव से तय करें तो जिस प्रकार का पुनर्निर्माण करना है, वैसा पुनर्निर्माण करने में धन की यह देश कभी कमी नहीं रखेगा, ये मेरी श्रद्धा है। और मैं देश की सरकारों को भी इसमें सहभागी होने के लिए निमंत्रण करूँगा। मैं corporate social responsibility के लिए भी, उद्योग जगत के लोगों को भी, व्यापार जगत के लोगों को भी इसमें हाथ बंटाने के लिए निमंत्रण दूँगा।

मैं JSW का आभारी हूँ, उन्होंने प्रारम्भिक काम के लिए जिम्मेदारी उठाना तय कर लिया है। लेकिन जो मेरे दिमाग में और सपने आते ही जाते हैं, नई-नई चीजें जुड़ती जाती हैं, और इसके लिए और भी CSR के लिए लोगों के लिए मैं आग्रह करूँगा।

जब इतना सारा धन यहां लगेगा, इतना सारा infrastructure का काम होगा, उसमें पर्यावरण के सारे नियमों का पालन किया जाएगा। यहां की रुचि, प्रकृति, प्रवृत्ति के अनुसार ही इसका पुनर्निर्माण किया जाएगा। उसमें आधुनिकता होगी लेकिन उसकी आत्मा वही होगी जो सदियों से केदार की धरती ने अपने भीतर संजोए रखा हुआ है; ऐसा पुनर्निर्माण करने की दिशा में इसका काम होगा।

मैं जब आया था यहां पर, कपाट खुलने के समय पर, इसके पीछे मेरे मन में एक इरादा बैठा कि मैं देश को एक संदेश देना चाहता था कि वो हादसे की छाया से हम बाहर निकलें। कभी घर से निकलते पहले सोचते हैं कि पता नहीं वहां अब व्यवस्थाएं बनी हैं कि नहीं बनी हैं। जा पाएंगे कि नहीं जा पाएंगे। इसलिए यात्रियों की संख्या कम हो गई थी। लेकिन मुझे खुशी है इस बार करीब साढ़े चार लाख से अधिक यात्री इतने कम समय में बाबा के चरणों में आए। फिर से एक बार यहां यात्रा में पुनः प्राण संचित हो गया है। और इसलिए अगली साल दस लाख से कम नहीं होगा, लिख करके रखिए। क्योंकि लोगों को विश्वास बन गया, संदेश पहुंच गया, टीवी पर सारे देश ने देखा और आज के इस कार्यक्रम से फिर से एक बार संदेश पहुंच जाएगा कि जब कपाट खुलेंगे, फिर से जब यात्रा प्रारंभ होगी, उसी ताकत के साथ फिर से एक बार यात्राओं का हुजूम चल पड़ेगा। फिर एक बार उत्तराखंड, जो हमारी देवभूमि है, उत्तराखंड जो हमारी वीरभूमि है, उत्तराखंड जो मेरी वीर माताओं की श्रद्धा व्यक्त करने के लिए इससे बढ़िया जगह नहीं हो सकती।

हमें हमारे देश के हिमालय की बड़ी विशेषताएं थीं। विकास के लिए इतनी संभावनाएं और हिमालय के हर भू-भाग में उसकी एक अलग चेतना है। अगर श्रीनगर में जाएं, हिमालय के इलाके में तो एक अनुभूति होती है, माता वैष्णवा देवी, और अमरनाथ जाएं तो दूसरी अनुभूति होती है। हिमाचल प्रदेश में वही हिमालय, शिमला, कुल्लू, मनाली चले जाएं एक अनुभूति होती है लेकिन उसी हिमालय की गोद में उत्तराखंड की धरती पर आते हैं तो एक दिव्य चेतना की अनुभूति होती है। वही हिमालय दार्जिलिंग में जाएं तो एक अनुभूति होती है, सिक्किम में चले जाएं तो एक दूसरी अनुभूति होती है। आप कल्पना कर सकते हैं एक ही हिमालय, वो ही हवा, वो ही पहाड़, वो ही बर्फ; लेकिन अलग-अलग भूभाग पर अलग-अलग चेतना की अनुभूति होती है।

मैं हिमालय की गोद में बहुत भटका हुआ इंसान हूँ। मैंने हर इलाके की चेतना को अलग से महसूस किया हुआ है। और इसलिए मैं इसको अपनी जुबान से इसलिए बता पा रहा हूँ। मैं नहीं जानता हूँ वैज्ञानिक laboratory में किसके किस तराजू से तौला जा सकता है लेकिन मैंने जिस तरह से हिमालय को अनुभव किया है, वो हिमालय दुनिया के लिए, अगर किसी को यहां की वन-संपदा में रुचि है, तो जीवनभर खोज करने के लिए विराट क्षेत्र खुला पड़ा है। किसी को adventure में रुचि है तो पूरा हिमालय दुनिया के हर adventurer को निमंत्रण देता है। किसी को यहां के जलस्रोत में रुचि है; दुनिया के हर जलस्रोत में interest रखने वाले लोगों को निमंत्रण देता है। जिसको यहां की जड़ी-बूटी में रुचि है, herbal medicine

में रुचि है, हिमाचल की, हिमालय की हर गोद में ऐसी प्रकृति पली हुई है कि वह एक नई चेतना का अनुभव करा सकती है और herbal medicine के use हैं जो यहां के गांव के लोग जानते हैं, मैंने देखा है अगर बिच्छू वनस्पति डंक मार दे गलती से काट जाए तो गांव का आदमी आकर तुरंत बताता है अरे रो मत, ये दूसरे वाली जड़ी-बूटी है, इधर लगा दो, ठीक हो जाएगा। पत्ती लगा देता है ठीक हो जाता है। और दोनों साथ-साथ होती हैं। क्या परमात्मा ने व्यवस्था रखी है। और इसलिए इसके भीतर में जितने जाएं, और इसलिए देहरादून के अंदर ये हमारी जो प्राकृतिक संपदा है भारत सरकार ने उसकी हिमालय संपदा के लिए, research के लिए एक बहुत बड़ा काम शुरू किया है जो आगे चलने वाले में बहुत बड़ा का होने वाला है।

हमारे हिमालय की गोद में organic farming पूरे विश्व के लिए एक बहुत बड़ी संभावना वाली जगह में देखता हूं। सिक्किम छोटा सा प्रदेश है। 6-7 लाख की आबादी है लेकिन 12-15 लाख टूरिस्ट आते हैं, और वहां जाने-आने के रास्तों की भी कठिनाई है, हवाई अड्डा भी नहीं है। अब मैं बना रहा हूं, बन जाएगा कुछ समय में। उसके बावजूद भी इतनी मात्रा में tourist आते हैं। सिक्किम ने पूरा राज्य आर्गेनिक बनाया है।

10-12 साल तक लगातार अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साधनों ने काम किया। सारे हिमालय के गोद में केमिकल fertilizer से मुक्ति, सारे हिमालयन राज्यों में दवाइयों से छुट्टी- वनस्पति की दवाइयां, खेत के अंदर दवाइयों का छिड़काव बंद। अगर 10-12 साल धैर्य से काम करें तो जिस हमारी पैदावार से एक रुपया मिलता है, दुनिया आपको एक डॉलर देने के लिए तैयार हो जाएंगे, ये organic farming की ताकत होती है।

मैं उत्तराखंड को निमंत्रण देता हूं। उत्तराखंड की सरकार को आग्रह करता हूं, मैं उत्तराखंड के अफसरान से आग्रह करता हूं कि बीड़ा उठाइए। उत्तराखंड को organic state बनाने का सपना ले करके चलें, 2022 का लक्ष्य हो, और अभी से काम लगे। Certify करने में शायद दस साल लग जाएंगे, उसके नियम होते हैं। लेकिन अगर एक बार तय कर लें, जैसे जन-जागृति लाएंगे, चीजें बदलेंगे। आप कल्पना कर सकते हैं आज पूरी दुनिया holistic health care की ओर चल रही है। और तब जा करके केमिकल की दुनिया से दूर हमारे खेत उत्पादन को ले जाएंगे तो हम मानव जाति की कितनी बड़ी सेवा करेंगे। हिमालय की ये ताकत, इसको भी आगे बढ़ाना है।

Tourism के लिए बहुत संभावना है। इसके आध्यात्मिक सामर्थ्य को जरा सा भी खरोंच नहीं आनी चाहिए। और उसके साथ tourism को develop किया जा सकता है। नए-नए क्षेत्र विकसित किए जा सकते हैं। प्रकृति की भी रक्षा हो, पर्यावरण की भी रक्षा हो और परमात्मा के प्रति श्रद्धा का भाव भी बना रहे।

हमारे यहां पहाड़ों में कहावत बड़ी पुरानी है। पहाड़ का एक स्वभाव होता है। पहाड़ की जवानी और पहाड़ का पानी कभी पहाड़ के काम नहीं हाता है। हमने बीड़ा उठाया है ये कहावत बदलने का। पहाड़ की जवानी पहाड़ को काम आनी चाहिए और पहाड़ का पानी भी पहाड़ को काम हाना चाहिए। उसी पानी से बिजली पैदा होनी चाहिए। उसी पानी पर adventure tourism चलना चाहिए। उसी पानी पर water sports चलना चाहिए। उसी पानी पर tourism के नए-नए क्षेत्र विकसित होने चाहिए और दुनियाभर की जवानी को निमंत्रण देने का सामर्थ्य उस पानी में हो और पानी जो कभी पहाड़ के काम नहीं आता था, वो पानी पहाड़ के लिए काम आ जाए। जो जवानी पहाड़ से उतर करके नीचे मैदानी तालुकाओं में चली जाती है। रोजी-रोटी की तलाश में हम पहाड़ों में वो ताकत पैदा करें ताकि हमारी जवानी को कभी पहाड़ छोड़ने की नौबत न आए। पहाड़ की जवानी पहाड़ के काम आ जाए, ये काम करने की दिशा में एक के बाद एक कदम भारत सरकार उठा रही है।

उत्तराखंड की सरकार भी इतने कम समय में, इतने महत्वपूर्ण फैसले लिए, इतने महत्वपूर्ण initiative लिए और उसी का परिणाम है कि आज विकास एक नई ऊंचाइयों की ओर आगे बढ़ रहा है। एक नया आत्मविश्वास पैदा हो रहा है।

उत्तराखंड के पास बहुत सामर्थ्य है। यहां discipline, यहां की रगों में है। कोई परिवार ऐसा नहीं है कि जिस परिवार में कोई फौजी न हुआ हो। कोई गांव ऐसा नहीं है जहां 250-300 सेवा निवृत्त फौजी न हों और जहां फौजी इतनी संख्या में हो वहां तो discipline काबिले दाद होते हैं। यात्रियों के लिए ये discipline एक बहुत बड़ा संबल होती है। टूरिस्टों के लिए ये discipline एक बहुत बड़ी ताकत होती है। इसको हमने परिचित करवाना चाहिए। इसके लिए हमने योजना बनानी चाहिए। निवृत्त हमारे फौजियों को उसके इस अनुभव का उपयोग करते हुए, टूरिस्टों में एक नया विश्वास पैदा करने के लिए हमने एक ऐसी व्यवस्था की रचना करनी चाहिए जो हमारे दूसरों के लिए एक बहुत बड़ा संबल बन सकती है। बहुत बड़ी संभावनाएं हैं। और उस संभावनाओं को ले करके उत्तराखंड का विकास, उत्तराखंड देश के लिए सबसे बड़ा आकर्षण का केंद्र बने, सबसे चहेता tourist destination बने, tourist के लिए तो उत्तराखंड, यात्री के लिए तो उत्तराखंड, adventure के लिए तो उत्तराखंड, उत्तम प्रकृति के लिए, प्रकृति की गोद में रहने वालों की इच्छा के लिए उत्तराखंड, संशोधन, आविष्कार करने वालों के लिए उत्तराखंड।

ये ताकत जिस धरती में है, मैं आप सबको निमंत्रण देता हूं कि आइए आज दीवाली के इन दिनों में और एक प्रकार से नव वर्ष के प्रारंभ में, हमारे यहां पूरा हिन्दुस्तान दीवाली के दिन पुराने बहीखाते पूरे करता है और नया बहीखाता शुरू होता है। आज एक विकास का नया बहीखाता शुरू हो रहा है। उस नए बहीखाते से हम विकास की गाथा प्रारंभ कर रहे हैं। नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए आगे बढ़ेंगे। मैंने आज भी कई और सुझाव दिए हैं। राज्य सरकार इसको दोबारा देखगी। फिर एक बार एकाध महीने में मैं दोबारा मिलूंगा। जिन चीजों को मेरे मन में और भी इस इलाके में करने के इरादे हैं, उसको भी बल दूंगा। लेकिन हम सबकी जिम्मेदारी है पर्यावरण की रक्षा करना। हम सबकी जिम्मेदारी है प्रकृति की रक्षा करना। अगर हम पर्यावरण की रक्षा करेंगे, पर्यावरण हमारी रक्षा करेगा, ये मैं गारंटी देता हूं। अगर हम प्रकृति की रक्षा करेंगे, प्रकृति हमारी रक्षा करेगी, ये मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।

सदियों का इतिहास गवाह है कि जब-जब प्रकृति की रक्षा हुई है जहां-जहां रक्षा हुई है वहां प्रकृति की तरफ से कोई कठिनाई नहीं आई है। जहां-जहां पर्यावरण की रक्षा हुई है, पर्यावरण को कभी कोई कठिनाई नहीं आई है। और ये वो धरती है जहां से हम लोगों को वो शक्ति दे सकते हैं।

हमने एक बीड़ा उठाया था, लकड़ी के चूल्हों से लोगों को मुक्ति दिलाकर जंगलों को काटने से बंद करने के लिए प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना से गरीब से गरीब परिवार में गैस का चूल्हा पहुंचाना, गैस का सिलेंडर पहुंचाना। पर्यावरण की रक्षा का बड़ा अभियान था। उत्तराखंड और भारत सरकार ने मिल करके उत्तराखंड में इस काम को बहुत बड़ी मात्रा में आगे पहुंचाया है।

अब दूसरा बीड़ा उठाया है। हिन्दुस्तान में आज चार करोड़ परिवार ऐसे हैं जिनके घर में बिजली का लट्टू नहीं है। आज भी 18वीं, 19वीं शताब्दी में जीने के लिए मजबूर हैं। ये 21वीं सदी है, गरीब से गरीब परिवार में भी बिजली का लट्टू जलना चाहिए कि नहीं जलना चाहिए? गरीब परिवार को भी रात को बच्चों को पढ़ना हो तो बिजली मिलनी चाहिए कि नहीं मिलनी चाहिए। गरीब को भी अगर आटे चक्की पर पिसवाने हैं, गेहूं अपना पिसवाना है, अनाज पिसवाना है; उसको 10 किलोमीटर जाना पड़े उसके बजाय अपने ही गांव में चक्की हो बिजली से चलने वाली चक्की हो उसका गेहूं पिसने का काम, बाजरा पिसने का काम होगा कि नहीं होगा? गरीब की जिंदगी को बदल लाने के लिए प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना से चार करोड़ परिवारों में घर के अंदर connection देने का मैंने बीड़ा उठाया है। उत्तराखंड में भी अभी भी हजारों परिवार हैं जिनके यहां मुझे बिजली पहुंचानी है।

मैं उत्तराखंड सरकार को निमंत्रण देता हूं, भारत सरकार के इस अभियान को आप उठा लीजिए। और राज्यों-राज्यों के बीच स्पर्धा हो, कौन राज्य सबसे पहले सौभाग्य योजना पूरी करता है? कौन राज्य सबसे पहले प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना पहुंचाता है? कौन राज्य सबसे ज्यादा tourism को आगे बढ़ाता है? आने वाले समय के लिए जो विकास के क्षेत्र हैं उसके

लिए राज्यों-राज्यों के बीच एक तंदुरुस्त स्पर्धा हो। मैं सभी हिमालयन स्टेट को स्पर्धा के लिए निमंत्रण देता हूँ। मैं देश के सभी राज्यों को निमंत्रण देता हूँ। आइए एक राज्य दूसरे राज्य के साथ तंदुरुस्त स्पर्धा करें। Healthy competition करें और विकास की नई ऊँचाइयों में आगे ले जाएं।

मुझे उत्तराखंड को इस बात के लिए बधाई देनी है- शौचालय, खुले में शौच से मुक्ति; पिछले दिनों मुझे बताया गया कि उत्तराखंड ने ग्रामीण क्षेत्र में शौचालय के काम को पूरा कर दिया है। अब गांव में किसी को भी खुले शौचालय में जाना नहीं पड़ रहा है। शहरों में काम चल रहा है। कुछ ही समय में शहर समेत पूरा उत्तराखंड खुले में शौचालय से मुक्त होने के लिए तैयारी कर रहा है।

अब तक काम में जो आपने गति दी है, इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। लेकिन मेरा आग्रह रहेगा कि इसको एक mission mode में चलाया जाए। नगरों में भी किसी को खुले में शौच जाने की मजबूरी न हो।

कुछ दिन पहले मैं उत्तर प्रदेश गया था। उत्तर प्रदेश में बड़ा बीड़ा उठाया योगीजी की सरकार ने। और उन्होंने अब शौचालय का नाम ही बदल दिया है। अब वो शौचालय को शौचालय नहीं कहते। शौचालय को संज्ञा नहीं करते। उन्होंने शौचालय के लिए नाम रख दिया है इज्जतघर।

मैं समझता हूँ जो मां-बहनों को खुले में शौच जाना पड़ता है वो इस बात को भलीभांति समझती हैं कि इज्जतघर का मतलब क्या होता है। हम भी इस इज्जतघर का अभियान चलाएं। माताओं-बहनों को इज्जत देने के लिए शौचालय अपने-आप में एक बहुत बड़ी सुविधा होती है। उनके स्वास्थ्य के लिए भी बहुत सुविधा होती है। और अभी यूनिसेफ ने सर्वे किया है। हिन्दुस्तान के दस हजार गांव का सर्वे किया। और जिन घरों में शौचालय बनाया था वो और जिन घरों में शौचालय नहीं था, वो। जो गांव शौचालय के संबंध में जागरूक थे वो और जो गांव शौचालय के संबंध में जागरूक नहीं थे, वो; उन सबका उन्होंने अध्ययन किया है, यूनिसेफ ने। United Nations की ये संस्था है और उन्होंने पाया कि शौचालय न होने के कारण भिन्न-भिन्न प्रकार की बीमारियाँ जो घर में आती हैं, और बीमारी के कारण बच्चा बीमार हो तो मां उसमें व्यस्त हो जाती है, बाप व्यस्त हो जाता है, बच्चा स्कूल नहीं जाता है। रोजी-रोटी कमाने के लिए पिता नहीं जा पाता है। मां बीमार हो गई तो पूरा घर बीमार हो जाता है। घर में कमाने वाला अगर बीमार हो गया तो आय बंद हो जाती है, पूरा परिवार भूखा मर जाता है। और ये सब देख करके उन्होंने सर्वे किया कि शौचालय अगर नहीं है तो बीमारी का जो खर्चा होता है और शौचालय बन जाता है तो यूनिसेफ वालों ने सर्वे करके निकाला है कि गरीब परिवार का बीमारी के पीछे 50 हजार रुपये का जो खर्चा बच जाता है, आप सोचिए अगर एक परिवार का साल का 50 हजार रुपया बच जाए, उस परिवार की जिंदगी में कितनी बड़ी ताकत आ जाएगी।

एक शौचालय जिंदगी बदल सकता है और इसलिए पूरे देश में जितनी श्रद्धा के साथ बाबा केदारनाथ का धाम का निर्माण करता है, उसी श्रद्धा के साथ मुझे हिन्दुस्तान के गरीबों को शौचालय बनाने का अभियान भी चलना है। मेरा देश तभी आगे बढ़ेगा। उस भाव को ले करके हम आगे चलें।

मैं फिर एक बार उत्तराखंड की सरकार को अभिनंदन करता हूँ, उनका धन्यवाद करता हूँ। और देशभर के चार धाम यात्रा पर आने वाले लोग, जिन्हें पता है हमने 12 हजार करोड़ के चार धाम को जोड़ने वाले नए road बनाने का काम आरंभ कर दिया है। आधुनिक connectivity की व्यवस्था आरंभ कर दी है।

अब ये केदारधाम इस प्रकार से बनेगा। मेरा केदारनाथ भव्य होगा, दिव्य होगा। प्रेरणा के लिए उत्तम स्थान बनेगा। ये सवा सौ करोड़ देशवासियों की श्रद्धा का केन्द्र बन रहा है। हर बच्चे का इरादा रहता है बूढ़े मां-बाप को कभी न कभी चार धाम की यात्रा कराऊंगा।

आज ये सरकार वो काम कर रही है जो सवा सौ करोड़ देशवासियों का सपना है; उनको पूरा करने के लिए काम कर रही है। काम उत्तराखंड की धरती पर हो रहा है लेकिन काम हिन्दुस्तान के जन-जन के लिए हो रहा है। उस काम को आपके सामने प्रारंभ करते हुए जीवन में एक अत्यंत दिव्य संतोष की अनुभूति करता हूं।

मेरी आप सबको शुभकामनाएं, फिर एक बार भोले बाबा को वंदन करता हूं। फिर एक बार मैं आपसे आग्रह करता हूं मेरे साथ दोनों मुट्ठी बंद करके पूरी ताकत से बोलिए-

जय जय बाबा भोले, जय जय बाबा भोले

जय जय बाबा भोले, जय जय बाबा भोले

बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/ हिमांशु सिंह / निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

14-अक्टूबर-2017 18:12 IST

**बिहार के मोकामा में 'नमामि गंगे' तथा राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजना के अधीन विभिन्न प्रोजेक्टों के शिलान्यास समारोह में
प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ**

भारत माता की जय। भारत माता की जय।

विशाल संख्या में पधारे हुए मेरे प्यारे भाईयों और बहनों,

अपने सब मोकामावासी के प्रणाम। भगवान परशुराम की पावन धरती पर अपने सबके सादर प्रणाम। हमें मोकामा में आ के धन्य हो गे लियो।

पूरा देश दिवाली मनाने की तैयारी कर रहा है। छठ पूजा की भी तैयारियां चल रही हैं। आप सबको दिपावली और छठ पूजा की मेरी तरफ से अग्रिम शुभकामनाएं देता हूं और इस पावन पर्व पर करीब-करीब पौने चार हजार करोड़ रुपयों की विकास की सौगात भी आज इस बिहार की धरती को मिल रही है।

भाईयों-बहनों, अभी हमारे गडगरी जी, कितने प्रोजेक्ट हमारी भारत सरकार ने शुरू किए हैं और वो रोड के क्षेत्र में, रास्ता बनाने में उसका वर्णन कर रहे थे और वर्णन इतना लम्बा था कि मैं देख रहा था कि आप भी हैरान थे कि इतने कम समय में बिहार का भाग्य बदलने के लिए इतनी सारी योजनाएं लागू की जा सकती हैं, यह हमने करके दिखाया।

मैं नितिश जी का और उनकी पूरी टीम का भी हृदय से आभारी हूं कि भारत सरकार की सभी योजनाओं को, हर प्रकार का उनका सहयोग रहा, समर्थन रहा। हमारी कठिनाइयां होती हैं तो वो दूर करने की चिंता करते हैं और एक प्रकार से केंद्र सरकार और राज्य सरकार दोनों कंधे से कंधा मिला करके आज बिहार के सपनों को पूरा करने के लिए जी-जान से जुटे हुए हैं और परिणाम नजर आने लगा है। नितिश जी ने कई विषयों को स्पर्श किया, वे मुख्यमंत्री तो हैं लेकिन उनका लगाव इस क्षेत्र में इतने सालों तक सांसद रहने के कारण, आपके प्रति उनका emotional लगाव है और emotional लगाव होने के कारण उनके मन में यह तड़पन होना कि यह होना चाहिए, वो होना चाहिए ठिकना होना चाहिए, फलाना होना चाहिए। मैं उनकी इस भावना का आदर करता हूं और मैं विश्वास दिलाता हूं कि भारत सरकार बिहार के कोटि-कोटि जनों के सपनों को पूरा करने में कंधे से कंधा मिला करके आपके साथ चलेगी और विकास की यात्रा को नई ऊंचाईयों पर ले जाएगी।

भाईयों-बहनों आज मुझे मोकामा की धरती पर आने का सौभाग्य मिला है, जिस पुल के निर्माण का आज शिलान्यास हुआ है, मुझे हमारे नितिश जी जब मैं ऊपर आ रहा था, तो उसकी डिजाइन दिखा रहे थे। उसका model दिखा रहे थे, मुझे विश्वास है कि इस प्रकार का Bridge, यह पूरे बिहार के लिए आकर्षण का केंद्र बनेगा। और यह पुल बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. कृष्ण जी की कर्म भूमि बेगूसराय को राजधानी पटना के साथ जोड़ने वाला Bridge है। बेगूसराय को Refinery, Fertilizer, Thermal Power और बरौनी डेयरी स्थापित करके, बिहार की औद्योगिक राजधानी बनाने वाले ऐसे श्री बाबू को भी आज मैं आदरपूर्वक नमन करता हूं।

आज मैं उस धरती पर आया हूं जहां से कुछ सौ मीटर की दूरी पर वो तीर्थ धाम है, शिक्षा का वो क्षेत्र है, जिसने राष्ट्र कवि दिनकर जी का बालकाल में संस्कार संस्करण किया था। और जब दिनकर जी की याद आती है, तो उनकी भावनाएं आज भी हमें प्रेरणा देती हैं। अंध-श्रद्धा से मुक्ति के लिए मार्ग दिखाती हैं। दलित, पीड़ित, शोषित, गरीब, वंचित... गांव हो, किसान हो, मजदूर हो उनके प्रति एक आदर का भाव जगाने की प्रेरणा दिनकर जी की भाव अभिव्यक्ति में हम महसूस करते हैं। जिस धरती पर दिनकर जी पले-बढ़े और जिनका जन्म स्थान भी नजदीक में ही है। दिनकर जी ने कहा था -

‘आरती लिये तो किसे ढूंढता है मूर्ख, अंध-श्रद्धा के खिलाफ चोट पहुंचाते थे।

“आरती लिये तो किसे ढूँढ़ता है मूर्ख, मंदिरों, राज प्रसादों में, तहखानों में,

अरे देवता कहीं सड़कों पर गिट्टी तोड़ रहे, देवता मिलेंगे, खेतों में खिलहानों में”।।

आज जिन रास्तों के निर्माण का प्रोजेक्ट हो रहा है, वहां वो ही भगवान जो गिट्टे तोड़ने वाले हमारा भाग्य बनाने वाले हैं और भारत सरकार दिनकर जी के उन सपनों को पूरा करने के लिए एक अहम कदम उठा रही है।

भाईयों-बहनों, यह जगह भगवान परशुराम की तपोस्थली भी है। प्राचीन काल के तीन महाजनपद अंग, मगध और मिथिला के संगम पर अवस्थित मां गंगा का पवित्र सिमरिया तट का गौरवशाली इतिहास कोई भूल नहीं सकता है। इस मंच से, इस पवित्र सिमरिया तट को आज मुझे नमन करने का सौभाग्य मिला है, मैं श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं। यह वो धरती जो वीर शिरोमणि बाबा चौहरमल, जिनके नाम पर कुछ ही दूरी पर प्रति वर्ष मेला लगता है। लोग उमड़ पड़ते हैं, मैं ऐसी इस पवित्र भूमि को भी नमन करता हूं।

बिहार के मेरे प्यारे भाईयों-बहनों, मेरी जहां भी नजर पहुंच रही है मुझे लोग ही लोग नजर आ रहे हैं। जितने लोग यह पंडाल में जगह मिली है, उससे दोगुना-तीनगुना लोग बाहर है। यह सारे लोग ताप में तप रहे हैं। इतने लम्बे समय से तप रहे हैं, इतना कष्ट उठा करके भी आज हम सबको आप आशीर्वाद देने के लिए आए, मैं आप सबको भी नमन करता हूं। आपका अभिनंदन करता हूं। लेकिन मेरे प्यारे बिहारवासियों यह आप जो तप कर रहे हैं, तप में तप रहे हैं, मैं आपकी विश्वास दिलाता हूं भारत सरकार और राज्य सरकार आपकी इस तपस्या को कभी बेकार नहीं जाने देगी।

हमारे देश में ऐसे भी लोग हो गए जिनकी सोच देश को पीछे ले जाने का कभी कारण भी रही थी। अगर कोई अच्छी सड़क बनाने की बात करे तो मैंने ऐसे नेताओं का अखबारों में पढ़ा करता था कभी, वो कहते थे कि सड़क की क्या जरूरत है, सड़क तो मोटर कार वालों को चाहिए, हम गरीबों के पास गाड़ी का है, हमको रोड की क्या जरूरत है, सड़क की क्या जरूरत है। ऐसे विकृत मानसिकता वाले लोग, उन्होंने देश को जितना तबाह किया है शायद उसका हम कल्पना नहीं कर सकते। आज किसी भी गांव में जाइये और अगर सड़क नहीं है... मुझे M.P भी मिलने आते हैं, तो यही कहते हैं कि साहब मेरे इलाके में अभी कुछ गांव में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना बाकी रह गई है, इस बार हमारे यहां priority दीजिए। गांव के नागरिक जब भी मिलते हैं, उनकी मांग रहती है कि हमें प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना दीजिए। भाईयों-बहनों, पिछले तीन साल में हमने बजट में इतनी बढ़ोत्तरी कर दी, हमने काम में इतनी तेजी लाई कि पहले जितने रोड बनते थे एक दिन में आज उसकी डबल रोड बनाने की दिशा में हम सफल हुए और गांव के जीवन को बदलने के लिए यह रोड बनाने का काम हो रहा है। लेकिन सिर्फ ग्रामीण सड़क पर्याप्त नहीं है। हमें बड़े-बड़े आर्थिक जो सेंटर होते हैं, जो growth center होते हैं, जहां economy drive करती है, उसको भी interior स्थानों के साथ हमें रोड connectivity से जोड़ना जरूरी है।

आज जो हजारों करोड़ों रुपयों की योजनाओं के शिलान्यास हुए हैं वो सिर्फ उस पर गाड़ियां दौड़ाने के लिए नहीं हैं। यह सड़क का निर्माण यहां के आर्थिक जीवन को बदलने के लिए है। यहां पर समृद्धि उसी रोड से खींच करके लाने के लिए हमें प्रयास हैं और रास्ते ही होते हैं जो समृद्धि को खींच करके लाते हैं और समृद्धि का इलाका निर्माण करने में योगदान करते हैं।

भाईयों-बहनों, गंगा हम सब का जीवन उससे जुड़ा हुआ है। अगर आज मां गंगा न होती तो पता नहीं हमारा पूरा भू-भाग वहां की कैसी भयंकर स्थिति होती। लेकिन उस गंगा को कभी बचाने के लिए हमने प्रयास नहीं किए, हमने उदासीनता बरती। गंगा को बचाना हमारी भावी पीढ़ियों को बचाना है। गंगा को निर्मल करेंगे, तो गंगा को अविरल करने से कोई रोक नहीं पाएगा और इसलिए सरकार अरबो-खरबो रुपया खर्च करके गंगा की सफाई पर लगी है और यह सिर्फ एक नदी का नाम नहीं है, एक बार नदियों के प्रति फिर से वही एक बार वही श्रद्धाभाव जगेगा, नदियों को बचाने की पहल चलेगी, हिन्दुस्तान की हर नदियों के प्रति जागरूकता आएगी। भारत में, भविष्य में पानी के संकट से अगर बचना है तो यही मार्ग है जिसको हमने गंभीरता से लेना होगा और इसलिए गंगा सफाई का जो अभियान चल रहा है, गंगोत्री से लेकर बंगाल सागर तक जो भी राज्य इसके साथ जुड़े हैं उनके अलग-अलग भाग करके गंगा गंदी न हो, सबसे पहली प्राथमिकता उस पर दी गई है। गंगा में जाने वाले गंदे पानी को, केमिकल वाले पानी को रोकने की दिशा में अभियान चला है। आज बिहार में एक साथ अनेक विद्व, इस प्रोजेक्टों का भी शिलान्यास हो रहा है, जो आने वाले दिनों में मां गंगा को हम जैसी श्रद्धाभाव रखते हैं, उसी रूप में देखने को मिलेगा और जब मां गंगा हमारे सपनों के अनुरूप होगी, तब छठ पूजा का आनंद ही कुछ और होगा, वो भक्ति का भाव भी कुछ और होगा।

भाईयों-बहनों, पिछले दिनों भारत रेल मंत्रालय ने पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के लोगों के लिए महत्वपूर्ण ट्रेन चलाई है,

जिसका लाभ यह दिवाली और छठ पूजा में भरपूर मिलने वाला है। मुम्बई से गौरखपुर ट्रेन अंत्योदय एक्सप्रेस, देश की पहली अंत्योदय एक्सप्रेस और अभी एक सप्ताह पहले मैंने सूरत से पटना जयनगर तक दूसरी अंत्योदय एक्सप्रेस को भी वहां से मैंने हरी झंडी दी है। without reservation गरीब से गरीब व्यक्ति last moment दौड़ करके अंदर आ करके बैठ सकता है, अपने घर जा सकता है, यह व्यवस्था की है।

महामाना एक्सप्रेस, बड़ोदा से बनारस तक जोड़ी है, सूरत में काम करने वाले लोग, बड़ोदा में काम करने वाले लोग, अंकलेश्वर में काम करने वाले लोग, महाराष्ट्र में काम करने वाले लोग दिवाली और छठ पूजा के त्यौहार पर अपने घर आराम से पहुंच सके, इसलिए बहुत तेजी करके इन्हीं दिनों यह चार महत्वपूर्ण ट्रेन बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश को जोड़ने का काम इस सरकार ने किया है, जिसका लाभ दिवाली में और छठ पूजा में आपको अवश्य मिलने वाला है।

भाईयों-बहनों, अभी नितिन जी हमारे बता रहे थे, हमारे गडकरी जी, गडकरी जी ने जो खाका बताया आपके सामने शायद देश आजाद होने के बाद इतने कम समय में infrastructure का इतना बड़ा काम बिहार की धरती पर कभी नहीं हुआ होगा, अकेले रोड का काम... अभी नितिन जी बजा रहे थे 53 हजार करोड़ रुपयों के काम या तो मंजूर हो गए या तो काम चालू हो गए हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि यह मूलभूत सुविधाएं, infrastructure की मूलभूत सुविधाएं कितना बड़ा परिणाम लाएगी इसका आप अंदाजा कर सकते हैं।

हम यह बात भलीभांति जानते हैं कि आने वाला युग बिना connectivity विकास यात्रा को कभी आगे बढ़ने नहीं देगा, रोड connectivity चाहिए, रेल connectivity चाहिए, internet connectivity चाहिए, गैस ग्रिड चाहिए, बिजली का connection चाहिए, शुद्ध पानी की नलिया चाहिए। यह connectivity यह गरीब से जुड़े हुए विषय हैं और इसमें हमारे गडकरी जी के नेतृत्व में water way का भी अभियान चला है। अगर एक बार water way को हम सफलतापूर्वक आगे बढ़ाएंगे, आप देखिए नदी का महत्व भी जो आर्थिक विषयों से जुड़े हुए लोग हैं, वो भी श्रद्धाभाव से नदियों से जुड़ने के लिए आगे आए बिना रह नहीं पाएंगे, ऐसा बदलाव यह waterways के कारण देश के आर्थिक क्षेत्र में माल ढोने की व्यवस्था में कम से कम खर्च में माल पहुंचाने से गरीब को सस्ता में सस्ता चीजों को उपलब्ध कराने का काम यह मां के तट पर waterway के द्वारा यह संभव होने वाला है। जिस जमाने में अंग्रेज waterway का उपयोग करते थे, तभी यह हमारा मोकामा, मिनी कलकत्ता के रूप में जाना जाता था। एक बड़े आर्थिक और ट्रांसपोर्टेशन की गति का केंद्र बन गया था। यह शौहरत फिर से हासिल कराने का भारत सरकार ने बीड़ा उठाया है और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यह शौहरत हम वापस ला करके रहेंगे।

पिछले दिनों हमने देखा होगा कि हमने जिन गांवों में बिजली नहीं है उन गांवों में बिजली पहुंचाने का एक बड़ा अभियान उठाया है। 18 हजार गांवों ऐसे थे, जहां बिजली नहीं थी। एक हजार दिन में पूरा करने का सपना ले करके चले हैं। अभी-अभी कुछ महीने अभी बाकी है, लेकिन अब तक करीब-करीब 15 हजार से ज्यादा गांव बिजली पहुंचा चुके हैं और जो ढाई-तीन हजार गांव बाकी हैं, उनमें भी तेज गति से काम चल रहा है। लेकिन उसके साथ अभी हमने प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना लागू की है। यह 'प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना', मैं बिहार से आग्रह करूंगा आप इसका भरपूर फायदा उठाइये। यह 'प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना' यह है कि भारत सरकार और राज्य सरकार मिल करके जिसके भी घर में बिजली का connection नहीं है भारत सरकार और राज्य सरकार मिल करके मुफ्त में बिजली का connection देंगे। झुग्गी-झोपड़ी होगी, तब भी उसके घर में लट्टू जलेगा। पहले कोई बिजली मांगता था, तो सरकार कहती थी कि उधर खम्भा है, उस खम्भे से यहां आना है तो 10 खम्भे और लगाने पड़ेंगे, इतना तार लगाना पड़ेगा, इसका करीब 30 हजार रुपया खर्चा होगा। अगर तुम 30 हजार रुपया दोगे, तब बिजली का connection मिलेगा, तो निम्न, मध्यम वर्ग का व्यक्ति, गरीब व्यक्ति को कहता था भई मुझे बिजली नहीं चाहिए, मैं 30 हजार रुपया नहीं दे सकता। लोग बिजली नहीं लेते थे। भाईयों-बहनों, हमने तय किया है कि अब हिन्दुस्तान का कोई भी परिवार 18वीं शताब्दी के अंधेरे में जीने के लिए मजबूर नहीं होगा, मुफ्त में connection दिया जाएगा, खम्भे डालने होंगे तो सरकार डालेगी, तार लगाने होंगे तो सरकार लगाएगी और घर तक बिजली ले जाएंगे, पहली जो connection दे देंगे, मुफ्त में connection दे दिया जाएगा, ताकि वो अपने घर में बच्चों की शिक्षा के लिए, जीवन के लिए सोचे, नये तरीके से सोचे और बदलाव की दिशा में आगे बढ़े।

भाईयों-बहनों, यह सरकार की एक विशेषता है और आप तीन साल के बाद हमारी आलोचना करने वालों को भी इस बात का स्वीकार करना पड़ रहा है। पहले सरकारों की आदत हुआ करती थी चुनाव में ध्यान में रख करके योजनाओं की घोषणा करना और फिर लोगों को योजनाओं को भुला देना। आज दिल्ली में ऐसी सरकार हमारी चल रही है कि जिस योजना की कल्पना करते हैं उसका रोड मैप भी तैयार करते हैं। और हमारी आंखों के सामने, समय-सीमा में उन योजनाओं को लागू करने के लिए सरकार जी-जान से जुट जाती है, संसाधन इकट्ठे करती है। आपने देखा होगा गरीब परिवारों को गैस का connection आज देश में तीन करोड़ से ज्यादा परिवारों को, गरीब से गरीब परिवारों को गैस का सिलेंडर पहुंच गया। वो गैस के चूल्हे से रोटी बनाने लग गए। आने वाले दो साल में दो करोड़ परिवारों को और देने का सपना है, वो भी हम

समय-सीमा में पूरा करके रहेंगे और गरीब की जिंदगी में बदलाव लाएंगे।

हम जो स्वच्छता का अभियान ले करके चले हैं। यह स्वच्छता का अभियान मेरे लिए उसके लिए मेरे दिमाग में मेरी गरीब माताएं-बहनें हैं और मैं हर किसी को कहूंगा, सरकार में बैठे मुलाजिमों से कहना चाहूंगा, पढ़े-लिखे नौजवानों से कहना चाहूंगा, आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवारों से कहना चाहूंगा, पलभर के लिए सोचिए, उन मां-बहनों के लिए भी सोचिए जो मां-बहनें गांव में रहती हैं, शहर की झुग्गी झोपड़ी में रहती हैं और खुले में शौच जाने के लिए मजबूर हैं। उन्हें शौचालय नहीं है, वो क्या करती हैं सूरज उगने से पहले अंधेरे में घर से बाहर जा करके अपनी प्रातः विधि करके सूरज उगने से पहले घर लौट आती हैं। और एक बार सूरज उग गया और कभी दिन में उसको जाने की जरूरत पड़ गई तो रात को सूरज ढलने तक वो इंतजार करती है और जब अंधेरा होता है, शरीर को पीड़ा देती है, पीड़ा सहन करती है और बाद में वो शौच के लिए जाती है। मेरी इन गरीब मां-बहनों की तबीयत पर कितना दुष्प्रभाव होता होगा। हमारी मां-बहनों के हाल क्या होते होंगे, और इसलिए मैं विशेष रूप से हिन्दुस्तान के सभी राज्यों से आग्रह करता हूं कि अगर हमारे दिल में हमारी मां-बहन, बेटियों की इज्जत, उनके स्वास्थ्य की चिंता यह अगर हमारा दायित्व है तो हम शौचालय बनाने में कोई भी लापरवाही न करे, उसको ईमानदारी से आगे बढ़ाएं, इसको पूरा करने का प्रयास करे।

आज देश में पांच करोड़ परिवारों को शौचालय से जोड़ा है। जहां देश में 50 प्रतिशत से भी कम स्वच्छता की व्यवस्थाएं मौजूद थीं, आज करीब-करीब 80% से ज्यादा हम पहुंचाने में सफल हुए, लेकिन हमें इसे और आगे बढ़ाना है और इसलिए मैं विशेष रूप से मेरे बिहारवासियों से आग्रह करता हूं कि आप एक जिम्मेदारी लीजिए अपने गांव में, आज देश करीब ढाई लाख गांव खुले में शौच से अपने आप को मुक्त कर चुके हैं। मैं बिहार को निमंत्रण देता हूं, आइये हम भी अपने गांव को खुले में शौच से मुक्त करें। अपनी तहसील को खुले में शौच से मुक्त करें, अपने जिले को खुले में शौच से मुक्त करें और आने वाले कम समय में जिस धरती पर महात्मा गांधी ने चम्पारण का सत्याग्रह किया हो, जिस धरती पर महात्मा गांधी ने स्वच्छता का संदेश दिया हो, जिस धरती पर महात्मा गांधी ने स्वावलंबन का पुरुषार्थ दिया हो, ऐसी धरती आज देश आपसे अपेक्षा कर रहा है। आप इसमें भी अगुवाई कीजिए और बिहार को नई ऊंचाईयों पर.... और यह जनसमर्थन के बिना संभव नहीं होगा। सिर्फ सरकारी खजाने से काम नहीं होते, जब जनता जनार्दन तय कर लेते हैं, तो काम अपने आप हो जाते हैं। और इसलिए मैं आपको निमंत्रण देता हूं।

मेरे भाईयों-बहनों, आप इतनी बड़ी संख्या में आ करके आशीर्वाद दिया, मैं फिर एक बार आपका आभार व्यक्त करता हूं। और मैं विश्वास दिलाता हूं भारत सरकार पूर्वी-भारत के विकास के लिए प्रतिबद्ध है, हम विकास के जिस model को ले करके चल रहे हैं उसमें पूर्वी-उत्तर प्रदेश हो, बिहार हो, पश्चिम बंगाल हो, असम हो, ओडिशा हो, North-East हो, यह सारे इलाके यह विकास की नई ऊंचाईयों को पार करेंगे। आपके यहां Fertilizer के कारखाने को हमने आगे बढ़ाने की दिशा में काम उठाया है। इसका परिणाम मेरे किसानों को भी मिलने वाला है।

और इस विकास की यात्रा में आप सब जुड़े इसी एक अपेक्षा के साथ आप सब मेरे साथ पूरी ताकत से बोलिए -

भारत माता की जय,

भारत माता की जय,

भारत माता की जय,

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी / अमित कुमार / तारा

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

07-अक्टूबर-2017 23:16 IST

गुजरात के गांधीनगर में आई आई टी गांधीनगर के राष्ट्र को समर्पण तथा प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान योजना के उद्घाटन समारोह पर पीएम के संबोधन का मूल पाठ

प्यारे नौजवान साथियों

आप सब IIT-ians हैं। लेकिन मैं ऐसा इंसान हूँ जिसको वो डबल आई नहीं जुड़ा। आप सब IIT-ians हैं मैं बचपन से सिर्फ टीएन रहा। टी डू ए वाला टीएन चाय वाला। मैं सोच रहा था कि कॉलेज के नौजवान बड़े sharp होते हैं इतनी देर नहीं लगाते। फिर वही हुआ। आज 7 अक्टूबर है। 2001 में 26 जनवरी को भयंकर भूकंप आया था। और उसके बाद स्थिति ऐसी बनी कि जो मेरे जीवन की कभी राह नहीं थी और मुझे अचानक 7 अक्टूबर 2001 को इसी गांधीनगर में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर के जिम्मेवारी का निर्वाह शुरू हुआ। न शासन व्यवस्था जानता था न कभी विधानसभा देखी थी। लेकिन एक नया दायित्व आ गया था। लेकिन मन में तय किया था कि मेहनत करने में कोई कमी नहीं रखूंगा और आज देश ने मुझे हर बार कोई-कोई नई जिम्मेवारी दी है। और इस नई जिम्मेवारी के तहत आज आपके बीच में हूँ।

आज यहां हिन्दुस्तान के अलग-अलग भू-भाग से आए हुए ग्रामीण क्षेत्र के युवक-युवतियां हैं कुछ बुजुर्ग भी हैं। जिनको मैंने सबसे पहले प्रमाणपत्र दिया। मैं उनसे सारी बातें पूछ रहा था और मैं हैरान था। उनको सब पता था वो गांव में क्या कर रही है, लोगों को कैसे मदद कर रही है, उन्होंने क्या ट्रेनिंग ली है। उस ट्रेनिंग का क्या उपयोग करेगी। सारे सवाल के वो मुझे जवाब दे रही थी। मैं समझता हूँ यही revolution है। देश और दुनिया शायद पिछले तीन सौ साल में जितना technology का revolution नहीं देखा है। गत 50 साल में अकल पर technology का revolution आया। technology जिंदगी का हिस्सा बन गई है। technology अपने आप में एक driving force बन गई है। और ऐसे समय किसी भी देश को अगर प्रगति करनी है तो हिन्दुस्तान के सभी स्तर के लोगों को शहर हो गांव शिक्षित हो अशिक्षित हो, बुजुर्ग हो नौजवान हो, इस technology के साथ उसको जोड़ना एक उज्ज्वल भविष्य के लिए अनिवार्य है।

आजादी के आंदोलन के समय महात्मा गांधी जिस प्रकार से साक्षरता पर बल दे रहे थे। अगर स्वराज के आंदोलन में साक्षरता की एक ताकत थी। तो सुराज के आंदोलन में digital literacy एक बहुत बड़ी अहम ताकत है। और इसलिए भारत सरकार का प्रयास है कि हिन्दुस्तान का हर गांव, वहां की हर पीढ़ी उनको digital literate करने की दिशा कदम उठाए। आज ये जो कार्यक्रम है भारत के ग्रामीण भारत में छः करोड़ परिवार रहते हैं इन छः करोड़ परिवारों को परिवार के कम से कम एक व्यक्ति को digitally literate करने का बीड़ा उठाया है। बीस घंटे का कैप्सूल है उसको पढ़ाया जाता है। आनलाइन एग्जाम ली जाती है वीडियो कैमरा के सामने बैठकर के उसको एग्जाम देनी होती है। और वहां से उसको certify किया जाता है। और अनुभव ये आया है कि digital literacy के लिए आप कितने शिक्षित हैं, आप किस उम्र के हैं, वो गौण बन जाता है वो मायने नहीं रखता है।

एक जमाना था जब कार्ल मार्क्स की philosophy चलती थी दुनिया में, लोग quote करते थे कार्ल मार्क्स की बातों को have and have nots वो लोग जिनके पास है और लोग जिनके पास कुछ नहीं है। इस divide के आधार पर उन्होंने अपनी राजनीतिक विचारधारा को develop किया था। वो कारगर हुआ कि नहीं हुआ वो विद्वान लोग उसकी चर्चा करेंगे। सिकुड़ते-सिकुड़ते वो विचार अब कहीं नजर नहीं आ रहा है। नाम मात्र के बोर्ड लगे पड़े हैं लेकिन technology के संबंध में अगर भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए हम लोगों को सतर्क रहकर के प्रयास करना होगा कि देश में digital divide पैदा न हो। कुछ लोग digital technology में माहिर हो और कुछ लोग पूरी तरह अछूत हो तो आने वाले युग में जिस प्रकार से बदलाव नजर आ रहा है। ये digital divide सामाजिक संरचना के लिए बहुत बड़ा संकट पैदा कर सकता है। और इसलिए सामाजिक समरसता के लिए विकास के मूलभूत बिंदुओं को समाहित करते हुए ये digital divide से मुक्ति पाने की दिशा में ये ग्रामीण भारत में digital literacy का अभियान चलाया। हम जानते हैं घर में कितना ही बढिया टीवी आ जाए। रिमोट से चलता हो। शुरू में सबको लगता है क्या है। लेकिन घर में जब दो-तीन साल का बच्चा अपने आप जरूरत चैनल बदल देता है। VCR चालू कर देता है। बंद कब करना है चालू करना सीख लेता है। तो घर के बुजुर्गों को भी लगता है कि हमें भी सीखना पड़ेगा। और फिर वो भी switch on switch off करना सीख जाता है। क्या किसी ने whatsapp कैसे forward होता है। उसका क्लासरूम देखा है क्या? क्या whatsapp forward करने के लिए हिन्दुस्तान में कोई institute है क्या? लेकिन आप देखते हैं कि लोगों को whatsapp forward आ गया कि नहीं आ गया। कहने का तात्पर्य ये है कि अगर user friendly technology के रास्ते से हम जाते हैं तो हम आसानी से digital literacy की दिशा में देश को ले जाते हैं। digital literacy, digital technology, digital India एक good governance की गारंटी है। transparency की गारंटी है।

भारत सरकार ने एक JAM trinity के द्वारा विकास की एक कल्पना की हुई है। JAM J-Jandhan Account, A-Aadhaar, M-Mobile Phone इन तीनों को जोड़कर के सामान्य मानवी की आवश्यकता के अनुसार सरकार उसके मोबाइल फोन पर मौजूद हो इस प्रकार की हमारी विकास यात्रा के कदम चल रहे हैं। देश में एक बहुत बड़ा अभियान चला है। optical fiber network का बहुत तेजी से लाखों गांवों में optical fiber network को पहुंचाने की दिशा में प्रयास हुआ है। और आज दूर से सुदूर इलाकों में हमारी भावी पीढ़ी को हमारे गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा देने में long distance education digital के माध्यम से देना संभव हुआ है। और जैसे-जैसे optical fiber network हिन्दुस्तान के हर गांव तक पहुंच जाएगा। उस गांव की शिक्षा में उस गांव की आरोग्य की व्यवस्थाओं में, उस गांव की सरकार की जनसुविधा की सेवाओं में आमूल चूल परिवर्तन आने वाला है। और उसी डिजाइन को लेकर के हम जो चल रहे हैं। उसी का हिस्सा है कि आज देश के अलग-अलग कोने से आए हुए ये community service centre के लोग जिन्होंने कोर्स किए हैं। और कुछ लोग करने वाले हैं और आने वाले दिनों में छः करोड़ परिवारों में एक-एक व्यक्ति को ये शिक्षा दी जाएगी वो उसकी रोजी-रोटी का एक साधन बनने वाला है। क्योंकि अब services उसके द्वारा हो रही हैं। और उस दिशा में हमें प्रयास करना चाहिए। कभी-कभार अनुभव ऐसा आता है। कि बहुत लोग आपने देखें होंगे। कि बढिया से बढिया मोबाइल का अगर मॉडल आया। टीवी में advertisement देखी, अखबार में मैगजीन में पढ़ लिया या गूगल गुरु ने बता दिया तो सबसे पहले वो काम करता है उस मोबाइल को खरीदना। आपको 80 प्रतिशत लोग ऐसे मिलेंगे जिनका मोबाइल के अंदर इतनी सारी चीजे

हैं लेकिन न उसका अता-पता है न उसको उपयोग करने की आदत है। शायद यहां आई आई टी में भी कुछ लोग मिल जाएंगे जिनको पूरी तरह मोबाइल उपयोग करने की आदत नहीं होगी। अच्छे से अच्छे मॉडल का मोबाइल रखते होंगे और इसलिए अगर digital literacy है तो जो हमने खर्च किया है उसका भी हम सर्वाधिक उपयोग कर सकते हैं। और हम एक प्रकार से value Addition कर सकते हैं। और इसलिए ये digital literacy का digital India का अभियान चलाया है। less cash society बनाने में भी ये digital literacy का काम बहुत बड़ा रोल प्ले करेगा।

भारत सरकार ने जो bheem app बनाई है। दुनिया के देशों को अजूबा हो रहा है। हमारे पास जो Aadhaar digitally biometric system से जो डाटा बैंक है हिन्दुस्तान के पास पूरे विश्व के लिए अचरज है। इसको जोड़कर के हम विकास को empowerment को जोड़ने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। और उसका मैं मानता हूं एक बहुत बड़ा उपयोग होने वाला है। आज मेरे लिए सौभाग्य का विषय है। कि आज यहां इस IIT के नए कैंपस का लोकार्पण करने का अवसर मिला है। अगर चुनाव के दिन होते और मैंने उस समय ये जमीन देने का निर्णय किया होता। करीब-करीब 400 एकड़ भूमि और वो भी गांधीनगर में और वो भी साबरमती नदी के तट पर ये जमीन कितनी महंगी है उसका आप अंदाज कर सकते हैं। और जिस दिन ये 400 एकड़ भूमि देने का निर्णय किया तो कुछ लोग अगर चुनाव होता तो निकल पड़ते। जैसे इन दिनों बूलेट ट्रेन के खिलाफ बोलते रहते हैं। उस समय भी बोलते, उस समय भी बोलते कि मोदी अरे गुजरात के गांव में प्राथमिक शिक्षा का मकान है वो तो ढीला-ढाला है। और तुम IIT बनाने में पैसे लगा रहे हो। जरूर आलोचना करते। लेकिन अच्छा था जिस समय मैंने जमीन का निर्णय किया उस वक्त चुनाव का मौसम नहीं था। लेकिन अब आपको पता चलता होगा कि ये कैसा दीर्घ दृष्टि पूर्ण निर्णय था और मैंने उस दिन कहा था कि सुधीर जैन जी को और हमारे डिपार्टमेंट के लोगों को याद होगा मैंने कहा था IIT एक brand है। हिन्दुस्तान में IIT एक brand बन चुका है। लेकिन IIT के बीच में अंदर कैंपस ब्रांड ज्यादा ताकतवर प्रचार होगा। किस IIT का कैंपस कैसा है। ये आने वाले दिनों में चर्चा का विषय रहेगा। और इसलिए मैंने कहा था कि मुझे गुजरात में ऐसा कैंपस चाहिए जो हिन्दुस्तान के top most IIT campus का अंदर शिरोमोर ये कैसे बन सके। और आज मुझे देखकर के खुशी हुई। कि कैंपस हिन्दुस्तान की प्रमुख IIT की बराबरी में आकर आज खड़ा हो गया है। कैंपस की अपनी एक ताकत होती है। दूसरी ताकत होती है faculty की मुझे खुशी है मुझे बताया गया कि आज गांधीनगर IIT में 75 प्रतिशत faculty वो हैं जो विदेशों में trained होकर के आई हैं। expertise करके आई हुए हैं। और उन्होंने अपना समय शक्ति इस IIT के students को dedicate करने का निर्णय किया है। मैं उनके इस निर्णय का स्वागत करता हूं। लेकिन भारत सरकार ने चुनौती दी है देश की शिक्षा संस्थाओं को। मैं चाहता हूं कि IIT गांधीनगर इस चुनौती के लिए मैदान में आए। आएंगे। क्या हो गया सारे IIT-ians को आवाज तो वहां से आ रही है। पहली बार हिन्दुस्तान में शिक्षा क्षेत्र में ऐसा reform हुआ है। जिसकी सालों से अपेक्षा थी लेकिन कोई हिम्मत नहीं करता था।

आज दुनिया में 500 top universities आजादी के 70 साल के बाद भी इन 500 top universities में हम कहीं नजर नहीं आते। क्या ये कलंक मिटना चाहिए कि नहीं मिटना चाहिए। क्या आज आप 2022 भारत की आजादी के 75 साल हों तब तक हम हमारी universities को उस ऊंचाई पर ले जा सकते ताकि हम भी दुनिया के अंदर ये कह सकें कि हम भी कुछ कम नहीं हैं। कर सकते हैं कि नहीं कर सकते हैं। भारत सरकार ने पहली बार निर्णय किया है कि दस private universities और दस public universities, challenge रूट पर उनको select किया जाएगा। करीब एक हजार करोड़ रूपया लगाया जाएगा। और जो ऐसी दस universities जो हैं दस private और दस public वे challenge रूट से अगर जीतती जीतती ऊपर आती हैं। और global standard को establish करती हैं। तो आज भारत सरकार के और राज्य सरकारों के जितने नियम हैं उन नियमों से उनको मुक्त करके वही उनकी दुनिया वही उनका देश वो ताकत दिखाए और कुछ करके दिखाए इतनी स्वतंत्रता उनको दी जाए। Syllabus में campus में faculty में खर्च करने में वे अपना फैसला करें सरकार कहीं आपगी नहीं और आपको परिणाम लाकर के देना होगा। सरकार एक हजार करोड़ रूपया लगाने के लिए इन 20 यूनिवर्सिटी के लिए तैयार हुई है। गांधीनगर IIT के पास इतना बड़ा 400 एकड़ का कैंपस हो 1700 करोड़ रुपये की लागत से सारी व्यवस्था खड़ी हुई हो। मुझे विश्वास है कि सुधीर जैन और उनकी टीम और ये पूरे हमारे नौजवान मिलकर के बीढ़ा उठाएं और आगे आए। किसी भी देश में विकास करने के लिए institutions को जितना हम समय समय पर निर्माण करें वो आवश्यक होता है। गुजरात इस बात के लिए गर्व कर सकता है। कि पिछले दस साल के भीतर भीतर गुजरात ने global level के institutions देश को दिए हैं। आज भी दुनिया में कहीं पर भी forensic science university नहीं है। दुनिया में कहीं नहीं है। गुजरात अकेला है। जिसकी अपनी forensic science university है। दुनिया की एकमात्र यूनिवर्सिटी है। आज भी हिन्दुस्तान में Indian institute of teacher education IITE ऐसी कोई university नहीं है जो best quality के टीचर तैयार करें। teaching में उनका graduation हो, teaching में उनका post graduation हो। और उत्तम से उत्तम टीचर वहां से निकले। गुजरात पहला देश का राज्य है। जिसने Indian Institute of Teacher Education ऐसी एक university बनाई है। गुजरात पहला राज्य है। जिसने children university बनाई है। दुनिया में कहीं पर भी children university नहीं है। आज micro family की दिशा में दुनिया आगे बढ़ रही है। मां भी अपने व्यस्त है बाप भी अपने में व्यस्त है। बच्चा परिवार में जो काम करने वाले लोग हैं उनके भरोसे छोड़ दिया जाता है। समय की मांग है हमें एक ऐसी institution arrangement करनी होगी। कि हमारे छोटे-छोटे बालक उनका सही development हो उनकी सही खातिरदारी हो। उनका विकास एक उत्तम नागरिक के लिए जो जड़े जमानी हों वो बचपन में हो। और उसके लिए research का काम ये children university करें। बच्चों के खिलौने कैसे हों, बच्चे जिस कमरे में हो उनके दीवारों के कलर कैसे हों। बच्चों को किस प्रकार के गीत सुनाए जाएं। बच्चों को nutrition value वाले खाना कैसा होना चाहिए। बच्चों को पढ़ने की modern technique क्या हो ताकि आसानी से वो पकड़ पाएं। ये सारे research की आवश्यकता है।

पहले तो परिवार संयुक्त हुआ करता था। और परिवार अपने आप में एक university हुआ करती थी। और बालक दादी मां से एक सीखता था, दादा से दूसरा सीखता था, चाचा से तीसरा सीखता था। मां से एक सीखता था, फफा से एक सीखता था। आज micro परिवार के अंदर उसके लिए ये शिक्षा का दाम बंद हो चुका है, तब जाकर के ये विचार आया था। कि दुनिया को आने वाली पीढ़ियों के बच्चों कि चिंता करने के लिए और उसमें से children university का जन्म हुआ था। जो इसी गुजरात की धरती पर पैदा हुआ था। crime की दुनिया में तीन महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। एक legal faculty, दूसरी

पुलिस और तीसरी crime detection के लिए forensic गुजरात ने इन तीनों पर काम किया। national law university बनाई। जो उत्तम से उत्तम lawyer तैयार करेगी। उत्तम जज तैयार करेगी। और judiciary के पार्ट को संभालेगी। police academy university बनाई है हिन्दुस्तान में चंद university है जो policing के लिए है। गुजरात उसमें से एक राज्य है। गुजरात देश का दूसरा राज्य था। जिसने ये police university बनाई रक्षा शक्ति यूनिवर्सिटी और जहां जो uniform forces में जाना चाहता है वो uniform forces में जाने वाला दसवीं, बारहवीं कक्षा के बाद ही उस धारा में आ जाए सारी पढ़ाई वहीं हो जाए। communication deal आ जाए crowd management आ जाए, crowd psychology management आ जाए। हिन्दुस्तान के IPC धाराओं का उसको पता हो जाए। और पढ़ लिखकर के कहीं भी police recruitment के लिए जाए। तो एक qualitative change भारत की सुरक्षा क्षेत्र लाने की दिशा में गुजरात ने पहल की है। और फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी आज सारे criminal घटनाएं आप देखते होंगे। technology के द्वारा crime पकड़े जा रहे हैं। अगर फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी की ताकत जितने फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट तैयार होंगे। साइबर क्राइम हो या और क्राइम हो उसको उसमें से बचने के लिए उसमें से detect करने के लिए, गुनेहगारों को सजा दिलाने के लिए फॉरेंसिक वर्ल्ड सबसे ज्यादा बड़ा रोल पैदा करने वाला है। ऐसी तीनों विधाओं को इसी गुजरात की धरती पर एक साथ develop किया गया है। जो आने वाले दिनों में हिन्दुस्तान का बहुत बड़ा contribution करने वाला है। और आज देश और दुनिया के लोग जो नये प्रयोग किए हैं यूनिवर्सिटी के उनके साथ जुड़ रहे हैं। और इसलिए आज जब IIT-ians के बीच बैठा हूं तब मैं जानता हूं आपका काफी समय लेब में जाता है। आप कुछ न कुछ नया करते रहते हैं। लेकिन ज्यादातर Exam oriented innovation, Exam oriented projects, मैं नहीं चाहता हूं कि मेरे देश का नौजवान इसी एक गलियारे में बंध करके रह जाए। समय की मांग है हम innovation को बल दें।

भारत सरकार ने नीति आयोग में AIM नाम के institute develop किए हैं। Atal innovation mission, AIM और उसके द्वारा हम देश की जो challenge route से select होती हैं। ऐसी स्कूलों को tinkering labs के लिए पैसे दे रहे हैं और पांचवी, सातवीं, आठवीं, दसवीं, बारहवीं के बच्चों को innovation के प्रेरित करते हैं। हिन्दुस्तान का भाग्य बदलने के लिए हमारे पास जो natural talent है हमें innovation में जाना पड़ेगा। जिस देश के अंदर IT की महारत हो लेकिन गगल किसी और देश में पैदा हो। जिस देश में IT की महारत वाले नौजवान हों लेकिन फेसबुक कहीं ओर हो। जिस देश में IT की महारत वाले नौजवान हों लेकिन यूट्यूब कहीं ओर हो। मैं चाहता हूं, मैं देश के नौजवानों को चुनौती देता हूं। आइए हम दुनिया का भाग्य बदलने के लिए, भारत का बदलने के लिए innovation के रास्ते को पकड़ें। और ऐसा नहीं कि बढ़ाई किसी की बपौती होती है। अरे एक बार आप उलझ जाओगे तो आप भी नई चीजें खोजकर के रहोगे। और देश और दुनिया को बहुत कुछ देकर जाओगे। लेकिन कभी-कभार हमें कुछ नया करने का जो मूड रहता है। लेकिन अच्छा innovation का तरीका दूसरा होता है। और मैं आपको गाइड करना चाहता हूं आज मैं आशा करता हूं कि मेरी इस बात को आप गौर से सुनेंगे। आप जो academic knowledge है आपने जिस सरकिट को पढ़ा होगा। जिस basic structural engineering पढ़ा होगा उसके आधार पर innovation करना एक तरीका है। दूसरा तरीका है आप अपने अगल-बगल में समस्याओं को देखिए, कठिनाईयों को देखिए और फिर सोचिए। कि मैं इसका समाधान दे सकता हूं क्या। वो तो बेचारा एक भला व्यक्ति है तकलीफ से जी रहा है। मैं IIT-ians हूं मैं कुछ करूंगा ताकि इसकी जिंदगी में सुधार आए और वही innovation बन जाएगा। और वो कभी इतना बड़ा स्केल पर हो सकता है। कि एक बहुत बड़ा business model बन सकता है। हमारे देश में ऐसी ढेर सारी समस्याएं हैं। अब जैसे स्वच्छता का अभियान चल रहा है। कियुं न innovation करने वाले मेरे नौजवान waste में से wealth create करने वाले innovation के नए नए project कियुं न करें।

आज solar energy पर काम चल रहा है। आज solar energy, wind energy, renewable energy, climate change ये सब तो हमारे काम पर आ रहे हैं। हम भारत के स्वभाव के अनुसार हम ऐसे क्या innovation करें कि हर घर के अंदर एक चीज आसानी से हम पहुंचा सकें। अगर भारत जहां इतनी बड़ी solar energy उपलब्ध है। हम कुकिंग के लिए हर परिवार को खर्च से मुक्त कर सकते हैं क्या। हम solar energy से चलने वाली energy generate करके energy से चलने वाले कुकिंग equipment क्यों न बनाएं, खाना उसी पर पके न उसको गैस लेने के लिए जाना पड़ा, न उसको चूल्हा जलाना पड़े। खुद का ही solar plant हो छत के ऊपर दो solar panel लगी हो। घर में आवश्यक खाना पक जाता हो। गरीब के घर में मध्यम वर्ग के परिवार का, कीचन के अंदर फ्रिज का जो खर्चा होता है। बच जाएगा कि नहीं बच जाएगा। छोटी-छोटी चीजें हम देख रहे हैं। उन्हीं को innovation के रूप में क्यों न पकड़ें। हम समाधान क्यों न खोजें मुझे विश्वास है IIT गांधीनगर एक कल्चर पैदा करेगा innovation का कल्चर पैदा करेगा। और वो कल्चर need based होना चाहिए। knowledge base नहीं need based होगा तो वो innovation sustain कर जाता है। वो स्केलेबल हो जाता है। वो commercial उसको अवसर भी मिल जाता है। और बहुत बड़ी कंपनियां इसको purchase करने के लिए भी आगे आती हैं। और इसलिए मैं चाहता हूं कि IIT इस दिशा में काम करें।

मैं IIT नौजवानों से एक और बात बताना चाहता हूं। शायद हिन्दुस्तान में गुजरात पहला राज्य है। जिसने I create नाम की एक institute पैदा किया है। बहुत कम लोगों ने ये नाम सुना होगा। अब उसकी उम्र भी मेरे हिसाब से करीब तीन-चार साल हो गई है। अभी उसके भवन का लोकार्पण बाकी है। मैं समय दे नहीं पा रहा हूं। लेकिन दे दूंगा। ये I create राज्य के और देश के जो innovation में interest रखते हैं। इनको incubation provide करने का काम करती है। वहां रहने की व्यवस्था है। लैब है। आपके idea सरकार वहां अवसर देने को तैयार है। आप ऐसे innovation कीजिए जो भारत के जीवन में बदलाव लाने के लिए सरलता से व्यवस्थाओं को विकसित कर सके। ये I create अपने आप में हिन्दुस्तान में इकलौता ऐसा होता है और दुनिया की अच्छी से अच्छी innovation करने वाली institution के साथ उसका collaboration किया हुआ है। ये मैं ऐसी जानकारी आपको दे रहा हूं। जो सामान्य अखबार की सुर्खियों में रहने वाली चीज नहीं है। लेकिन देश का भविष्य जो युवा पीढ़ी बनाती है। उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। और इसलिए मैं दोस्तों आपसे अपेक्षा करता हूं। ये 2022 भारत की आजादी के 75 साल, पांच साल हमारे पास हैं।

1942 में महात्मा गांधी ने कहा था। हिंद छोड़ो क्वीट इंडिया पांच साल के भीतर-भीतर देश ऐसा खड़ा हो गया। अंग्रेजों को बोरिया-बिस्तर उठाकर के जाना पड़ा। मेरे देशवासी अगर पांच साल हम भी अगर खड़े हो जाएं कि देश से गरीबी जानी चाहिए, देश से जातिवाद जाना चाहिए, देश से भ्रष्टाचार जाना चाहिए, देश से भाई-भतीजावाद जाना चाहिए। ये सब हो के रह सकता है देश में दोस्तों आइए मेरे साथ कंधे से कंधा मिलाकर के चलिये। ये हम करके रहने का संकल्प लेकर के चल पड़े हैं।

मैं IT के नौजवानों से एक और बात भी बताना चाहता हूं। जब convocation होता होगा तब आपको बहुत सलाह दी जाती होगी, बहुत कुछ बताया जाता होगा। इतने बड़े भव्य भवन में आप रह रहे हैं। भव्य भवन के अंदर शिक्षा दीक्षा प्राप्त कर रहे हैं। क्या इसलिए संभव हुआ है कि आपके पास तेज दिमाग है। क्या इसलिए संभव हुआ है कि आपके माता-पिता सपन्न थे और उनकी स्थिति अच्छी थी इसलिए उन्होंने आपको यहां तक पहुंचाया है। ये सब सच होने के बाद भी मेरे नौजवान साथियों आप इस भव्य कैपस में इसलिए हैं। आप इतनी बढ़िया से बढ़िया शिक्षा प्राप्त करने में भाग्यशाली इसलिए हुए हैं कि किसी न किसी गरीब ने इसके लिए contribute किया है। किसी गरीब के हक का आपको मिला है। ये चार एकड़ भूमि अगर सरकार ने उसको बेचकर के पैसे लाकर के गांव के अंदर प्राथमिक शिक्षा के मकान बनाए होते तो कितने सारे मकान बन जाते। PSE centre बनाए होते तो कितने सारे बन जाते। लेकिन देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए ये चार सौ एकड़ भूमि मेरे देश के भविष्य के लिए यहां लगाई गई है। समाज के किसी गरीब तबके ने अपना छोड़ा है तब हमने पाया है। अगर ये भाव मन के अंदर रहा तो IIT-ians होने के बावजूद भी समाज के प्रति मेरी जो संवेदना है वो कभी कम नहीं होगी। समाज के लिए करने का मेरा कुछ इरादा है। उसमें कभी भी कहीं कमी नहीं आएंगी। और जीऊंगा तो भी मेरे देश के सामान्य मानवी के लिए जीऊंगा कुछ पाऊंगा करूंगा, करके रहूंगा तो भी मेरे देश के सामान्य मानवी के लिए करके रहूंगा। इस भाव को लेकर के इस नए भवन के लोकार्पण के समये आप भी हृदय से संकल्प करे। इसी एक आशा के साथ आप सबको मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी, शाहबाज़ हसीबी, ममता

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

16-दिसंबर-2017 12:39 IST

मिज़ोरम के आइज़ोल में तुरिअल पन-बिजली परियोजना के राष्ट्र समर्पण समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

Friends,

चिबई वेक उले

इन दम एम

प्रधानमंत्री के तौर पर मुझे पहली बार मिजोरम आने का अवसर मिला है। उत्तर पूर्व के राज्य, जिन्हें हम Eight Sisters कहते हैं, उनमें से यही एक राज्य था, जहां मैं प्रधानमंत्री के तौर पर अभी तक नहीं आ पाया था। इसलिए मैं सबसे पहले आपका क्षमाप्रार्थी हूँ। हालांकि प्रधानमंत्री बनने से पहले मैं मिजोरम आता रहा हूँ। यहां के शांत-सुंदर वातावरण से भली-भांति मैं परिचित हूँ। यहां के मिलनसार लोगों के बीच मैंने बहुत अच्छा समय गुजारा है। अभी जब आपके बीच आया हूँ तो वो पुरानी यादें फिर से ताजा हो जाना बहुत सुभाविक है।

My visit to your beautiful State today, brings back fond memories, of good times spent with the friendly people of Mizoram. Let me begin by wishing you, and indeed, all the people of Mizoram, Merry Christmas and a Happy New Year.

May the New Year bring happiness and prosperity to all.

As I arrived in Aizawl a short while ago, I was thrilled to witness once again, the enchanting beauty of Mizoram: the "Land of the Hill People."

A land of peace and calm.

A people so warm and hospitable.

A State with one of the highest literacy rates in India.

उत्तर पूर्वी राज्यों में विकास को लेकर अटल जी के कार्यकाल में बहुत गंभीर प्रयास हुए थे। अटल जी कहते थे आर्थिक सुधार का एक बड़ा मकसद है क्षेत्रीय भेदभाव को पूरी तरह खत्म करना। इस दिशा में उन्होंने काफी कदम भी उठाए थे।

2014 में हमारी सरकार बनी तो एक बार फिर इस क्षेत्र को, हम सरकार की नीतियों और फैसलों में आगे लेकर आए हैं। मैंने तो एक नियम बना दिया था कि हर 15 दिन में कैबिनेट का कोई ना कोई मंत्री उत्तर पूर्व के राज्यों का दौरा जरूर करेगा। ये भी नहीं होगा कि सुबह आए, दिन में किसी event में हिस्सा लिया और शाम को वापस चला जाए। मैं चाहता था कि मंत्रिमंडल के मेरे साथी यहां रुककर, आपके बीच रहकर आपकी आवश्यकताओं को समझें, उनके मुताबिक अपने मंत्रालयों में नीतियां बनाएं।

साथियों, मुझे बताया गया है कि पिछले तीन वर्षों में मेरे साथी मंत्रियों की 150 से ज्यादा visit उत्तर पूर्व के राज्यों में हो चुकी है। हम इस विजन के साथ काम कर रहे हैं कि अपनी परेशानियां, अपनी आवश्यकताएं बताने के लिए आपको दिल्ली तक संदेश ना भिजवाना पड़े, बल्कि दिल्ली खुद आपके बीच चलकर आए।

इस पॉलिसी को हमने नाम दिया है- Ministry of DoNER At Your Door-step. मंत्रियों से अलग, Development of

North East Region मंत्रालय के सचिव भी अपने अफसरों के साथ हर महीने उत्तर पूर्व के किसी ना किसी राज्य में कैंप करते हैं। सरकार के इन प्रयासों का ही नतीजा है कि उत्तर-पूर्व की योजनाओं में तेजी आई है, जो बरसों से अटके हुए प्रोजेक्ट थे, वो आज तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं।

As a result of the efforts of the Union Government, schemes for the benefit of the North-Eastern region have been gained momentum. Projects stuck for years, are now progressing.

I just had a glimpse of the impressive exhibition set up here by Self Help Groups, comprising produce from all the eight North-Eastern States. I congratulate the members of these Self Help Groups, for their immense talent and potential. It is a potential that the Union Government is committed to hone, and develop. This is one of the key objectives of the Deen Dayal Antyodaya Yojana.

Self Help Groups are also benefiting through credit linkages provided by the North Eastern Development Finance Corporation, with interest subsidy being provided by the Union Government.

I am told, the Ministry for Development of the North-East Region is also supporting the activities of the North Eastern Handicrafts and Handloom Development Corporation; and the North Eastern Regional Agricultural Marketing Corporation.

These Public Sector Under-takings are engaged in training and hand holding artisans, weavers and farmers, for marketing and food processing.

Technologies and products developed by Institutions such as CSIR, ICAR and the IITs should be studied for possible adoption in the North-East, to enable value addition of local produce.

Friends! Today we gather here to celebrate a significant mile-stone in the history of Mizoram:

The completion and dedication of the 60 Mega-Watt Tuirial Hydro-power Project. This comes 13 years after the last major central sector hydro-power project in the North-Eastern Region--the Kopili Stage-II.

Tuirial Hydro-power project is the first major Central Sector Project to be successfully commissioned in Mizoram. It is the first large hydro-power project in the State. It will produce 251 Million Units of electrical energy every year, and boost the socio-economic development of the State.

With the commissioning of this project, Mizoram becomes the third power-surplus State in the North-East, after Sikkim and Tripura.

The project was first declared and cleared by the Union Government of Prime Minister Vajpayee ji, way back in 1998, but got delayed.

The completion of this project is a reflection of our commitment to complete on-going projects and usher in a new era of development in the North Eastern region.

Besides generating electricity, the reservoir water will also open new avenues for navigation. This will provide connectivity to remote villages. The huge reservoir, spread over an area of 45 square kilometers, can also be used for development of fisheries.

This project will boost eco-tourism, and provide a source of assured drinking water supply. I am informed that the State has a hydro-power potential of 2100 Mega-Watts, of which we have so far tapped only a fraction.

I see no reason why Mizoram cannot become a net-power exporter. Our aim is not just to make the North Eastern States power surplus. We also aim to develop a state-of-art transmission system which ensures that surplus power is transferred to other power deficient parts of the country.

My Government is investing close to Rupees 10,000 crores for a comprehensive improvement in the power transmission system in the North Eastern States.

साथियों, स्वतंत्रता के 70 वर्ष बाद भी हमारे देश में ऐसे 4 करोड़ घर हैं जिनमें अब तक बिजली का कनेक्शन नहीं है। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि वो लोग किस तरह 18वीं सदी की जिंदगी जीने के लिए मजबूर हैं। यहां मिजोरम में भी हजारों घर ऐसे हैं जो अब भी अंधकार में जिन्दगी गुजार रहे हैं। ऐसे घरों में बिजली पहुँचाने के लिए सरकार ने हाल ही में 'प्रधानमंत्री सहज बिजली- हर घर' योजना यानी 'सौभाग्य' की शुरुआत की है। हमारा लक्ष्य है जल्द से जल्द देश के हर घर को बिजली कनेक्शन से जोड़ा जाए।

इस योजना पर लगभग 16 हजार करोड़ रुपये खर्च किये जायेंगे। जिन गरीबों को इस योजना के तहत बिजली कनेक्शन दिया जाएगा उनसे connection के लिए सरकार कोई पैसा नहीं वसूलेगी। हम चाहते हैं कि गरीबों की जिंदगी में उजाला आए, उनकी जिंदगी रोशन हो।

साथियों, अगर देश के बाकी हिस्सों से तुलना करें तो देखने में आता है कि उत्तर-पूर्व में नए उद्यमियों की संख्या में उतनी वृद्धि नहीं हुई, जितनी होनी चाहिए थी। इसकी एक बड़ी वजह यह थी कि नौजवानों को अपना कारोबार करने के लिए जरूरी पूँजी नहीं मिल पाती थी। नौजवानों की इसी आवश्यकता को समझते हुए सरकार ने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, Startup India योजना, Stand up India योजना जैसी योजनाओं की शुरुआत की। उत्तर-पूर्व को विशेष ध्यान में रखते हुए DONER मंत्रालय ने 100 करोड़ रुपए की राशि से एक Venture Capital Fund भी बनाया है। मेरा मिजोरम के नौजवानों से आग्रह है कि वो केंद्र सरकार की इन योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाएं। यहां के नौजवान Start up की दुनिया में छा जाने का हौसला रखते हैं, क्षमता रखते हैं। भारत सरकार ऐसे नौजवानों की hand-holding के लिए प्रतिबद्ध है।

We are betting on the skills and strengths of India's youth. We believe in 'empower through enterprise' - which is creating the right eco-system for innovation and enterprise to flourish so that our land is home to the next big ideas that can transform humanity.

In 2022, India will complete 75 years of independence, the next five years provide an opportunity to plan and build on our achievements, to make a quantum leap in all spheres of development.

Building a New India by 2022 requires us to work towards the twin goals of increasing economic growth as well as ensuring that the fruits of growth are shared by all. In the spirit of सबका साथ, सबका विकास, every Indian, irrespective of caste, gender, religion, class must have equal opportunities to partake in the new prosperity.

My Government believes in competitive and cooperative federalism, where there is healthy competition between States. I am convinced that States are the main drivers of change.

We have taken a number of initiatives to infuse healthy competition among States. A Committee of Chief Ministers made recommendations to rationalize Centrally Sponsored Schemes. We duly accepted the recommendations.

Despite fiscal constraints, the sharing pattern of core centrally sponsored schemes for North Eastern States has been continued at 90-10. For other schemes, it stands at 80-20.

Friends, The vision of New India can be realized only if the fruits of development reach all.

The Union Government has plans to focus on around 115 districts which are relatively backward when

evaluated on various social indicators. This will also benefit the backward districts of North Eastern States including Mizoram.

Just yesterday, we approved a new Central Sector Scheme. The North East Special Infrastructure Development Scheme will fill the gaps in creation of infrastructure in two sectors.

One sector is physical infrastructure relating to water supply, power, connectivity and especially projects promoting tourism.

The other is social sector projects of education and health. The new scheme has been designed after due consultations with State Governments. However, to ensure continuity, all ongoing projects under NLCPR will be provided funds for completion by March 2022.

The new Scheme will be 100 percent centrally funded as against the NLCPR, where 10 percent contribution had to come from the State Governments.

The Central Government will be providing Rupees 5300 Crore to North Eastern States under the Scheme over the next three years.

Lack of connectivity is one of the biggest hurdles in the path of development of the North Eastern Region. We aim for a Transformation by Transportation through investment in infrastructure in the region.

The Union Government has sanctioned over 3800 kilometers of National Highway with an investment of Rupees 32000 crore during last three years, out of which nearly 1200 kilometers of road has already been constructed.

The Union Government will be investing another Rupees 60,000 crore under Special Accelerated Road Development Programme in the North-East and Rs. 30,000 crore under Bharatmala in the next two to three years to build a network of high-ways and roads in the North East Region. We are committed to bring all the State Capitals of North East Region on the Rail map.

The Government of India is executing 15 New Rail Line projects of 1385 kilometers length, at a cost of over Rs.47,000 crore.

The railways reached Mizoram last year, with the inauguration of the rail line connecting Bhairabi in Mizoram with Silchar in Assam.

I had laid the foundation for a new line to take rail connectivity to Aizawl in 2014.

With the support of the State Government, we shall connect the State Capital Aizawl with broad gauge rail line.

The Union Government has been proactively following the 'Act East Policy'. As a gate-way to South East Asia, Mizoram stands to gain immensely from this. It can emerge as a key transit point for trade with Myanmar and Bangladesh.

Various bilateral projects are at various stages of completion. Some of the major initiatives include the Kaladan Multi-Modal Transit Transport Project, the Rih-Tedim Road Project and Border Haats.

All these will increase the scope for economic linkages, and contribute to the overall economic growth

and development of the North-Eastern Region.

Friends, The high literacy rate, scenic beauty and availability of large English speaking population in Mizoram make for a perfect blend to develop the State as a model tourist destination.

The State offers significant scope for adventure tourism, cultural tourism, eco-tourism, wild-life tourism, and community-based rural tourism. If developed well, tourism can emerge as the biggest employer in the state. The Union Government has sanctioned two tourism projects worth 194 crore rupees for Mizoram in the last 2 years, to promote eco-tourism and adventure tourism. The Central Government has already released 115 crore rupees for implementation of these projects.

The Government is also committed to provide assistance for maintenance and up-keep of various wild-life sanctuaries and national parks in Mizoram with a view to attract tourists. Let us work together to make Mizoram one of the top tourism destinations in India.

साथियों, हमारे देश का ये हिस्सा, बहुत आसानी से खुद को Carbon Negative घोषित कर सकता है। हमारे साथी भूटान ने ऐसा करके दिखाया है। राज्य सरकारों की तरफ से प्रयास बढ़े तो उत्तर-पूर्व के आठों राज्य Carbon Negative हो सकते हैं। Carbon Negative राज्यों की पहचान देश के इस क्षेत्र को पूरे विश्व मानचित्र पर एक बड़े brand के तौर पर स्थापित कर सकती है। इसी तरह जैसे सिक्किम ने खुद को 100 प्रतिशत organic State घोषित किया है, वैसे ही उत्तर पूर्व के अन्य राज्य भी इस दिशा में अपने प्रयासों को और तेज कर सकते हैं।

Organic Farming को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार ने परंपरागत कृषि विकास योजना का आरम्भ किया है।

इसके तहत सरकार देश भर में 10 हजार से ज्यादा organic clusters विकसित कर रही है। North-East में भी 100 Farmer Producers Organisations बनाए गए हैं। इनसे 50 हजार से ज्यादा किसानों को जोड़ा जा चुका है। यहां के किसान Organic Produce दिल्ली में बेच सकें, इसके लिए भी व्यवस्था की गई है।

साथियों, 2022 में हमारा देश अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष का पर्व मनाएगा। मिजोरम ये संकल्प ले सकता है कि 2022 तक वो खुद को 100 प्रतिशत Organic और Carbon Negative State के तौर पर विकसित कर लेगा। मैं मिजोरम के लोगों को ये भरोसा दिलाना चाहता हूँ कि इस संकल्प की सिद्धि में केंद्र सरकार हर तरह से उनके साथ खड़ी है। हम आपकी छोटी-छोटी दिक्कतों को समझ कर, उन्हें सुलझा रहे हैं। जैसे मैं आपको Bamboo का उदाहरण देना चाहता हूँ।

The Bamboo which is a source of livelihood for lakhs of people of North East, has been under a very restrictive regulatory regime. You could not transport or sell the Bamboo produced in your own field without a permit. Our Government with an aim to reduce this pain, has changed the regulatory regime. Now there will be no requirement of any permit or permission for producing, transporting and selling Bamboo and its products produced by farmers in their own fields. This will benefit lakhs of farmers and will add to the efforts to double farmers' income by 2022.

मैं मिजोरम आया हूँ और फुटबॉल की बात न करूं ऐसा हो नहीं सकता। यहां के मशहूर खिलाड़ी जेजे ललपेखलुए ने पूरे देश का ध्यान खींचा है। और मिजोरम में फुटबॉल तो जैसे घर-घर का हिस्सा है। मुझे बताया गया है कि FIFA का पायलट प्रोजेक्ट और अइज़ोल फुटबाल क्लब स्थानीय टैलेंट को और मजबूत कर रहे हैं।

जब मिजोरम ने 2014 में पहली बार संतोष ट्रॉफी जीती थी तो पूरे देश के फुटबॉल प्रेमियों ने मिजोरम के लिए तालियां बजाई थीं। मैं मिजोरम के लोगों को खेल की दुनिया में उनकी उपलब्धियों के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। फुटबॉल एक ऐसी Soft-power है जिसके दम पर मिजोरम पूरी दुनिया में अपनी पहचान बना सकता है।

The soft power of football can become Mizoram's global identity. There are many other prominent sports persons from Mizoram who have brought glory to the State and the country. These include the Olympian Archer C. Lalremnga , boxer Ms. Jenny Lalremliani, weight lifter Ms. Lalchhahimi, and hockey player Ms. Lalruatfeli.

I am sure, Mizoram shall continue to provide sportspersons who shall excel on the world stage.

साथियों, दुनिया में कई देशों की अर्थव्यवस्थाएं सिर्फ और सिर्फ Sports के भरोसे चल रही हैं। अलग-अलग तरह के खेलों के लिए आवश्यक माहौल तैयार करके ऐसे देश दुनिया भर के लोगों को आकर्षित करते हैं। North-East में Sports की अपार क्षमता को देखते हुए ही केंद्र सरकार इस क्षेत्र में, इंफाल में Sports University की भी स्थापना कर रही है।

स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बनने के बाद यहां के नौजवानों को Sports और उससे जुड़ी हर तरह की Training लेने में और आसानी हो जाएगी। हमारी तो तैयारी ये भी है कि University बनने के बाद उसके कैंपस भारत ही नहीं दुनिया के दूसरे देशों में भी खोले जाएं, ताकि यहां का खिलाड़ी दूसरे देशों में भी जाकर Sports से जुड़ी Training ले सके।

I see Aizawl wearing a colorful and festive look, and fully geared up for celebrating Christmas. I once again wish you all and the people of Mizoram a Merry Christmas.

Thank you.

इन वाया छूंगा क-लौम ए मंगछा

AKT/AK